१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१

।। बैराड़ी महला ४।।

मन मिलि संत जना जसु गाइओ।।
हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको
गुरि सतिगुर दानु दिवाइओ।।१।। रहाउ।।
तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ
जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ।।
धनु माइआ सपै तिसु देवउ
जिनि हरि मीतु मिलाइओ।।१।।
खिनु किंचित क्रिपा करी जगदीसरि
तब हरि हरि हरि जसु धिआइओ।।
जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी
दुखु हउमै रोगु गवाइओ।।२।। (प॰ ७१६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु!!

शब्द रब्बी वाणी का , ईश्वरीय वाणी का, श्री गुरु रामदास जी महाराज द्वारा आया है।

यह, गुरु साहिब ने जो लिखा है, पंचम पातशाह ने -

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।। (प॰ २६३)

संत के संग मिलकर कहते हमने परमेश्वर का यश गायन किया। क्यों? यह गुरु द्वारा मिलता है। सिद्धों के साथ जब गोष्ठी हुई, वह कहता-तुम्हारा गुरु कौन है ? उसने कहा -

शब्दु गुरु सुरति धुनि चेला।। (प॰ ६४३)

उन्होंने शरीर को गुरु नहीं कहा। यह लोगों की गलती है। **'शब्द गुरु'** गुरु शब्द है, **'सुरति धुनि चेला'** जब तुम्हारी सुरति अर्थात् पूर्ण तन्मयता लग जायेगी तब तुम शिष्य बन जाओगे। फिर गुरु भी बन जाओगे। वे गुरु साहिब कहते हैं, जब मन स्थिर हो गया, सुरति जब शब्द के साथ मिल गई तब वह वस्तु प्राप्त होगी। वैसे तो होगी नहीं। सुरतियां (एकाग्रता) तो हमारी सब की हैं लेकिन आप अपने भीतर अनुभव से देखो कि मिली है कभी उस शब्द के साथ ? सुरति (एकाग्रता) तो फिरती है संसार में भागी, प्रबन्ध करती संसार का, व्यावहारिक सत्ता में, रजोगुण में, और अभी सतोगुण भी नहीं प्राप्त हुआ। वह तो सतोगुण से भी आगे है -

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ
इह तेरी सभ माइआ।।
चउथे पद कउ जो नरु चीनै
तिन ही परम पदु पाइआ।। (प॰ ११२३)

वह तो चौथा है। इसलिये **'शब्द'** गुरु है। **'सुरति धुनि चेला'।** जब आपकी धुन, सुरत उसके साथ जुड़ जायेगी, धुन लग जायेगी और फिर तुम भी गुरु को मिलकर एक परमेश्वर को प्राप्त कर लोगे। जब तक तुम्हारी सुरति की धुन नहीं लगी, सुरति तो सब के पास है लेकिन प्राप्त तो किसी को नहीं हुआ। जिसकी सुरति की धुन लग गई -

सिमरि सिमरि नामु बारं बार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (प॰ २६५)

जब आपकी लगातार धुन एक रस हो जायेगी, निदिध्यासन की परिपक्व अवस्था हो जायेगी, समाधि हो जायेगी, तुम्हें अपने आप ही सुरत आ जायेगी। और वे गुरु साहिब कहते हैं, प्रेमाभक्ति द्वारा कहते हैं, ज्ञान सत्ता पर तो अधिक जाते नहीं हैं। यह तो प्रेमाभक्ति द्वारा ज्ञान कहा है। अब पढ़ भाई ! प्रथम पंक्ति-

मन मिलि संत जना जसु गाइउ।।

कहते हमारा मन गुरुओं के साथ, संतों के साथ, आज्ञा में चल पड़ा और शब्द के साथ जुड़ गया। शब्द के साथ इसको जोड़ना है। गरीब दास ने लिखा है-

'सुरति सबद का बांधउ बेड़ा, गगन मंडल को कूच है'

कहते - सुरति और मन को शब्द के साथ एक कर दे, बांध दे **'गगन मंडल को कूच है'** सीधे तुम बैकुण्ठ को जाओगे और फिर तुम्हें कोई रोकने वाला नहीं है। तुम्हे सत्य प्राप्त हो जायेगा और **'सुरति'** क्या वस्तु है ?

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ
नानक नामु वखाणे।। (प॰ ६३८)

यह गुरु साहिब का वचन है जब उस सिद्ध ने कहा -

दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो।।
चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो।। (प॰ ६३८)

चर्पट कहते हे अवधूत नानक ! **'अवधूत'** उसको कहते हैं जो पूर्ण शुद्ध हो, यह आप मुझे विचार दें **'दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ'** यह संसार सागर 'दुतरु' अर्थात् बड़ा कठिन है **'तरना किउ करि पाइऐ पारो'** इसका पार कैसे पायें? गुरु साहिब ने एक ही उत्तर दिया -

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ
नानक नामु वखाणे।।

तुम शब्द के साथ सुरति एक कर दो लेकिन **'नाम वखाणे'** फिर उसको तोड़ो न जल्दी से, स्वयं न तोड़ो। फिर इसके लिये वह रविदास वाली बात पकड़ लो -

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी।।
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी।। (प॰ ६५६)

परंतु जब यह जुड़ेगी, टूटनी भी नहीं रविदास कहते, लेकिन यह तो संसार से जोड़े हुये फिरता है। इसकी जो सुरति है आठों याम पुत्रियों, पुत्र, फला, ढ़िमका, यहां-वहां में बंधा फिरता है और साथ में यह भक्त जैसे बन जाता है, संत जैसा भी बन जाता है। यह तो बनावटी जैसा ही काम है, वास्तविक तो है नहीं। इसलिये, हे भाई ! मन को संतों के द्वारा मिलाना है। संत के द्वारा मिलाया कि नहीं ? पहले तुम्हें तैयारी करनी पड़ेगी। तुलसीदास ने लिखा है -

पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता
संत संगति संसृति कर अंता। (रामचरित मानस ७.४५.६)

पुण्य समूह, जब आपके निष्काम कर्म, निष्काम सेवा पूर्ण हो जायेगी तो आपका अन्तःकरण साफ हो जायेगा। फिर परमेश्वर मिलेगा और परमेश्वर गुरु द्वारा में मिलना है -

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।। (प॰ २६३)

वह संत गुरु रामदास जी की कृपा द्वारा, गुरु अर्जुन देव जी कहते - अपने भीतर हमने प्रभु को देखा है। वह दाना बीना तो भीतर ही है।

'दाना बीना साई मैडा' जब आपका कोई विचार उठता है, अच्छा अथवा बुरा, उसको देखने वाला और जानने वाला, बिना और साईं से कोई है ? दाना बीना तो साईं है, वह देखता नहीं तुम्हारे विचारों को ? जानता नहीं विचारों को? यदि न जानता होता तो यह स्वयं ही बन जाये, फिर तो शोर हो जाये। वह तो टंकित कर देता है, भई ! यह पाप है, यह पुण्य है। वह तो पारख है।

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।। (प॰ १४४)

पारख भी वही है, दाना भी वही है, बीना भी वही है और साईं भी वही है। इसलिये वह है जो परमेशर वह सबसे भिन्न है, ***असंग है, असंगो न हि सज्यते।*** (व हदारण्यक उपनिषद्)

इसलिये तुम्हे मिलेगा तब, जब आपकी सुरति धुन बन जायेगी। सुरति में धुन आयेगी और फिर वह शब्द से जुड़ेगी तब प्राप्त होगा। हम 'अन्तरवेद' में रहते थे, वहां गांव 'बड़ौली गांव' है घीसा पंथियों का। घीसा पंथियों में शब्द प्रधान है। कबीर ने शब्द मारा और मैं वहां आया। उन्होनें बड़ी बातचीत की, प्रसन्न

होकर कहते रहो। मैं दो, तीन, चार दिन रहा। फिर उन्होनें मुझे कीर्तन सुनाया बहुत, मैं ने कहा - हमने वजीदपुर जाना है, यहां से तीन कोस है और वहां तुम आना, तो फिर हम तुम्हें बुलायेंगे और फिर तुम यह शब्द उनको सुनाना। वे कहते, न महाराज ! वे तो कर्म काण्डी हैं। आपका और उनका बड़ा अन्तर है। मैं जाकर उनको कहा भई ! उनको बुलाना है। फिर वे आये, वे कहते - धरती के उस पार परमेश्वर कहते हैं। मैनें कहा - दिखाई नहीं देता ? फिर वे आये उन्होनें शब्द पढ़ा बड़ी सुन्दर आवाज में, उन्होनें सारा पढ़ा। गरीब दास की वाणी पढ़ी उन्होनें-

नानक दादू अगम अगाधू।
तेरी जहाज दे खेवट सही।।

लेकिन वे गिनते आये सारे महात्मा, लेकिन कहते ठीक खेवट दो हैं - नानक और दादू। ये सही खेवट हैं, ये मल्लाह ठीक हैं। कहे कैसे? मल्लाह के पास तो नाव होती है, एक अन्य चप्पू होता है। उन्होनें कहा-

सुख सागर ते हँसा आये
भगत हडंबा उरध गये।।

ये, प्रेमा भक्ति लेकर आये, उसके साथ जीवों को जोड़ना है लेकिन साथ वे कहते थे गरीब दास -

दास गरीब कबीर का चेला।।

लेकिन कहता - मैं कबीर का शिष्य हूँ। ये बिल्कुल सही खेवट हैं लेकिन मेरा तो कबीर ने उद्धार किया। शिष्य तो मैं कबीर का ही हूँ। कबीर साहिब ने स्पष्ट यह बात कही है -

चीनत चीतु निरंजन लाइआ।।
कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ।। (प॰ ३२८)

पहले पहचानना है, फिर उन्होंने जोड़ना है। आया है कि नहीं संत ने जोड़ा।

चीनत चीतु निरंजन लाइआ।।
कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ।।

अपना आप मिल गया। कबीर कहता अरे ! अपना आप तो इतने में ही मिल जायेगा। पहले तुम उसे पहचान लो, जब तुम वृत्ति के साथ उसको पहचानोगे, उसके आकार वृत्ति करोगे तब उस समय कोई संसार की वृत्ति होगी वहां ? तुम्हारी सुरति में कुछ होगा ? यदि होगा तो जुड़ ही नहीं सकता। प्रतिदिन यह जुड़ती रहती है, सुरति का तो स्वाभाव है, इसने तो यहां जुड़ जाना है, कभी वहां जुड़ जाना है, तुम्हारी कामनायों और वासनाओं के साथ सुरति ने चलना है। उसको सुरति कहो, वृत्ति कहो, मन कहो। लेकिन जब आपकी सुरति रिक्त हो जायेगी तो अनहद की ध्वनि आयेगी -

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै आधार।। (प॰ २६५)

लेकिन आप का सुमिरन न बंद हो, और निष्काम सेवा के साथ आपने अन्तःकरण को शुद्ध करना है। जब यह शुद्ध हो गया तो फिर रह क्या गया ? और सुरति उसके साथ जुड़ गई और बीच में कुछ है नहीं। तुम आप ही देखो जब तुम परमेश्वर का नाम जपते हो, तुम्हें कितने विचार आते हैं। लोग कहते हैं आ आ कर। हम भी देखते हैं बई मैं जब भजन करता तो और ही विचार आते रहते हैं और मैनें कहा तुमने भरे भी तो और ही थे तो फिर तुम्हे परमेश्वर का विचार कहां से आ जाता? इसलिये वे विचार कब समाप्त होंगे ? जब तुम्हारा अन्तःकरण शुद्ध हो जायेगा। जब अन्तःकरण तुम्हारा शुद्ध हो जायेगा तो उसके साथ तुम्हारी सुरति की धुन लग जायेगी। जब धुन लग गई तो फिर तुम निरंजन के अनुभव को पा लोगे, वह निरंजन निराकार है, वैसे तो मिलना नहीं। यदि तुम बातें किये जाओगे, इस तरह तो मिलना नहीं। इसलिये गुरू साहिब ने जो भी कहा वह ठीक कहा। शब्द और सुरत दोनों की नींव रखी है गुरु ग्रन्थ साहिब में -

सबद सुरति की नीव रखाई।। (प॰ १४०६)

अब नींव तो रखदी, सुरति तुम्हारे पास है, शब्द हर समय है। शब्द और शब्दी एक हैं, दो नहीं हैं। वे तुम्हारे सामने हैं। तुम्हारे भीतर ही शब्दी बैठा, तुम्हारे अन्दर ही सुरति है। लेकिन जुड़ती क्यों नहीं ? तुम्हारी अभी पूरी पक्की सलाह,

जोड़ने की हुई नहीं है। अभी तो तुम संसार का आनन्द लेते फिरते हो, बई यह भी ले लो फिर बाद में ज्ञान भी ले लेंगे जाते हुए। ज्ञान कोई यूँ ही रखा हुआ है ? इसलिये भाई ! सुरति जो है, वह शब्द के साथ जोड़नी है।।

सबद सुरति लिव लीणु होइ ओहु आपु गवावै।। (भाई गुरदास ६/२२)

हउ हउ भीति भइओ है बीचो (प॰ ६२४)

वह मध्य में दीवार भी तो अंहकार की पड़ी है। वह कैसे तोडेंगे ? वह भाई गुरदास जी बता गये। उन्होंने कहा -

सबद सुरति लिव लीनु होइ

तुम्हारी सुरति शब्द में लीन हो जाये। वह जब लीन हो गई, उसको लिव कहते हैं और लिव के पश्चात् बिना पूछे 'अविनाशी पद' की प्राप्ति हो जायेगी।

ओहु आपु गवावै।।

'आपु' नाम है अहंकार का। इसका अंहकार स्वयं ही समाप्त हो जायेगा। यदि आप कहें न, अंहकार को हम समाप्त कर दें, ऐसे नहीं समाप्त होगा। लेकिन **'सबद सुरति लिव लीणु होइ'** सुरति को शब्द में लीन कर दो।

गुर चेले की संधि मिलाई।।

आता है कि नहीं गुरुग्रन्थ साहिब में ? यहां संधि हो जायेगी। जब 'सबद **सुरति लिव लीणु होई'**।। जब सुरति को तुम शब्द में लीन कर दोगे, उसका नाम 'लिव' है। फिर तुम्हें क्या प्राप्त होगा ? **'अपना आप'** लेकिन आप गँवा कर। अंहकार अपने आप ही भाग जायेगा, वह दीवार स्वयं ही गिर जायेगी। तुम्हें **'अपना आप'** प्राप्त हो जायेगा। यह तुम देख लेना करके तब काम चलेगा। प्रयत्न तो करो न। परन्तु तुम्हारे पास तो समय ही नहीं है कोशिश करने का। इसलिये, वे कहते - गुरू ने, संत ने मेरा मन मिला दिया और मन मिलने से, मुझे प्राप्ति हो गई। पंक्ति का यही अर्थ है न ? चलें -

हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको

वे कहते - वह जो 'हरि-हरि' है न, परमेश्वर का नाम, यह तो शुद्ध रत्न है, वह दूसरा रत्न नहीं। 'नीको' कहते हैं सब से अच्छा 'रत्न' नाम है, वह नाम तुम्हें प्राप्त हुआ। वह नाम तुम्हें प्राप्त हो जायेगा। वह जब -

सुरति सबद का बांधउ बेड़ा

पहले इसकी नाव तैयार हो जायेगी उसके बाद।

गगन मंडल को कूच है।।

तो कोई आवश्यकता नहीं तुम्हें। इसलिए भाई ! वह 'हरि हरि' जो नाम है, वह रत्न है। वह नाम तुम्हें प्राप्त हुआ। किस से? गुरू से। उस गुरू से कब प्राप्त हुआ ? जब तुम्हारी सुरति, गुरू की आज्ञा में, शब्द के अधीन हो गई, तुम्हारी मोक्ष हो जायेगी। अंहकार दूर हो गया। प्रच्छित अंहकार ही जन्म-मरण का हेतु है। वह तो ऐसे दूर होगा, वैसे तो होना नहीं। बातों से तो होना नहीं। हम कर देंगे कथा? तुम सुन लोगे, बस ! बनेगा कुछ नहीं। चलो -

गुरि सतिगुरि दानु दिवाइओ।। रहाउ।।

उस सत्गुरू ने बड़ा उपकार किया। नाम दान दिया। नाम दान किया। सत्गुरू ने जब हमारी सुरति शुद्ध कर दी, उसको शब्द के साथ जोड़ दिया, धुन उसकी एक हो गई। यह दान हमें सत्गुरू ने दिया। यह दान हमें गुरु ने दिया। यह दान हमें गुरु ने दिया। यह दान उनके पास था, ब्रह्मज्ञानियों के पास, और जिन को नाम प्राप्त हो गया, वे ब्रह्मज्ञानी हो गये।

तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ

वह जो तुम्हारी सुरति को, धुन वाली को शब्द के साथ जोड़ दे, उसको मन, तन, धन सब समर्पित कर दो, फिर और न मध्यस्थ रखना ? फिर और कोई मध यस्थ होगा ? गुरु साहिब ने लिख है न-

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा। (प॰ ६६४)

गुरू साहिब कहते - तेरे जैसे मैंने कोई नही देखा, लेकिन गुरू नानक कहते - तू मेरे मन को अनुकूल लगेगा। लेकिन साथ में एक और भी बात है- पांचवें पातशाह की-

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा।।

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा।।

कहते - मैं गुरू राम दास जी पर भी कुर्बान जाता हूँ जिनकी कृपा से मैनें उस 'कंत' मालिक को पहचाना। मुझे स्वामी की पहचान आ गई। पहले गुरु मिला, फिर मन जुड़ा, फिर 'कंत' पहचान लिया। यह तुम पहले किसी को देखते हो अथवा हम, थोड़ी सी दृष्टि कमजोर है, अब हम पूछते हैं भई कौन है ? फिर वह बताता है, फिर हम उसे ठीक पहचान लेते हैं - भई पहचान लिया। वह पहचाना तो जायेगा -

घोलि घुमाई तिसु मित्र पिचोले जै मिलि कंतु पछाणा।।

'गुरू' ब्रह्मज्ञानी का नाम है, और किसी का नाम नहीं है।

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ।।

ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि।। (प॰ ११०२)

वह तो मरे हुए को भी नहीं छोड़ते हैं। वहां से पकड़कर लाये 'बहलो' को। 'लाओ उसको' दो व्यक्ति पकड़कर, खींचकर। वह नहीं मानता था। जब उसका सब कुछ हो गया, फिर वे कहते मांग कुछ? वह कहता न। वह तो मरे हुए को नहीं छोड़ता, वह तो देखता है। भाई इधर चले गए। इसलिए भाई ! वह जो गुरू है, ब्रह्मज्ञानी, उसने हमारा मन जोड़ा। लेकिन जो सुरति जोड़ी धुन वाली, जिसमें धुन ही धुन हो जिसमें नाम का अभ्यास हो, सजातीय परते हों, वह जुड़ेगी। और सुरति तो सम के पास है, सुरति के साथ समस्त कार्य करते हो तुम। समझ गये ? चोरी करोगे तो फिर नहीं चलेगा काम-

चोर की हामा भरे न कोइ।।

चोरु कीआ चंगा किउ होइ।। (प॰ ६६२)

वह तो सारे गुरू साहिब ने निषिद्ध कर दिये। इसलिए वह तो महापुरूष होगा -

सतु सतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई। (प॰ ८२२)

यह तो गुरू राम दास ने शिक्षा ली है। पांचवें पातशाह कहते - यह तो उनके पास से मिला है। उनके ऊपर से -

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा।। (प॰ ६६४)

उनके ऊपर कुर्बान हो जाओ, ब्रह्मज्ञानी के ऊपर। ब्रह्मज्ञानी और परमेश्वर दो नहीं होते।

गुरू परमेसरू एको जाणु।।

जो तिसु भावै सो परवाणु।। (प॰ ५६४)

यह तो मार्ग है भाई ! विनम्रता का और गुरु की कृपा का।

जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई।। (प॰ २१६)

नौवें पातशाह कहते - वे नवम् पातशाह को कहते जी यह विधि कैसे बनेगी ?

जन नानक हरि भए दइआला तउ सम बिधि बनि आई।।

जब हरि दयालु होगा, तब विधि बनेगी। जब तक हरि दयालु नहीं होगा, तुम्हारी विधि कोई नहीं बनेगी। इसलिए कबीर ने कहा -

तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही।।

गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही।। (प॰ ६६२)

कहते - अरे ! एक राम के साथ तुम प्रीति लगा लो। यह सब **'तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही'** यह कर्म, धर्म, विधि, निषेध त्याग दो। यह कर्म तुम पकड़ लो। उस नाम ने आपको रंगना है, और कोई तुम्हारे मन को नहीं रंग सकता। लेकिन कब ? जब तुम्हारी सुरति की धुन लग जायेगी, तब, कृपा तो भीतर से ही हो जानी है। वह बैठा नहीं है भीतर ? जब एकाग्रता हुई, प्रकाश हो जाना है, उस अर्न्तयामी ने करना है। तुम यह बताओ, जितने हमारे कर्म हैं, उनकी घंटी कौन बजाता है ? वही बजाता है। जब कर्म आ जाता है तब कोई बीमारी, कोई फोड़ा, कोई अमुक। वह कर्म को नहीं निष्क्रिय बनाता ? लेकिन तुम्हारी तो राय है कभी दुःख आये ही न। लेकिन वह तो जबरदस्ती आया पड़ा होता है।लेकिन वह भी कर्म को भुगतायेगा तब तक, जब तक तुम ईश्वर के नहीं बनोगे, जब तक ईश्वर की शरण नहीं जाओगे। तब तक वह कार्य टलने वाला नहीं। चलो -

जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ।।

जिन्होंने मुझे ईश्वर का, परमेशर का, जो सभी जगह व्यापक है, उसका नाम सुनाया, उस संत पर मैं कुर्बान जाता हूँ।

धनु माइआ संपै तिसु देवउ

मैं तुम्हें एक अन्य बात बताता हूँ आज, तुम भी अपने अनुभव की बताना। गुरू जब उपदेश देता है, हमें भी दिया। उस समय तुम्हें नाम के बिना, ध्यान के बिना और भी कुछ बताता है। यह बताता है। वे कहते पिछला छोड़ दो सारा। फिर तुम, वह ध्यान और नाम ही समीप रखते हो कि पिछला सामान साथ ले आते हो ? या तो निकला नहीं होगा वह। धोखे से उपदेश ले लिया तुम ने। तुम यह देखो। हमें पता है, हमें हमारे गुरू ने उपदेश दिया चौबारे के अन्दर। जो उपदेश दिया, जब जब काफी पढ़ गए, तब हमें उपदेश का पता लगा नई उपदेश तो बहुत अच्छा था। पहले हमें कोई पता नहीं था। हम उत्तर काशी चले गये। हमारा मंत्र कुछ और था, वहाँ से हमने 'सोऽहम्' कर लिया। वे सारे कहें कि सोऽहम् तो अजपा जाप है, मैं भी लग गया। मैं सत्य बताता हूँ जब मैं आकर बैठा, वे कहते - ओये! यह नहीं करना, जो हमने बताया है, वह करना है। मैंने कहा लो भई - दिवाला निकल गया। चोरी तो दिखाई दे गई, वे ईश्वर हैं तो हृदय में बैठकर बताया गुरू को। ईश्वर गुरू ही होता है। इसलिये, गुरू तुम्हें नाम देगा, ध्यान देगा, वह दोनों वस्तुएं तुम्हें देगा। वह ध्यान और नाम के बिना और तो कुछ नहीं देता। तुम तो कुछ और लेते हो, फिर गुरू और परमेश्वर का क्या दोष है ?

ददै दोसु न देऊ किसै करंमा आपणिआ।।
जो मै कीआ सो मैं पाइआ दोसु न दीजै अवर जना।। (प॰ ४३३)

इसलिये तुम तो दूसरी ओर फिरते हो।

जो जो करम कीओ लालच लगि
तिह तिह आपु बंधाइओ।। (प॰ ७०२)

कहते - जो भी तुमने सकाम कर्म किये, उन्होंने तुम्हें बांध लिया। वे कर्म बांधकर तुम्हें जन्म मरण में ले जायेंगे।

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरू। (प॰ २)

कर्मों द्वारा तो तुम्हें वस्त्र (शरीर) मिलता है। किसी को बढ़िया मिल जायेगा, किसी को घटिया। लेकिन मोक्ष का द्वार तो कृपा ने देना है।

नदरी मोखु दुआरू।।

वह कृपा जब होगी, जब प्रसन्न होगा परमेश्वर। वैसे तो नहीं होगी। गुरू और परमेश्वर ब्रह्मज्ञानी तो एक होते हैं। इसलिये वह हर स्थान जिसने 'हरि हरि' नाम सुनाया, दृढ़ कराया, उस गुरू के तो हम कुर्बान जाते हैं।

धनु माइआ संपै तिसु देवउ

जो हमारे पास धन है, माया सम्पत्ति है, उसको दे दो। वह तुमने राजा नजक का प्रसंग नही पढ़ा ? वह ज्ञान हुआ राजा जनक को, वह कहता - मैंने सारा राज्य तुम्हें दिया, वह कहता - बस ! इतनी बात थी। हमारा काम है राज करना और संभालना तुमने है, इसके जिम्मेदार तुम हो। समझ गया ? उसने कोई पशु तो नहीं खोल लिये थे उसके, कोई पैसे नहीं ले जाने थे। और गुरू तो निष्काम होता है, समझ गए ? वह गुरूओं को जो तुमने ब्रह्म देनी है, वह निष्काम वस्तु होगी। ज्ञानी को तुम देखो, जितनी ब्रह्मज्ञानी के पास वस्तुएं हैं संसार के काम आई। आई कि नहीं ? क्यों आई ? ये निष्काम थीं और यदि कच्चे गुरू होते तो झगड़ा ही खत्म हो जाता।

काचे गुर ते मुकति न हूआ।। (प॰ ६३२)

और यह मुक्ति भी उनकी कैसे होगी ? पहले वह आप बंधा हुआ था और उसके द्वारा उनको भी बांध लेगा। फिर भागा फिरेगा सलाह लेता। यह हमारे साथ भी लोग ऐसा ही करते हैं। चलो -

जिनि हरि मीतु मिलाइओ।।

जिसने लोक-परलोक का मित्र मिला दिया, जिसने सद्गुरू मिला दिया।

नानक कचडिआ सिउ तोडि ढूढि सजण संत पकिआ।।

ओइ जीवंदे विछुडहि ओइ मुइया न जाही छोडि।। (प॰ ११०२)

वह मैं बैठा था वहां, जहां मण्डी लगती है। क्या नाम है उसका? वहां हम अब भी रह कर आये हैं 'धनौले'। वहां रागी लगे कीर्तन करने। अब वह भीतर से तो शरई था, लेकिन उन्होनें एक पर्दा कर लिया। भाई! कच्चे गुरू जो होते हैं, वे बुरे होते हैं और कच्चे संत बुरे होते हैं, पक्के संत अच्छे होते हैं। मैंने उनको कहा जब बोल चुके- ओये ! संत तो कच्चा होता ही नहीं। संत कभी कच्चा होता ही नहीं। तुमने क्यों कहा ? वे कहते- जी भूल गये। मैंने कहा, आपने कैसे बनावट बनाई आज ? बनावट तो उन्होंने अच्छी बनाई, अरे भाई! कच्चे संतों के पास मत जाना, पक्कों के पास जाना मैनें कहा, ओए! संत तो कच्चा पक्का होता ही नहीं। संत तो परमेश्वर होता है, वह तो गुरू-परमेश्वर एक होता है। वे भी बड़े बुद्धिमान थे। कहते जी भूल गये, गलती हो गई। अभी सभा बैठी थी, लोग कहते, यह क्यों हो गया ? मैंने कहा 'पूछ लो उनको'।

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ।।

वे संत पक्के ही होते हैं। कच्चे तो संसारी होते हैं या अज्ञानी कच्चा होता है। ज्ञानी तो पक्का होता है अन्य कोई भिन्नता नहीं। इसलिए वे कहते - उन संतों के साथ तुम प्रेम लगाना, जिन्होंने हमें नाम दिया।

खिनु किंचित कृपा करी जगदीसरि

जगत परमेश्वर ने किंचित मात्र कृपा की। तुम्हें पता है, लम्बी चौड़ी बात है। वह घासी बड़ा मजनीक था। घास खोदकर निर्वाह करता था तथा भजन करता था। एक ईश्वर को चाहता था। उसी दिन वह हुआ काम। रात को सब ने कहा जहांगीर को, हे महाराज ! ये सच्चा पातशाह कहते हैं अपने गुरू को, आपको झूठा पातशाह कहते हैं, हमारा यह बड़ा अनादर है। फिर आखिर क्या किया जाये? अजी जब कोई पूछे, मैंने सच्चे पातशाह के पास जाना है, जो आते हैं उनको आपका शमियाना बतायें।

वह शमियाना बताया ही न जाये। वे कहते काम तो चलना नहीं। वे कहते, नहीं जी। वह प्रातः आया घासी, उसके पास पैसे जो थे अर्जित किये हुए, उसका भोजन नहीं किया उसे लेकर आया। उसने कहा- सच्चे पातशाह के पास जाना है उनका शामियाना कहां है ? उसने जहांगीर के शमियाना की ओर संकेत कर दिया, वह चला गया। उसने पैसे रखकर परिक्रमा की, दण्डवत् की ओर हाथ बांधकर खड़ा हो गया। वे कहते - मांग क्या मांगता है ? वह कहता - जी मुक्ति। जहांगीर ने देखा आस-पास। वह काज़ी कहता - एक गांव दे देते हैं तुझे, तुम घास खोदते हो सारा दिन। कहता न जी। वे कहते एक इलाका दे देते हैं। वह कहता - मुझे तीनों लोकों की आवश्यकता नहीं, मैंने मोक्ष लेना है। जहांगीर कहता - वह है मोक्ष वाले का शामियाना, वह है सच्चा पातशाह। उसने पैसे उठा लिये अपने। वही तो थे उसके पास और वह जहांगीर के पास से चला गया और जहांगीर भी पीछे हो लिया और अहलकार सारे पीछे हो लिये। उसने हाथ जोड़कर वही समस्त क्रिया की और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। क्या चाहता है ? कहता जी - मुक्ति। कहते हमारी आंख से आंख मिला। मिलाई। कहता जी - निहाल ! निहाल!! निहाल!!! और झगड़ा समाप्त।

नानक नदरी नदरि निहाल।। (प॰ ८)

निहाल कर दिया। क्यों ? वह पक्का था। वह कहता यह बात तो इतिहास में लिखी है। जहांगीर कहता - जी हिन्दुओं की मोक्ष बहुत सस्ती है तब तो सब हिन्दू ही थे। हिन्दुओं की मोक्ष बड़ी सस्ती है, कहो क्यों ? इतने से पैसों में आ जाती है, गुरू साहिब कहते तुम क्या देते थे ? कहते हम तो सब कुछ दे चुके और इसने क्या कहा ? यह कहता - मुझे तीनो लोकों की आवश्यकता नहीं, मुझे तो मुक्ति की आवश्यकता है। फिर क्या इसको मुक्ति दी न जाये ? यह तो मुक्ति का जिज्ञासु है। वह कहता हां जी, बात तो ठीक है। इसलिये भाई ! वह ईश्वरीय कृपा से काम बनता है।

कृपा कटाख अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारियो।। (प॰ ६८१)

वह तो कृपा की आवश्यकता है, लेकिन कृपा वह करे, जो हृदय में ईश्वर बैठा है। यह बनावटी कृपा ने कुछ नहीं करना है चाहे सारा दिन बोलते जाओ। जब गुरू कृपा कर देगा तो उसी समय काम बन जाना है। हाँ जी।

तब हरि हरि हरि जसु धिआइओ।।

फिर कहता मैं 'हरि हरि' ही सुमिरन किया, हरि का नाम ही जपा, हरि का ही यश गाया, फिर गुरू साहिब कहते, मैनें और कोई कार्य नहीं किया, फिर मैनें हरि का यश ही गाया। चौथे पातशाह कहते, यह तीसरे पातशाह की कृपा से हमें यह बुद्धि प्राप्त हुई।

जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी

वह गुरू साहिब आप कहते हैं। चौथे पातशाह कहते, अब तो मुझे वह स्वामी प्राप्त हो गया। 'नानक' चौथे पातशाह का वाचक है। कहते- अब तो मुझे वह स्वामी मिल गया, प्राप्त हो गया।

दुखु हउमै रोगु गवाइओ।।

अब जो 'होमै' की दीवार थी प्रच्छिन्न, वह मेरा रोग गँवा दिया।

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इस माहि।।

किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।। (प॰ ४६६)

वह नाम ने, मेरी जो औषधि थी न! नाम रूपी औषधि, वह समस्त दुःख 'हौं मैं' का काटकर वह फैंका। 'हौं मैं' ही इसको जन्म-मरण में ले जाती है। चाहे जाति हो, चाहे धर्म की हो, चाहे विद्या की हो, चाहे धन की हो, चाहे जवानी की हो। यही इसको जन्म-मरण की ओर ले जाने वाली है। यह बड़ा रोग है और इससे बड़ा रोग कोई नहीं है। इसको गुरू की कृपा द्वारा जब नाम प्राप्त हो गया और -

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ।। (प॰)

नाम और 'हौं मैं' में विरोध है - **दोइ न वसहि इक ठाइ** वह एक अन्तःकरण में दो तो इकट्ठे रहने नहीं। जब नाम आ गया तो 'हौं मैं' को दौड़ना पड़ेगा। यदि नाम नहीं आया तो 'हौं मैं' का डेरा लगा ही हुआ है। यहां से तो गुरू ही पार करेगा।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

२

।। धनासरी महला ४।।

इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि
जा कै वसि है कामधेना।।
सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े
ता सरब सुख पावहि मेरे मना।।१।।
जपि मन सति नामु सदा सति नामु।।
हलति पलति मुख ऊजल होई है
नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना।। रहाउ।।
जह हर सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी
वडभागी हरि जपना।।
जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी
जपि हरि भवजलु तरना।।२।। (प॰ ६६६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु! सतिनाम श्री वाहिगुरु!!

संसार के समस्त मंगलों से बड़ा मंगल 'नाम' है। क्यों ? नाम-नामी का अभेद है। नाम-नामी दो नहीं आज तक हुए। हुक्म एवं हुक्मी कभी नहीं दो हुए आज तक। इसलिये नाम के साथ आपका जब एक बार मन जुड़ गया तो नामी आपको दृष्टिगोचर हो जायेगा। कभी हो नहीं सकता कि नामी न मिले। लेकिन नाम के साथ मन नहीं जुड़ा।

नाम संगि जिस का मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प॰ २८१)

जितने भी खण्ड ब्रह्मांड धारे हुए हैं, वे नाम के कारण हैं। नाम के क्या नामी के कारण अस्तित्व हैं। नाम-नामी का अभेद है। नाम एक ऐसी वस्तु है, संसार में, परमेश्वर के साथ मिलाने वाला। गुरु घर में मार्ग ही यही है - अन्य कोई नहीं। जब तक तुम्हारा नाम के साथ मन नहीं मिलता तब तक तुम्हें भगवान् नही मिलता, वैसे व्यर्थ बातों, फलां अमुक बातों का, झूठी बातों का लाभ नहीं होता। कर्म का लाभ होता है। इसलिये तुम्हें पता है इस बात का, नाम क्या वस्तु है? नाम-नामी एक हैं। नाम के साथ जब मन का तालमेल हो जाये तो नामी प्राप्त हो जाता है लेकिन नाम और नामी, संत से प्राप्त होता है। यह जो शब्द है उसकी भूमिका दशम् पातशाह ने लिखी -

जब बरदानि समै वहु आवा।।
रामदास तब गुरू कहावा।।
तिस बरदानि पुरातनि लीआ।।
अमरदासि सुर पुरि मगु लीआ। (बचित्र नाटक)

उनमें परम्परा से चल आता है कि कुशों और लवों (कुश और लव) में विवाद हो गया। कुशों ने अपनी शक्ति से कुशों को खदेड़ दिया। वे सनौढ़ देश में चले गये। वहां जो राजा था, उसकी एक बेटी थी। बड़ी योग्य, अच्छी थी। उसने उसका विवाह जो इनका राजकुमार था उसके साथ कर दी। उनसे जिस बच्चे का जन्म हुआ (लड़का) राजकुमार, उसका नाम 'सोढी राय' रखा गया। उस दिन से इनकी 'सोढी' संज्ञा पड़ गई। उन्होंने उस राज्य की शक्ति लेकर कुशों को खदेड़ दिया। कुश काशी चले गए। वहां जाकर उन्होनें चार वेद पढ़े, संसार के कर्म ध र्म कराये। सोढ़ियों ने भी सुना। ये गये, उनके आगे प्रार्थना करके ले आये और वहां एक रीति है काशी में। यदि एक वेद पढ़ा तो वेदी कहते हैं, यदि चार वेद पढ़ा तो चतुर्वेदी कहते हैं। वे चार वेद पढ़ने से 'वेदी' बन गये। उनको लाये, उनसे आकर चार वेद श्रवण किये सोढ़ियों ने। वह सुने, वह जो सोढी राजा था, वह अपना सारा सामान जितना था राज्य भाग, समस्त देकर वन में चला गया। उस समय जो सोढी राजा को वेदियों ने वरदान दिया था, भई चौथी गद्दी गुरू नानक की सोढियो की होगी। उस वरदान का दशम् गुरू ने बताया -

'जब बरदानि' जब वरदान का वह समय आया **'रामदास तब गुरू कहावा'।। 'रामदास'** तब गुरू कहलाया। **'तिस बरदानि पुरातनि लीआ'**। यह वरदान पूर्व का दिया हुआ था। ***'अमरदासि सुर पुरि मगु लीआ'*** अमरदास विरासत इन को सौंपकर, संत बनाकर वहां से चले गये। संत बनता कैसे है ?

प्रेम भक्ति उधरहि से नानक
करि किरपा संतु आपि करिओ है।। (पृ° १३८८)

जिस दिन प्रेमाभक्ति की वृति तुम्हारे हृदय में आ गई, तुम संत बन जाओगे। यदि प्रेमाभक्ति की वृत्ति के बिना तुम संत बनना चाहो, सब व्यर्थ है, ऐसे ही फालतू बातें हैं। यह, संत कभी कच्चा पक्का होता ही नहीं, संत पक्का ही होता है। वहां 'कचड़िआ सिउ तोड' कहा है ***'संत कचड़िआ सिउ तोड़'*** कहीं नहीं कहा है। हाँ ! इधर की बात उधर न लगाओ कभी भी। ये, कई लगा देते हैं। इसलिये संत गुरू अमरदास की कृपा से रामदास गुरू बन गये। गुर गद्दी के मालक बन गये। उन्होंने यह शब्द उच्चारण किया है। संत क्या करता है ?

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभु का लागा मीठा।। (प॰ २६३)

संत के संग के साथ तुम अपने भीतर प्रभु के दर्शन करोगे। यह गुरू अर्जुन देव जी २३वीं अष्टपदी में स्वंय कथन करते हैं। हमने **'संत रामदास'** की कृपा से भीतर प्रभु की दर्शन किये। जब तक तुम अपने भीतर प्रभु के दर्शन नहीं करोगे तब तक तुम यह कार्य करना।

नामु प्रभु का लागा मीठा।। (प॰ २६३)

फिर तुम नाम को छोड़ कैसे दोगे ? फिर तुम नाम को त्याग ही नहीं सकते। फिर तुम्हारा -

नाम संगि जिस का मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प॰ २८१)

फिर वहां देखोगे, लेकिन वह कैसे देखा जाता है ? फरीद के पास भी यही

बात आ गई। जब फरीद वन में तप करता था, बड़ा तप किया। माँ करो बड़ा प्यार था, उसने, उसके सम्मुख सामान रख दिया।

फरीदा सकर खंडु निवात गुडु माखिओ मांझा दुधु।।
सभे वसतू मिठीओ रब न पुजनि तुधु। (प॰ १३७६)

उसने कहा भाई ! ये चीज़ें कभी तुम ने खाई हैं वन में ? कितनी मीठी हैं ? वह कहता माँ बिल्कुल मीठी हैं, लेकिन तुमने परमेश्वर का स्वाद नहीं चखा, तेरी वृत्ति यहां तक है। अब उसने फरीद ने देखा था परमेश्वर का स्वाद। कैसे देखा था ? वह बहुत तप करने के पश्चात् सब कुछ करके ख्वाजा अजमेर के पास गया, वह बहुत पहुँचा हुआ फकीर था, उसकी सेवा करने लग पड़ा। अन्तिम दिन जब आया सेवा का, बारहवें वर्ष का। वह ख्वाजा में रिद्धि सिद्धि थी, उसने आग बुझा दी। स्नान उस समय कराना था, फेल हो गया! आग है नहीं। जब दूर दीप जलता देखा बेरमा का, वहां पहुँच गया। उसको कहता माता! मुझे आग दे दे। वह कहती आँख दे दो। आँख के बदले आग दूँगी। उसने आंख निकाल का कहा यह लो। उसने आग दे दी। आकर उसने जल गर्म किया। जब ख्वाजा को स्नान करवाने लगा, वह पट्टी बांधी थी। वह पूछता - यह क्यों बांधी है ? कहता - जी आंख आ गई। वह बोलता ही ऐसे था। हम वहां रहे हैं न। पाकपटन, वहां आंखें दुखती हों तो कहते हैं - आंख आ गई। उसने कहा - जी आंख आ गई। वे कहते यदि आंख आ गई तो पट्टी खोल दे। परमेश्वर की आंख से तो छोटी होगी लेकिन दृष्टि बहुत होगी। उसने खोल दी, अब तक वह आंख की नसल है, उस कुल में। अभी तक लोग जाकर देखते हैं हम भी गये। लेकिन उसने आंख के बदले आग लाई, अपना पूर्ण निर्वाह दिया, स्नान करा दिया और उसको परमेश्वर का स्वाद ख्वाजा ने दिखा दिया।

रब न पुजनि तुधु।। (प॰ १३७६)

माँ, यह परमेश्वर जितनी मीठी नहीं, प्रभु जैसी मीठी वस्तु कोई भी नहीं, लेकिन उसने स्वाद देखा हुआ था ख्वाजा फकीर के पास, पीर के पास। लेकिन माँ ने खुदा का स्वाद तो नहीं था देखा। जब तक इसको खुदा का स्वाद प्राप्त नहीं होता तब तक केवल बातें हैं। अब तुम जानते हो सब, तुम्हारी वृत्ति में परमेश्वर बैठा है, वह जो व्यापक है, तुम्हारी वृत्ति में भी तो वही है।

पूजन चाली ब्रहम ठाइ।।
सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि।।
जहा जाईऐ तह जल पखान।।
तू पूरि रहिओ है सम समान।।
बेद पुरान सभ देखे जोइ।।
ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ।।
सतिगुर मै बलिहारी तोर।।
जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर।।
रामानन्द सुआमी रमत ब्रहम।।
गुर का सबदु काटै कोटि करम।। (प॰ ११६५)

तुम सब बताओ ? तुम अपनी वृत्ति को, अपने विचार को, अपनी वासना को, कामनाओं को जितनी उठती हैं, किसके साथ देखते हो ? जब तुम आंख बंद किये पड़े होते हो, उस समय कौन सी वह विद्युत है आपके पास ? दो प्रकार की है, एक आन्तरिक और एक बाह्य। बाह्य है चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, विद्युत आदि। सुवुप्ति जब गहरी निद्रा होती है, कोई नहीं होता, उस समय तुम अविद्या की वृत्ति किस के साथ देखते हो ? 'सत्' जिसके प्रकाश के साथ यह समस्त प्रकाश देखा जाता है। इसलिये, वह तुम्हारे भीतर है और तुम्हारा 'आपा' है। तुम्हारा 'आपा' वृत्ति तो नहीं है। वृत्ति तो तीनो गुणों की होगी चाहे रजो, तमो, सतो किसी गुण की हो। यह तीनों गुणों की होगी। वह जो 'चौथा' है, वह कौन है ? 'सत्'। अब 'सत्' तो परमेश्वर है, अन्य कोई नहीं है। जो तीनों कालों में एक रस रदहे और व्यापक परिपूर्ण, उसको आत्मा कहते हैं। 'आपा' आत्मा का नाम है 'अपना आप' (अपना वास्तविक स्वरूप) अब आप -

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ।।
चउथे पद कउ जो नरू चीन्है तिन्ह ही परम पदु पाइआ।। (प॰ ११२३)

वह तो चौथा पद है। अब आप बताओ ? तुम जिस वृत्ति से देखते हो अथवा वृत्ति द्वारा देखते हो, उसको सदैव कहेंगे, मेरी वृत्ति जी कैसे आकार की हो गई, मेरी वृत्ति जी अमुक आकार की हो गई। उसको मेरी कहते हो मैं तो नहीं कहते। वह 'मैं' तो वह जो वृत्ति का साक्षी है, जो वृत्ति को देखता और जानता है, 'मैं' तो वह है। 'मैं' और 'मेरी' तो टूट जाती है। 'मैं' में आकर समस्त संसार के साथ तुम मोह करते हो, यह मेरा पुत्र, यह मेरी पुत्री, घर आदि जो कुछ भी। लेकिन जब तुम अपने आपे में जाओगे वास्तव 'मैं' में तो मेरे नहीं कहोगे तो केवल 'मैं' कहोगे। वह 'आपा' है। उसको आत्मा कहते हैं।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई।। (प॰ ४२१)

उसको उस के ऊपर यह गुरू कृपा कहो, गुरूओं की शक्ति कहो, वह परमेश्वर की शक्ति होती है। गुरू की अपनी अलग शक्ति कोई नहीं होती। जो गुरू होगा ब्रह्मज्ञानी, वह तो हुक्म के अंदर होगा, वह तो हुक्म के बाहर होता नहीं। हुक्म के बाहर नहीं होता, वह तो हुक्म में हैं। उसने तो जो काम करना है, हुक्म में करना है। ब्रह्मज्ञानी हुक्म के बाहर नहीं कभी जायेगा, जो बोलेगा हुक्म में बोलेगा। जो कहेगा, हुक्म में कहेगा तो वह सही होगा। इसलिये अब तुम यह बताओ ? जो तुम्हारी यह देखने वाली वस्तु है अथवा वृत्ति है, अन्तःकरण से उठी, स्थिर हो गई और हट गई। ये तो तीनों जड़ हैं, तुम तो चेतन हो। जड़ तो जड़ को देख नहीं सकती, चेतन देख सकता है। वह **स्वयं प्रकाश** है, लेकिन यह तो **पर-प्रकाश** है सारा।

एक समय भान होइ साक्षी अरू आभास।
दूजो चेतन को विषय साक्षी स्वयं प्रकाश।।

(निश्चलदास 'विचार सागर ४/११६)

वह साक्षी आपका 'आपा' है, जब तुम्हारी वृत्ति यहां जायेगी, यहां समान चेतन है। पहले इस की आकार वृत्ति होगी। पहले, यह समान चेतन तुम्हारा साक्षी बनेगा, वृत्ति चेतन तुम्हारा आपा बनेगा, फिर तुम्हें वृत्ति दृष्टिगोचर होगी, फिर दृश्य दिखाई देगा, यह तीनों दिखाई देंगे। लेकिन तुम तो वह वस्तु हो, जो देखने वाला है।

द्रिसटिमान है सगल मिथेना।। (प॰ १०८३)

जो देखने में आता है, वह असत्य होता है और द्रष्टा तो कभी असत्य नहीं होता।

मूई सुरति बादु अंहकारू।।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।। (प॰ १५२)

वह, देखने वाला तो नित्य है। द्रष्टा का कहीं जन्म-मरण नहीं लिखा, दृष्टा व्यापक है। दाना-बीणा व्यापक है, साक्षी व्यापक है, वह तो सर्वत्र व्यापक है। वह तो व्यापक है, वह तुम्हारी वृत्ति में भी तो बैठा है। जो तुम्हारी वृत्ति में न हो तो प्रच्छिन्न हो जायेगा तो न्यून हो जायेगा।

आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह।।
सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अधनासन जगदीसुरह।। (प॰ ७०५)

वह तो समस्त पापों का नाश करने वाला है, लेकिन वह तो आपा है। अब तुम यह बताओ ? तुम्हारी वृत्ति आपे में स्थिर है कि संसार में स्थिर है ? यह तो तुम स्वयं ही अपने अंदर देखो। क्यों ? तुम अपनी वृत्ति के साक्षी हो, मैं अपनी वृत्ति का साक्षी हूँ। यदि तुम्हारी वृत्ति आपे में स्थिर है तो संसार समाप्त हो जायेगा। तो संसार तो सारा दृष्टमान रह गया, वह तो मिथ्या है।

द्रिसटिमान है सगल मिथेना।। (प॰ १०८३)

और द्रष्टा तो नहीं मिथ्या। तुम तो द्रष्टा हो, आत्मा हो, साक्षी हो।

दाना बीणा साई मैंडा नानक सार न जाणा तेरी।। (प॰ ५२०)

तुम तो देखते भी हो, जानते भी हो। तुम अपने अंदर देखो, जब तुम्हारे अंदर कोई संकल्प उठता है, उसको देखते भी हो और जानते भी हो। तुम संकल्प तो नहीं हो, संकल्प तो जड़ होता है। इसलिये वह तुम्हारा आपा है, इसमें कोई संशय नहीं है। इसलिये वह जो परमेश्वर है, वह परिपूर्ण है, वह साक्षी है, अखण्ड

है। और जब तक तुम्हारा साक्षी नहीं जायेगा, यह अहंकार निवृत्ति नहीं होगी। जब तक अंहकार है तब तक जीव है। जिसका साक्षी चित्त जाग गया, उसको ज्ञान हो गया। वह व्यापक है, उसकी वृत्ति ब्रह्माकार हो गई, अखण्डाकार हो गई अथवा लिव कह दो। लिव और अविनाशी पद की प्राप्ति हो गई। क्यों ? यह गया गुरू की शरण में, फिर सुमिरन आया।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीऊ का इहै अधार।। (प॰ २६५)

लेकिन तुम्हारे सुमिरन के मध्य अन्य कोई संकल्प न आ जाये। फिर तो तुम्हारा सुमिरन चला ही न।

खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।। (प॰ ७१४)

यदि तुम उस अविनाशी पद की प्राप्ति चाहते हो, वह सुख चाहते हो तो सुमिरन न बंद करना। सुमिरन के बाद गुरू ग्रन्थ साहिब में आता है, मैनें सुना **'अनाहत'** आता है **'इक रस'।** वह जब सुमिरन एक रस हो जाये उसको अनाहत कहते हैं। निर-अहंकार, वहां अहंकार तो रहा नहीं। पहले धुनि आयेगी, धुनि से लिव, लिव से अविनाशी पद की प्राप्ति। यह गुरू की शिक्षा है। इसलिये पहले अपने आपकी सूझ होनी चाहिए, फिर वह बोलेगा भी समझकर। अभी संसार को खुश करने के लिये बोलना पड़ता है, बड़ा गलत। भई खुश हो न हो, उनकी खुशी है, तुम्हारा कोई ठेका लिया हुआ है ? वह पद लगाने वहां झूठे। आज तुम कहते थे संत एक कच्चा होता है, एक पक्का होता है। मैंने कहां कच्चा संत कोई होता ही नहीं। संत सारे पक्के होते हैं। मुझे कच्चा संत कोई दिखाओ ? उसको तो जीव कहो तुम, कच्चा तो जीव होता है। समझ गये ?

प्रेम भगति उधरहि से नानक
करि किरपा संतु आपि करिओ है।। (प॰ १३८८)

जिसमें प्रेमाभक्ति आ जायेगी, वह संत बन जायेगा, फिर कच्चा कहां से रह गया ? वह तो पक्का ही होगा। आचरण भी यही है निर्मल, सुखमनी में -

साध नाम निरमल ता के करम।। (प॰ २६६)

जिस समस्त कर्म शुद्ध हो जायें, उसको 'साधु' कहते हैं। तुम घी को जब तीन बार गरम कर लो, वह बिल्कुल शुद्ध हो जाता है। उसका सब कुछ जल जाता है, ठीक हो जाता है तो फिर उसको तुम अशुद्ध कैसे कह दोगे ? वह तो फिर शुद्ध हो गया। शुद्ध का नाम संत, साधु है, अन्य किसी का नाम नहीं। यह जो लोगों ने बनाई हैं बातें, ये बाद में बनाई हैं, क्यों ? बाणी इनको आती है ? एक पंक्ति यहां से उठायेंगें, यहा लगा देंगे और उनका घर पूरा कर सुना देंगे और काम बिगड़ जायेगा। वाणी एक ऐसी वस्तु है, इसका कोई पद भी गलत न हो क्योंकि यह है ईश्वरीय वाणी। गलत तो यह है नहीं, सही है बिल्कुल। परंतु तुम्हारा मन, सही के साथ बिल्कुल मिल जाये फिर तो है ठीक, नहीं गलत है। ये बातें बिल्कुल नहीं करनी चाहिएं, वह सही पढ़ो, सही बोलो, यह तो सत्य है। तुम तो सत्य बोलने का प्रयत्न करना है। एक सत्य होता है संसार का सत्य, यह गलत होता है। एक होता है आध्यात्मिक सत्य। संसार का सत्य यह होता है। एक ने पूछा - हमारे सामने की बात है कि भाई ! वोट ? वह कहता जी आपके बिना और किस को डालना है और मैंने पूछा कि तुम इसको डालोगे ? कहता जी काहे को डालना है, तो मैंने पूछा कि तुमने फिर ऐसे क्यों कहा ? कहते जी राज़ी भी तो करना है।

एक होता है आध्यात्मिक सत्य। आध्यात्मिक आत्मिक सत्य होता है। तुम किसी से लेने है रूपये बीस, वह तुम्हें दे गया तीस। तुम गिनकर जेब में डाल लिए, मन में लोभ किया भई अब कौन पूछता है ? वह आ गया, कहता मैं दस रूपये अधिक दे गया भूलकर। कहता - न, वहां जाकर गिन, मेरे पास बीस ही हैं। लेकिन आत्मिक आवाज़ कहती है, तीस हैं। तुम ने लिये हैं तुम्हारी जेब में हैं और अमुक स्थान पर रखे हैं। तुम उसको कभी नहीं बदल सकते। पचास बार तुम झूठ बोलो, वह अंदर से आत्मा की आवाज वही कहेगी भई तुमने तो तीस लिये हैं, अमुक स्थान पर तुमने रखे हैं और जो आत्मिक सत्य होता है, वह आध्यात्मिक सत्य होता है।

वह गांधी कहता था, उसको जब कहते क्यों नमक बनाते हो ? खर्च होता है, अमुक होता है। वह कहता - मेरी आत्मिक आवाज़ है। वह जब बदली हुई (पाकिस्तान बना) वह नमक की जरूरत पड़ी, वह कहते-बिल्कुल सत्य है। आत्मा की आवाज़ का कितना लाभ हुआ। इसलिये जो आत्मिक आवाज़ के साथ चलता है, वही व्यक्ति सत्य बोल सकता है। दूसरा काम तो गलत ही होता है। वह तो धोखा देना होता है, उससे तो न ही बोले, वह अच्छा है। इसलिये भाई !

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ।।
नानकु बखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।। (प॰ ४६८)

जिसके पास आत्मिक सत्य है, उसके समस्त पाप कट जायेंगे।

सरब धरम महि स्रेसट धरमु।।
हरि को नामु जपि निरमल करमु।। (प॰ २६६)

गुरू-घर ने निर्णय कर दिया, किसका ? भई हरि का नाम जपना और निष्काम सेवा करनी। बस झगड़ा ही समाप्त हो गया। अभी तो कर्म धर्म में ही नहीं पहुंचे। धर्म की सीढ़ी पर पैर रखेगे तो कर्म धर्म में पहुँचोगे। इसलिये -

सरब रोग का अउखदु नामु।।
कलिआण रूप मंगल गुण गाम।। (प॰ २७४)

औषधियां भी गुरू ग्रन्थ साहिब में दो ही लिखी हैं और बड़े रोग भी दो ही लिखे हैं।

एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ।। (प॰ ६१६)

सहस खटे लख कउ उठि धावै।।
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै।। (प॰ २७८)

इसलिये तृष्णा भी बड़ा रोग है इस संसार में। और

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।।
किरपा करे जे आपणी ता गुरे का सबदु कमाहि।। (प॰ ४६६)

एक संत को दूसरे संत ने कहा कि आप अहंकारी बड़े हैं। वह कहता - इसको आश्रय मैं ही दे सकता हूँ, तुम नहीं दे सकते। वह कहता, क्यों ? जी अहंकार को आसरा ज्ञानी दे देगा, थोड़ा-बहुत अज्ञानी कैसे देगा ? अज्ञानी को तो यह जन्मों में दौड़ाता फिरता है अहंकार। तुम्हारा जन्म-मरण या मेरा, अहंकार के अश्रित ही है। जब तक अहंकार है, यह जीव है, जन्म लेगा और मरेगा, एक नाम ही औषधि है और जब इसका मन, नाम के साथ जुड़ गया।

नाम संगि जिस का मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प॰ २८१)

वह निराकार परमेश्वर को जान लेता है। लेकिन मन इसके आगे है, यह मन के आगे तो नहीं है। मन को तो यह हर समय देखता है और आत्मका को तो इसने आज तक नहीं देखा और न देखे कभी। वह तो स्व-अनुभव है वह तो स्वतः अनुभव है। उसको देखने वाला द्रष्टा कोई अन्य नहीं।

ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु।। (प॰ ७)

वह तो देखता है, दृष्टा व्यापक है। वह कहता, वो जो हैं तीनों गुणों के साथ जुड़े हुए ब्रह्मा, विष्णु, महेश उनकी दृष्टि में भी नहीं आया, क्यों ? वे गुणों को छोड़ें रज, तम, सत्व को तो वे देखें, फिर वे वही बन जायेगा, द्रष्टा भी बन जायेगा, दृश्य नहीं बनेगा।

द्रिसटिमान है सगल मिथेना।। (प॰ १०८३)

यह तो गलत है, मन जो है, उसको देखना है। नौवें पातशाह ने लिखा है-

मन रे कउनु कुमति तै लीनी।।
पर दारा निदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी। (प॰ ६३१)

कहते, तुम तो यहां खड़े हो **'पर दारा'** पराई स्त्रियों, पराई निन्दा, पराई वस्तु, तुम तो कहते यहां खड़े हो। मन रे! राम की भक्ति तो तुम ने खोजी नहीं।

रमत राम जनम मरणु निवारै।। (प॰ ८६५)

राम तो सर्वत्र रमा हुआ है। जब तुम्हें यह मिल जायेगा, तुम राम से अलग

तो रह नहीं सकते। राम तो एक है, व्यापक रमा हुआ और तुम अलग कैसे होगे? और वह उसके साथ मिल गया, वह जो-

आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह।। (प॰ ७०५)

परमेश्वर तो पहले ही पूर्ण है। कोई हमने पूर्ण नहीं करना, हमारा तो मन लीन होना है।

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ।।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ।। (प॰ ४)

वह कहता सुन ले, मनन कर ले, निदिध्यासन कर ले, प्रेम के साथ तुम तन्मय हो जाओगे। पूर्ण प्रेम हो जाता तो अन्तरलीन हो जाता। परमेश्वर पूर्ण तो पहले ही था, उसको पूर्ण का अनुभव हो जायेगा, पहले अनुभव नहीं था, पहले संसार को सत्य मानता था। इसलिये -

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ।।
अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ। (प॰ ६३१)

तुम्हें तो मोक्ष-पंथ ही नहीं मिला।

गिआनै कारन करम अभिआसु।।
गिआनु भइया तह करमह नासु।। (प॰ ११६७)

कर्म, तुम्हारे नाश करने से तो नहीं हुए, ज्ञान से नाश हुए हैं। ज्ञान के पश्चात् तुमने निष्काम सेवा करनी है। लेकिन -

गिआनु भइआ तह करमह नासु।।

भाई बहनो का जब समस्त कर्म नष्ट कर दिया पंचम पातशाह ने तो फिर तो वह स्वयं ही रह जाता है।

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ
नह उपजिओ कछु गिआना।।
घटि ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना।। (प॰ ६३२)

न तो हरि भजन चला, हरि-भजन तो तब चलेगा जब मन, नाम के साथ एक हो जाता है। उससे पूर्व तो चल नहीं सकता। वह तो कच्ची चांदमारी है (बंदूक के शिक्षण के समय निशाना साधने वाले स्थान पर बना चांद का निशान) कच्ची चाँदमारी से आज तक किसी को पुरस्कार नहीं मिला, पक्की चाँदमारी से मिलता होता है। जब तक उसके साथ तुम्हारा मन एक नहीं होगा नाम के साथ, तो चलेगा कैसे?

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ (प॰ ६३२)

तुम ने गुरूजन की सेवा भी नहीं की। देखो ख्वाजा ने खुदा का स्वाद दिखाया।

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।। (प॰ २६३)

यहां पहुँचकर मीठा लगेगा।

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कुछ गिआना।।
घटि ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना।। (प॰ ६३२)

तुझे तो ज्ञान भी न हुआ। वे कहते- कहाँ जाना था ?

तुम्हारे हृदय में निराकार परमेश्वर आपका आपा है। लेकिन तुम तो संसार को खोजते फिरते हो। यह मिल जाये, यहां ऐसे हो जाये, यहां यह कर लें, ऐसे हो जायेगा। कहते - तुम व्यर्थ 'उद्यान' अर्थात् जंगल में दौड़ा फिरता है। और **'घट ही माहि निरंजनु तेरे'** 'निरंजन' निराकार का नाम है और निराकार तो तेरा 'आपा' है और निराकार कोई वृत्ति नहीं कोई विचार नहीं है, कोई वस्तु तेरा 'आपा' नहीं। तुम सब के द्रष्टा हो। द्रष्टा कभी जन्म मरण में आज तक नहीं आया।

मूई सुरति बादु अहंकारू।।
ओह न मूआ जो देखणहारू।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही।।

रतन पदारथ घट ही माही।।
पड़ि पड़ि पंडितु बादु बखाणै।।
भीतरि होदी बसतु ना जाणै।। (प॰ १५२)

पंडित! तुमने आत्म-वस्तु को नहीं जाना, तुम तो वाद-विवाद करता संसार में घूमता रहा है। वह कहता- जी फिर तीर्थों पर जाऊंगा। गुरू साहिब कहते, वहां जाकर क्या करोगे ? वहां भी वह वस्तु नहीं मिलेगी। तुम्हें आत्मा का ज्ञान नहीं। वह कहता - जी फिर आप नहीं मरोगे ? वे कहते -

हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।।
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।
मरता जाता नदरि न आइआ।। (प॰ १५२)

जन्म-मरण वहां नहीं, गुरू साहिब कहते, वह जो बला थी न अविद्या, भ्रम गुरू साहिब कहते - वह हमारी दूर हो गई। तुम हमारी चिन्ता न करना, अब हमारे पास जन्म-मरण नहीं है। हम वहां पहुंच गये हैं जहां जन्म-मरण नहीं है। व्यापक का जन्म-मरण नहीं होता। जब तुम्हारी वृत्ति एकाग्र हो जाती है, फिर दिखाई देती है कोई वस्तु संसार की ? अविनाशी पद है। वृत्ति तो यह देखता नहीं कि मेरी वृत्ति कहां है, यह वृत्ति तो साधन है। आत्मा तो शुद्ध है पहले ही, आत्मा को शुद्ध तो नहीं करना। वह तो पहले, समस्त प्रकाशकों का प्रकाशक भी वही है। वह तो तुम्हारा 'आपा' है। किन्तु विश्वास नहीं। विश्वास महापुरूषों की कृपा के बिना होता नहीं। एक मौलाना रुम हुआ है, तुमने भी सुना होगा। वह इतना पढ़ा लिखा था, विश्व की पुस्तकें उसने एकत्रित कीं। लिख-लिख इकट्ठा किया, बहुत कुछ इकट्ठा किया। लेकिन खुदा को उस के ऊपर कुछ दया आई। उसने सरमद को वहां भेज दिया। वह सरमद मस्ती में वहां बैठ गया। उसने जाना था भोजन करने। कहता, मैं मस्ता! भोजन करने जाना है, तुम बैठोगे? उसने हाँ कर दी। वह जब वापिस आया, जितनी उसकी पुस्तकें थी, सारी उसने टोबे में फैंक दी, तालाब में फैंक दी। उसने जब देखा, वह कहता - मस्ता काम बिगाड़ दिया, मार दिया मस्त, मुझे तो तुमने कहीं का नहीं रखा। वह कहता - क्या हो गया ? वह कहता - मेरी तो यही सम्पत्ति थी, पुस्तकें पढ़ी हुईं सब कुछ, सब तुमने तालाब में फैंक दिये। वह कहता - इनसे जो होता है कुछ ? वह कहता - हाँ। मैं तो मर गया, मैं तो अत्यन्त दुःखी हूँ। उसने एक पुस्तक निकाल कर दी, उसने पकड़ी तो सूखी, दूसरी ले आया, वह भी सूखी, तीसरी ले आया, वह भी सूखी। मुसलमान इतना पक्का था वह, अपने गुरू को इतना पक्का समझता था कि अन्य सब कच्चे, जो इस्लाम है वह सब से धर्म पक्का। यहां घर बैठा था भेद डाले, इतना कुछ लेकर सबके साथ द्वैत डाले बैठा था। वह, जब उसकी कृपा हुई। यह 'गुर प्रसादि' के बिना, किसी का काम आज तक नहीं चला, और न भविष्य में चलेगा, यह ऐसे ही लोगों की व्यर्थ बातें हैं, गल्तियां हैं। **'गुर प्रसादि'** यदि न होता तो गुरू साहिब **'गुर प्रसादि'** न लिखते।

एकम एककारू निराला।। अमरू अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रुपु न रेखिआ।। (प॰ ८३८)

ऐसा परमेश्वर है, पहली पातशाही का कथन है, बिलावल राग में। कहते जी है कहां ? कहते -

खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।। (प॰ ८३८)

पहली पातशाही का कथन है - सब के हृदय में बैठा है। तुम बताओ तुम्हारे हृदय में जो तुम्हारी वृत्ति को ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय सबको देखता है, वह चेतन है कि जड़ है ? मैं तुम्हें पूछता हूँ, वह जड़ है कि चेतन है, देखने वाला, तुम बताओ ? वह चेतन है तो फिर वह चेतन तो एक है, दो तो हैं नहीं। मैं तुम्हें एक बात पूछता हूँ। हमने उसे पढ़ा है। 'इक' में जाति नहीं होती। जाति दो, चार, छः में होती है। एक में जाति नहीं होती और एक में धर्म भी नहीं होता और एक में पंथ भी कभी नहीं होता। पंथी जब एकत्रित होंगे तब पंथ बनेगा। एक कोई वस्तु नहीं होती, वह तो एका है।

एका एकंकार लिखु देखालिआ ऊडा उअंकार पासि बहालिआ।।

भाई गुरदास जी लिखते हैं **'ऐका'** तो गुरू साहिब ने लिखकर दिखा दिया कि परमेश्वर एक है और **'ऊडा'** नाम उसके समीप बैठा दिया।

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ।।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।। (प॰ ४६३)

उसने स्वयं को रचा है।

निरगुन आपि सरगुनु भी ओही।।
कला धारि जिनि सगली मोही।। (प॰ २८७)

वह तो एक है और दूसरी तो सृष्टि है। नाम और नामी तो एक हैं, वे तो दो हो नहीं सकते, क्यों ? नाम-नामी का अभेद है, वे दो कैसे कर दोगे तुम? नाम कोई भी हो। अल्लाह अल्लाह जपने वालों का भी निश्चय वालों का काम बन गया और राम राम सुमिरन करने वालों का भी बन गया, वाहिगुरू वाहिगुरू जपने वालों का भी निश्चय के साथ ही काम बना, क्यों ? नाम-नामी के साथ एक है न ! **'दुयी कुदरति साजीऐ'** उसने दूसरे यह प्रकृति रची है, सृष्टि।

करि आसणु डिठो चाउ।। (प॰ ४६३)

सब के हृदयों में साक्षी होकर नहीं बैठा है ? कहीं गया तो नहीं है ? गैर हाजिर तो नहीं हुआ वह ?

साक्षी ब्रह्म स्वरूप इक, नहीं भेद को गंध।
राग मति के धरम तामे मानत अंध। (निहचलदास, विचार सागर २/१२)

चेतन धर्म रहित है, किसी धर्म वाला नहीं। यदि धर्म वाला होता, फिर चांद ईसाई धर्म वाला होता, हम सब गए थे, यदि सिक्ख धर्म वाला होता तो उन सबको जवाब मिल जाता ना ! वह धर्म रहित है, वह निर्विशेष है, निराकार आज तक कभी बदला नहीं। और न बदले। द्रष्टा तो उसको कह दोगे, दाना बीना कह दोगे, साक्षी कह दोगे, यह तो कह सकते हो तुम, पर और नहीं कुछ कह सकते। वह सब के हृदयों में एक बैठा है। एक में जाति, धर्म पंथ कुछ नही होता। जब तुम्हारा ध्यान वहां चला जायेगा, स्वयं ही एक हो जायेगा, फिर शत्रुता करने वाला कोई शेष रहा ही नहीं। यह यही कल्पना करता है, ये भले हैं ये बुरे हैं। इसलिये गुरू साहिब ने एक स्थान पर लिखा है, पंचम पातशाह ने -

बिसरि गई सभ ताति पराई।
जब ते साधसंगति मोहि पाई। रहाउ।।
ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई।।
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ
एह सुमति साधू ते पाई।।
सभ भहि रवि रहिआ प्रभु एकै
पेखि पेखि नानक बिगसाई।। (प॰ १२६६)

हो गया न प्रसन्न। इस स्थान पर हम आते ही नहीं। जिस दिन वहां चला गया, स्वयं ही भूल जायेगा, कहने की आवश्यकता नहीं, उपदेश की जरूरत नहीं, अपितु उपदेश देने लग जायेगा। इसलिये भाई! वह परमेश्वर सब में व्याप्त एक है, वह दो नहीं कभी हुआ। यदि दो होते तो गुरू साहिब दो लिख देते यदि तीन होते तो तीन लिख देते। उन्होंने 'एका' इसलिये लिखा कलियुग में। पहले किसी ने **'एका'** नहीं लिखा। न गीता में, न वेद में, कहीं **'एका'** नहीं। गुरू-घर ने **'एका'** लिखा, भई इनको इतना पता लग जाये कि परमेश्वर एक है, यहां तो खड़ा होगा। इसलिये, हमसे तो और बातें व्यर्थ होती नहीं। परमेश्वर जो है, वह सब से व्यापक है, एक है। **'आत्मा'** उसको कहते हैं, आपा कहते हैं। व्यापाक है, परिपूर्ण है। साक्षी कहो, दाना-बीणा कहो, वह तो है आपा और शेष समस्त सृष्टि रची हुई है, लेकिन है उसकी रची हुई। इसलिये, इसके साथ भी नहीं द्वेष करना। यदि किसी अन्य की रची होती तो द्वेष बनता था। रची तो अकाल पुरूष (परमेश्वर) की है, अकाल पुरूष को कहो, तुमने क्यों ऐसी रची ?

मैं एक डेरे (आश्रम) में रहता था, गुजरांवाला जिलें में थोड़े समय के लिए। वहां एक फकीर रहता था, बड़ा भारी फकीर था। वे लगे मारने सुअरों को, एक सूअर के बच्चे को घाव हो गया। वह फकीर ने कहा - पकड़ लो इसको, दवाई

लगाओ। औषधि लगाई, सब कुछ हुआ, वह ठीक हो गया। तो मुसलमानों ने सभा कर ली, भई आप ने इन पशुओं में सूअर को क्यों पकड़ा ? क्यों निदान दिया ? यह तो हराम है। कहता फिर तुम दण्ड लगा दो। वह कहता - तुम देग बनाओ, वह तो चावल बनाते हैं, वह (देग) बनाई उसने। जब व सब खाने के लिए आये, वह कहता मेरी बात सुन लो। वे कहते क्या ? कहता पहले तुम परमेश्वर को दण्ड लगाओ, उसने ऐसा पशु बनाया क्यों ? मैनें तो अब दुःखी की सेवा करनी थी, खुदा को दण्ड लगाओ, उसने ऐसा बनाया क्यों पशु ? जिसके हाथ लगाने से भ्रष्ट हो जाते हैं। तब खाना सारे। कहते जी हम भूल गये। कहते तो खालो। वह तो खुदा ने सृष्टि तो स्वयं रची है, कर्मों के अनुसार रची है।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करइ सो तस फल चाखा। (रामायण)

अन्य तो किसी ने यह रची नहीं और कर्मों के अनुसार रची है, उसने ठीक न्याय के साथ रची है। उसके साथ हमारी द्वेष नही चलती, चाहे हमारा मन भूल जाये, अनात्मा में चला जाये। वे जो गुरू हैं न बनावटी से, वे इन्हें इस मार्ग पर ले जाते हैं, लड़ो ओए, मरो ओए। इस प्रकार तो काम नहीं चलना है। लेकिन यह सच नहीं, सच तो एक है अन्य कोई सत्य नहीं। इसलिये भाई ! परमेश्वर एक है, सबका स्वामी है। चल भाई ! पढ़ पंक्ति -

धनासरी महला ४।।

चौथे पातशाह धनासरी राग में कथन करते हैं। ईश्वरीय वाणी का जो हुक्मनामा आया, वही उन्होंने कथन करना है।

इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि

वह जो हरि है, वह समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है, सर्व सुखों का प्रदाता है। उसके बिना अन्य कोई इच्छायें पूर्ण नहीं कर सकता। वही समस्त सुखों का प्रदाता है। वह एक ही है। **'सरब सुखदाता'** वह सब में एक है। उस दाता को मानों, हरि को मानो, परमेश्वर पर विश्वास रखो। तुम्हारी इच्छायें भी पूर्ण हो जायेंगी, तुम्हें आत्मिक सुख भी प्राप्त हो जायेगा। तो उस परमेश्वर को मानों। चलो -

जा कै वसि है कामधेना।।

कामेधनु, कल्प वृक्ष, जितने भी फल देने वाले हैं बड़े, वे भी इसके वश हैं, वह स्वयं ही फल देता है। इसकी तुम चिंता न करो, उसके वशीभूत है। उससे वृत्ति भी कभी अनात्मा में न ले जाना। तुम्हारी वृत्ति आकार हो एक हरि के साथ, किसी अन्य की ओर न ले जाना। यह तो भ्रमित है, आप देखते हैं आसपास, कभी स्थिर हुई है ? यह तो दौड़ी फिरती है। ये तो कृत्रिम बातें हैं, बाह्य खप से करते हैं, गलत है।

सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े।

हे मेरे जीव ! इस प्रकार हरि सुमिरन किया कर। हरि का अर्थ क्या है ? हर स्थान पर जो हो और क्या अर्थ है ? जो प्रत्येक स्थान पर हो, उसको हरि कहते हैं, जो सब की रक्षा करे, उसको हरि कहते हैं। वह परमेश्वर है, उसको हरि कह दो, राम कह दो सर्वत्र रमा हुआ है। वाहिगुरू कह दो, आवश्चर्य रूप है तो उसको सतनाम् कह दो। सत् जो होता है, वह एक ही है, तीनों कालों में, वह कभी बदला नहीं। चलो -

ता सरब सुख पावहि मेरे मना।।

संसार के समस्त सुख तुम्हारे पास आ जायेंगे। आत्मिक सुख, जब तुम्हें प्राप्त हो गया फिर लोग तुम्हारे चालक हो जायेंगे। हम गुरू घर के चालक क्यों हैं ? उनके पास सुख है। हम तो मांगते हैं प्रार्थना करके और हमें कोई प्रार्थना क्यों नहीं करता ? उनको पता है कि इसके पास है तो कुछ नहीं, वैसे ही है। इसलिये भाई ! इसको समस्त सुख प्राप्त हो जायेंगे, तुम्हे आत्मिक सुख भी प्राप्त हो जायेगा।

नाम संगि जिसका मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प॰ २८१)

लेकिन नाम के साथ एक हो जा, निराकार को जान लेगा। इसलिये

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ।।
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ।। (प॰ २८५)

तुम मूल को पहचान लोगे। जब सत्य को मान लिया तो सत्य ही मूल है, और तो नहीं कोई मूल होता। तुम मूल को जान लो फिर तुम परमेश्वर को पहचान लोगे। वे समस्त सुख उसके पास है। लेकिन यहां से हटकर कहीं और से सुख न मांग। अन्य किसी व्यक्ति के, देवताओं के, फलां के, अमुक के, यदि मांगने निकल पड़ा, यदि तुम उनके याचक बन गये, फिर तुम परमेश्वर के याचक नहीं होंगे। परमेश्वर का जो याचक होता है, वह अन्य का याचक नहीं होता, यह नियम है। हां ! कबीर कभी किसी का याचक बना ? दादू बना ? गुरू नानक कभी बना? इसलिये कोई नहीं हुआ, यह गुरूनानक की विलक्षण बात है।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।। (पृ॰ १४०८)

वे तो **'नानक'** कहलाये, वे किसी संसारिक गुरू को बनाकर गुरू नहीं बने। 'गुरू अंगद' को गुरू कह सकते हो संसार के, लेकिन उनकों नहीं। वे तो धुर से आये थे गुरू बन कर। वे तो गद्दी के मालिक धुर से बनकर आये थे, कोई हमारी पंचायत ने एकत्रित होकर वोट नहीं दिये थे।

थापिआ न जाइ कीता न होइ।।
आपे आपि निरंजनु सोइ।। (प॰ २)

है तो यह निराकार लेकिन यहां बात दूसरी है।

सभ महि जोति जोति है साइ।।
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ।।
गुर साखी जोति परगटु होइ।। (प॰ १३)

लेकिन प्रकट गुरू की कृपा और शिक्षा के साथ होना है। किसी को प्रकट हुआ नहीं आज तक। इसलिये –

अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुर मिलिआ सोई जीउ।। (प॰ ५९६)

वह **'विआपक'** कहते सब से जो बड़ा है, वही गुरू है मेरा, उसने गुरू बनाकर मुझे भेजा है और इसलिये वह परमेश्वर, गुरूनानक देव आप ही हैं, वह स्वयं आप ही बतायेगा।

हउ ढाडी वेकारु कारै लाइआ।। (प॰ १५०)

यह भी कह गये। बस ! जीव को एक ही आदेश है नाम जपना और निष्काम सेवा करनी, यह तो इसके लिए है ठीक। सुमिरन और सेवा दोनों, पहला सोपान है, लेकिन यह तो दोनों निष्काम भी तो इसने ही करने हैं, मन की कामनाओं को हटाकर।

मनु बसि आवै नानका जे पूरण किरपा होए।। (प॰ २९८)

समझ गये ? यह तो –

ना हरि भजिओ न गुर जन सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।
घटि ही भाहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना।।
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई।। (प॰ ६३२)

इसकी कमी लौ तो नहीं लगी। लिव लग गई तो पास हो जायेंगा।

असथिरू मति नही पाई।।
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई (प॰ ६३२)

यदि तुमने मनुष्य का शरीर धारण किया तो रात-दिन हरि के भजन को न बंद करना, सेवा को न बंद करना, तो तेरा जन्म सफल हो जायेगा। वैसा कोई नहीं सफल होता जो आप अन्य बातें करते हो। बड़ी सजगता से बोलना पड़ता है। हमारे सम्मुख मैंने बोलते देखे हैं ये, जो तुम कहते थे, कच्चा पक्का संत होता है। मैंने कहा – यह तो गलत कहते हैं, संत तो पक्का ही होता है, वह तो प्रेमाभक्ति से संत बनता है। और –

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।। (प॰ २९३)

कोई अन्य तो भीतर परमेश्वर दिखा ही नहीं सकता। संत ने परमेश्वर के दर्शन कराने हैं। कच्चा कोई संत होता नहीं, संत तो भाई ! पक्का ही होता है। यह लोगों की आदत पड़ी हुई है। एक उधर था, वह कहता कोई संत नहीं, कोई साधु नहीं था तो भारप्रद है अथवा बाबा पद है। किसी को संत न मानो। मैं और दर्शन सिंह वहां जाते थे। वह कहता - वे दो संत आये हैं, दूसरा कहता- यह न कहना, उनको समझा दो। वहां कालेज बनाना था करनाल। वह कॉलेज में हमारे सेवकों ने पैसे दिये जाकर। उन्होनें उनको बता दिया भई यहां एक संत है, ये धन उनके सेवकों ने दिया है। वह फिर मेरे पास आया। दर्शन सिंह बोलता था और मैंने क्या करना था। वह कहता जब तक संत निक्का सिंह हैं, जब तक उमारउ सिंह है, हमें क्या चिंता है ? वह उमारउ सिंह ने जमीन दी और धन भी दिया और मेरा उनको था कि धन इसके सेवकों ने दिया है बस ! जब तक संत निक्का सिंह हैं हमें चिन्ता नहीं। मैंने कहा - वहां संतों का खण्डन करने आया है, अब मेरे समीप खड़ा होकर कह रहा है अब क्या हो गया ? बस ! धन मिल गया। यह लोग गलत बोलते हैं, सत्य बोलने जायें तो काम बन जाये। सत्य औषधि हो जाये। पाप से निकल जायें, आधे में तो पहुंच जायें। इसलिये, यह तो माया है, यह चिपकी पड़ी है सबको।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू।। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

३

।। सोरठि महला ५।।

सोई कराइ जो तुधु भावै।।
मोहि सिआणप कछू न आवै।।
हम बारिक तउ सरणाई।
प्रभि आपे पैज रखाई।।१।।
मेरा मात पिता हरि राइआ।
करि किरपा प्रतिपालण लागा करीं तेरा कराइआ।।रहाउ।।
जीअ जंत तेरे धारे।। प्रभ डोरी हाथि तुमारे।।
जि करावै सो करणा।। नानक दास तेरी सरणा।।२।। (प॰ ६२६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु! सतिनाम श्री वाहिगुरु!!

सोइं कराइ जो तुधु भावै।।

जीव को यह भ्रम न पड़ जाए, भई मैं कर्ता पुरूष हूँ। यदि इसके करने से कोई कार्य होता है तो यह अपने अनुकूल के करे, प्रतिकुल कभी करे ही न। इसलिये, गुरु साहिब अब ये बताते हैं भई इस शब्द का तात्पर्य यह है भई कर्ता पुरूष, परमेश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं। उत्पत्ति, पालना, लय कर्त्ता, हर्ता कर्ता परमेश्वर है। इसलिये, तुम परमेश्वर की आज्ञा में चलना और हर्ता कर्ता एक परमेश्वर है। अब पढ़ भाई -

सोई कराइ जो तुधु भाचै।।

जो परमेश्वर को अच्छा लगेगा, वही काम करायेगा अन्य किसी की सत्ता

नहीं हैं।।

मोहि सिआणप कछू न आवै।।

श्री गुरू अर्जुन देव जी कहते, मेरी कोई बुद्धिमता नहीं, जो मुझ से परमेश्वर कराता है, मैं वही करता हूँ। मेरी कोई बुद्धिमत्ता नहीं। मैं कर्ता नहीं, कर्ता पुरूष परमेश्वर है। जैसी उसकी आज्ञा होती है, वैसे ही मैं करता हूँ।

हम बारिक तउ सरणाई।।

हे परमेश्वर ! हम बालक हैं। बच्चो को योग्य, अयोग्य का विचार नहीं होता, क्या करना है, क्या नही करना। लेकिन, हे परमेश्वर ! हम आपकी शरणागति में आ गये हैं।

प्रभि आपे पैज रखाई।।

यह समस्त आदर हमारा, एक प्रभु, परमेश्वर, प्रेरक ने रखा है। एक परमेश्वर ही प्रेरक प्रभु है, जिसने हमारा मान रखा है। संसार में तो हमारा बोलबाला परमेश्वर की शरणागति में ही होता है।

मेरा मात पिता हरि राइआ।।

हरि जो परमेश्वर है, 'राइ' प्रकाशक, वही मेरी माता और वही मेरा पिता है।

करि किरपा प्रतिपालण लागा

बड़ी कृपा की, मेरा पालन-पोषण उसने ही किया है, मेरी रक्षा उस परमेश्वर ने ही की है।

करी तेरा कराइआ।। रहाउ।।

हे परमेश्वर ! जो आप करवाते हो, मैं वही काम करता हूँ। मेरी अपनी कोई बुद्धि नहीं, बल नहीं, मैं आप द्वारा कराया ही सारा काम करता हूँ।

जीअ जंत तेरे धारे।।

और ये समस्त बड़े-छोटे जीव, परमेश्वर ने धारण किये हुए हैं।

प्रभु डोरी हाथि तुमारे।।

हे परमेश्वर ! हम सब की खान-पान की डोरी आपके हाथ में है। आप सरकार हो, सब के कार्य आपके (कर्ता) हाथ में हैं।

जि करावे सो करणा।।

जो परमेश्वर करायेगा, कर्मों के अनुसार, वही काम हम करेंगे।

नानक दास तेरी सरणा।।

श्री गुरू अर्जुन देव महाराज कहते, मैं तो, हे परमेश्वर ! आपकी शरणागति हूँ।

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा। (प॰ ५४४)

मैं तो आपके शरणागति हूँ। विभीषण जब शरण में आया, सुग्रीव जैसों ने उसे रोक दिया, मंत्रियों ने, सुग्रीव स्वयं गया राम जी के पास, जी शत्रु का भ्राता आया है, उसके साथ क्या बर्ताव किया जाये ? रामजी ने आज्ञा दी, उसको स्वतन्त्र आने दो, तुम अष्ट मंत्री उसके अरदली बनकर आ जाओ। सुग्रीव कहता, शत्रु के भ्राता के साथ ऐसा बर्ताव होता तो नहीं, सुग्रीव राम जी को कहता रामजी कहते;

सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी (रामायण)

सुग्रीव तुम मंत्री हो, नीति बहुत अच्छी तरह जानते हो। यह, मैं भी जानता हूँ। तुम्हे मेरे धर्म का पता नहीं अभी, क्या है ? जो शरण आयेगा मैं उसका जन्म-मरण काट दूंगा, यह मेरा धर्म है। 'सत् वचन'। जब वह पीछे हो गया वह आया उसने प्रणाम किय। उन्होनें तिलक कर दिया। सब चकित हो गये भई लंका का राजा भी इसी को बना दिया। सागर के इस ओर बैठे हैं, कहते, अभी तो सागर से पार नही हुये। कहते, भई हमने इसको लंका का राजा बना दिया, अब, इसके साथ हम जायेंगे। 'सत् वचन', कहते और लंका जीत ली। उसने कहा, जी लंका आपने जीत ली और यदि कहो सोना मैं अपने पति के मुकुट में लगा दूँ, वह अब पूरा होने ही वाला है। उन्होंने कहा विभीषण को पूछ ले, लंका विभीषण की है, हम

उसके साथ हैं। उसके पास गई, उसने कहा राम ने ही दी है, राम ही की ही है। मैं नहीं बताता उसका समय पूरा हो गया। इसलिये, जीत कर लंका विभीषण को दे दी, तिलक पहले दे दिया था। यह भारत का पहला सिद्धान्त है। किसी की सहायता करके, उसकी वस्तु नहीं लेनी, उसको अर्पण कर देनी है। लेकिन इन्दिरा ने भी पूर्व नीति दिखा ही दी। इन्दिरा ने भी उससे (बंगलादेश) से कुछ लिया नहीं। उसे कहीं पहले की बात याद आ गई, भई - भारत का एक पहला सिद्धान्त है। इसलिये, ईश्वर के शरणागत होने पर, जन्ममरण कट जाता है। यहां छोटे बड़े धर्मों का कोई सिद्धान्त नहीं रहता।

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रत।

अहं त्वा सर्व पावेभ्यो मोक्षयिष्यामि। (गीता)

चिंता मत कर, मेरे पाप कैसे निवृत्त होंगे ? मैं जिम्मेवार हूँ। भगवान् कृष्ण चन्द्र जी कहते, मैं इसका जिम्मेवार हूँ, लेकिन तुं मेरी शरण में आ जा। समस्त धर्मों का, पाप पुण्यों का अभिमान छोड़ दे, बस शरणागत हो जा। इसलिये जो जीव परमेश्वर की शरणागत में जाता है, उसका जन्म मरण कट जाता है। दशम् पातशाह ने भी स्पष्ट कहा है -

बचैगो न किउंहू करे काल चोट।।
लिख जत्र काते पडे मंत्र कोट।।
बिना सरन ताकी नही और ओट।।
जितें शरन जैहै।।
तितियो राख लैहै।। (दशम् ग्रंथ)

कबीर, नामदेव, धन्ना, जयदेव, गणिका सज्जन ठग, कौडा राक्षस आदि जिस क्षण में शरण आये, उसी क्षण में मुक्त हो गये। परमेश्वर की शरण में आकर, जीव का जीवन मरण कट जाता है। शरण पड़ने की कृपा है, तुम्हारे समस्त पापों की निवृत्ति कर देती है और जन्म मरण काट देती है। श्री गुरू अर्जुन देव जी कहते, हे परमेश्वर! मैं आपकी शरण आया हूँ।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू।। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

४

।। सोरठि महला ५।।

गुरि पूरै चरणी लाइआ।।
हरि संगि सहाई पाइआ।।
जह जाइऐ तहा सुहेले।।
करि किरपा प्रभि मेले।।
हरि गुण गावहु सदा सुभाई।
मन चिंदे सगले फल पावहु
जीअ कै संगि सहाई।। १।। रहाउ।।
नाराइण प्राण अधारा।।
हम संत जनां रेनारा।।
पतित पुनीत करि लीने।।
करि किरपा हरि जसु दीने।। २।।
पारब्रहमु करे प्रतिपाला।।
सद जीअ संगि रखवाला।।
हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ।।
बहुड़ि न जोनी पाइऐ।।
जिसु देवै पुरखु बिधाता।।
हरि रसु तिन ही जाता।
जम कंकरू नेड़ि न आइआ।।
सुख नानक सरणी पाइआ।। ४।। (पृष्ठ सं° ६२३)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि।।

भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतखय हरि।। (प॰ १४०६)

आपको पता होगा, इन भट्टों को शराप था और शराप-मोचन (शराप मुक्त) तब होता है यदि पूर्ण महापुरूष की कृपा हो।

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ।। (प॰ १२७६)

गुरू में परमेश्वर बैठा होता है।

गुरू परमेसरू एको जाणु।। जो तिसु भावै सो परवाणु।। (प॰ ८६४)

गुरू ब्रह्मज्ञानी होता है, इसमें कोई शंका नहीं। कच्चा गुरू, गुरू नहीं होता।

परन्तु जब -

गुर महि आपु समोइ। (प॰ १२७६)

गुरू में स्वयं परमेश्वर ने बैठकर शब्द वितरित किया, उनको उपदेश किया परमार्थ का, यथार्थ का और अपनी कृपा दृष्टि के साथ उन भटों का जितना भी शराप था, मोचित कर दिया और उनको ज्ञान प्रदान किया।

भनु मथुरा कछु भेदु नही गुरू अरजुनु परतख हरि।। (प॰ १४०८)

यह जो गुरू अर्जुन देव महाराज हैं, ये प्रत्यक्ष ईश्वर हैं, इसमें कभी तुम शंका न करना। इनकी कृपा से हमें ज्ञान प्राप्त हुआ है। इनकी कृपा से ही हम शराप मुक्त हुये हैं। ये प्रत्यक्ष हरि हैं। हमने वर्ष भर संसार में धक्के खाये, किसी ने हमें भिक्षा नहीं दी। जब इस द्वार पा आये, गुरू अर्जुन देव की शरण में आये तो हम शराप-मुक्त भी हो गये और हमें ज्ञान भी प्राप्त हो गया। लेकिन ज्ञान तो पहले भी था, ज्ञान कोई उत्पत्ति वाली वस्तु तो है नहीं। उत्पत्ति तो वृत्ति होती है, वृत्ति-ज्ञान उत्पन्न होता है और स्वरूप ज्ञान तो कभी उत्पन्न हुआ ही नहीं, वह तो सत् है, निराकार है, व्यापक है, इसकी आत्मा है।

अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ माइआ का मुहताजु भइआ।।

(प॰ ४३५)

यह मन, माया का आश्रित हो गया, किसी के वश की बात नहीं है। माया इसके भीतर ऐसी बैठ गई।

माइया मनहु न वीसरै मांगै दंमां दंम।।

सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि।। (प॰ १४२६)

इसका इतना बड़ा पुण्य कर्म नहीं है, निष्काम कर्म नहीं है। इसलिये इसको ज्ञान प्राप्त नही हुआ, इस पर कृपा नहीं हुई। आत्मा तो पहले ही इसका परमात्मा है, कोई आत्मा-परमात्मा दो नहीं है। आत्मा-परमात्मा शब्द दो हैं, वस्तु तो एक ही है।

एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक।। बिन बूझे तू सदा नापाक।

(प॰ ३७४)

जब तक तुम एक को नहीं पहचानोगे, तब तक तू अपवित्र हो, जब एक को जान लिया, तुम पवित्र हो गये।

एकम एकंकारु निराला।। अमरु अजोनी जाति न जाला।

अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ। खोजत खेजत घटि घटि देखिआ।

(प॰ ८३८)

घटि घटि मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।। (प॰ १४२७)

बताओ तो किस हृदय में साक्षी, चेतन नहीं है ? किस हृदय में वह द्रष्टा नहीं है ? किस हृदय में वह **'दाना बीना साई मेडा'** नहीं है ? वह सब के हृदयों में है। पर्यायवाची शब्द हैं, उसे दाना-बीना कहो, द्रष्टा कह दो, साक्षी कह दो, चेतन कह दो, हरि जू कह दो, हरि कह दो, लेकिन वस्तु तो एक ही है। ईश्वर और जीव दोनों कल्पित हैं और चेतन परमार्थ है, यह नित्य दृष्टि है।

नहि द्रष्टू द्रष्टे विपरिलोपो विद्यते। (ब हदारण्यक उपनिषद्)

द्रष्टा की दृष्टि कभी आज तक लुप्त नहीं हुई और न हो। आपकी वृत्तियां कितनी उठती हैं, आपके स्फरण, संकल्प कितने उठते हैं लेकिन जो नित्य दृष्टि है, वह तो नहीं कभी बदली, वह तो द्रष्टा का नाम है।

मूई सुरति बादु अहंकारू।।
ओह न मूआ जो देखणहार।। (प॰ १५२)

उस द्रष्टा का कभी जन्म-मरण नहीं हुआ। इसका, अभी समस्त हृदयों में, मिथ्या में, पक्का दृढ़ निश्चय नहीं हुआ।

द्रिसटिमान है सगल मिथेना।। (प॰ १०८३)

गुरू साहिब कहते हैं - जो दृश्य है, वह मिथ्या है, लेकिन इस गुरू की पंक्ति पर इसका विश्वास नहीं हुआ। इसने दृश्य को नितांत मिथ्या, झूठ नहीं समझा। अभी यहां इसका मोह है -

जनमि मरै त्रै गुण हितकारू।।
चारे बेद कथहि आकारू।।
तीनि अवस्था कहहि वखियानु।।
तुरी आवसथा सतिगुर ते हरि जानु।। (प॰ १५४)

चौथी अवस्था सत्गुरू ने ही बतानी है, पूर्ण ब्रह्मज्ञानी ने ही प्रकट करनी है। इसलिये भटों के भीतर, ज्ञान गुरू साहिब ने स्वयं रखा, वे ब्रह्मज्ञानी हो गये, वे शराप मुक्त हो गये। वह श्री गुरू अर्जुन देव महाराज ईश्वर रूप हैं, उनका यह शब्द आया है, इसको हुक्मनामा कहते हैं, यह ईश्वरीय वाणी है, यह परमेश्वर की वाणी है, यह धुर की वाणी है। इसमें कोई संशय नहीं लेकिन हमारी श्रद्धा में अन्तर है, हमारी पूर्ण श्रद्धा नहीं है। इसको इतना भी पता नहीं है कि यह तीनों अवस्थाओं को देखता है। गुरू साहिब ने लिखा है -

जो इहु जाणहु सो इह नाहि।।
जानणहारे कउ बलि जाउ।। (प॰ ८८५)

जाननहार, प्रभू परबीन।।
बाहरि भेख न काहू भीन।। (प॰ २६६)

'जो इहु जाणहु'-आपको जानने में त्रिकुटी आती है। अन्तःकरण की वृत्ति एवं विषय। त्रिकुटी आपके देखने में आती है लेकिन त्रिकुटि का साक्षी तो आपके देखने में नहीं आता। वह तो द्रष्टा नित्य है, इसलिये जो भी जागृत (स्थूल) है, जब इसको वृत्ति द्वारा देखोगे तो तुम्हें वह सत्य प्रतीत होगा। जब तुम्हें यह पता लग गया कि वृत्ति को तो वह साक्षात् देखता है, विषय को साक्षात नहीं करता बिना वृत्ति के, और वृत्ति का तो साक्षात कर्ता, 'द्रष्टा' वृत्ति आरूढ़ है। वृत्ति में बैठा और वृत्ति को प्रत्यक्ष करता और वृत्ति द्वारा किसी को प्रत्यक्ष करता है लेकिन त्रिकुटि जितनी है, तीन गुण जितने हैं, ये सब मिथ्या है।

त्रैगु विषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्धन्द्धो नित्य सत्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्। (गीता २/४५)

तुम ने तो आत्मवान होना है और आत्मा का स्वामी होना है कि यहीं खड़ा रहना है ? जब अर्जुन को यह उपदेश भगवान् ने स्वयं दिया, भई इन तीन गुणों में न रहना।

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माअया।।
चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन्हु ही परम पदु पाइआ।। (प॰ ११२३)

उसने तो परम पद प्राप्त कर लिया। चौथा पद, यह आप है। कोई अन्य नहीं चौथा पद। लेकिन यह तीनों (गुणों) के मोह में फंसा पड़ा है।

जनमि मरै त्रै गुण हितकारु।। (प॰ १५४)

जब तक इसका मोह है तीनों गुणों में, यह जन्म-मरण में जायेगा। यह इसकी भूल है। भूल का नाम ही अज्ञान है और अज्ञान कोई वस्तु तो नहीं है। तुमने आज तक अज्ञान देखा तो नहीं कभी ? अज्ञान कल्पित वस्तु है, कल्पित वस्तु कभी सत्य नहीं होती। इसलिये जब यह स्वप्न में जाता है तो इसके मन की दो चीज़े बन जाती हैं, एक विषय और एक दृष्टि। लेकिन साक्षी तो यही है। द्रष्टा तो यह आप ही है और वहां कोई प्रकाश है ? कभी कभी स्वप्न में तुम्हें शेर दिखाई देता है, कभी कोई रूपये आपके आगे आते हैं, कभी कभी कोई प्रसन्नता की बात आती है, तुम उसे किस प्रकाश के साथ देखते हो ? वह जो शेर दिखाई दिया, उसके देखने वाला जो है, उससे भिन्न प्रकाश कौन सा है ? जो भी ब्राह्य प्रकाश

है वह तो कोई भी नहीं, न वहां चन्द्रमा, न नक्षत्र, कोई वस्तु है नहीं, वह तो द्रष्टा, प्रकाश रूप, ज्योति स्वरूप, आप चेतन है।

सभ महि जोति जोति है सोइ।।
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ।।
गुर साखी जोति परगटु होइ।। (प॰ १३)

वहां तुम्हें भ्रम केवल इतना ही होता है, जो आपके पूर्व संस्कार हैं, उन्होने स्वप्न बना दिया। जैसे संस्कार हैं वैसा ही स्वप्न आयेगा। स्वप्न सब का अलग-अलग होता है, एक नहीं होता। कभी यदि स्वप्न स्वतः होता तो सब का एक ही होता। संस्कारों के अनुसार स्वप्न होता है। इसलिये आप अब देखो कि जब आप सुषुप्ति में जाते हो, घोर निंद्रा में, तुम कहते हो - मैं बड़ा सुखपूर्वक सोया कुछ न पता चला। वहां न तो आपकी दस इन्द्रियां थीं, न आपका मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि थे, न अन्तःकरण था। उस सुषुप्ति का तुम्हें प्रत्यक्ष हुआ, लेकिन किस के द्वारा हुआ ? वह अनुभव द्वारा। वहां आपका साक्षात् अनुभव था। तुमने जाग कर कहा, मैं बड़े सुखपूर्वक सोया, कुछ मुझे पता नहीं लगा। वह तो पता, अज्ञान है और सुखरूप आत्मा चेतन है, सत् चित्त आनन्द है। वइ इसका आपा है, इसमें कोई शंका नहीं है, चाहे कोई कुछ कहे। लेकिन कोई ग्रन्थों को झूठा नहीं कर सकता, इलहाम कभी झूठा नहीं हुआ। इसलिये दो चीजें संसार में हैं एक ब्रह्मज्ञानी महांपुरख और एक साक्षी। - गुरू ग्रन्थ साहिब सारा, जहां भी आप पढ़ोगे, वह उसी स्थान से तुम्हें परमार्थ में ले जायेगा। व्यवहार का, पाखण्ड का खण्डन करेगा। सच्चे व्यवहार का खण्डन नहीं करेगा, सच्चा व्यवहार तो करना पड़ेगा। इसलिये वहां सुषुप्ति में सुषुप्ति का अनुभव इसने स्वयं साक्षात् किया। आप इसका वहां अनुभव स्वरूप चेतन है, कोई अन्य वहां इन्द्रिय ज्ञान नहीं है, मन का ज्ञान नहीं है, बुद्धि तो वहां है नहीं। इसलिये उसमें निश्चय हो गया। लेकिन जब यह समाधि हुआ, चाहे हो चाहे विचार द्वारा हो, चाहे धारणा ध्यान द्वारा, साधना द्वारा, योग की समाधि में हो, वहां एक चेतन इसका आपा रह जायेगा, अन्य कुछ नहीं रह जायेगा। उसको निर्विकल्प समाधि कहते हैं। विकल्प नाम है

त्रिकुटि का, वहां कोई त्रिकुटि नहीं। इसलिये -

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि।। (प॰ ८८५)

जिसको तुम जानते हो, यह परमेश्वर नहीं है। यह तो मूर्ति पूजा है। परमेश्वर तो आपने आज तक कभी देखा ही नहीं है। तुम्हारे मन ने ही परमेश्वर देखना था और मन को यह भी नहीं पता कि परमेश्वर कैसा होता है। मन का द्रष्टा, मन के पीछे, मन में आरूढ़ चेतन, वह आप बैठा है और मन को तो पता ही नहीं बेचारे को कि भई क्या होता है ? आपके कान में दर्द है, कभी कान ने आपको यह नहीं कहा कि मुझे दर्द है। आपकी आंख में दर्द है, उसने कभी नहीं कहा कि मुझे दर्द है। हाथ काम नहीं करता, उसने कभी नहीं कहा कि मैं नहीं काम करता, दर्द है। लेकिन कोई है अहंकारी, जो कहता है मेरे कान में दर्द है, मेरी आंख में दर्द है, आज मेरा भई मन स्थिर नहीं है। ये जो हृदय गति रूक जाती है, ये सब विचार से होते हैं, यदि इसको पक्का पता हो कि मैं तो मन का आरूढ़ चेतन हूँ, मैं तो मन का द्रष्टा हूँ, मैं तो मन बुद्धि को साक्षात देखता हूँ। जब इसकी वृत्ति उठती है, वृत्ति को यह साक्षात देखता है। भला विषय को तो वृत्ति द्वारा देखेगा, त्रिकुटि द्वारा लेकिन वृत्ति को किसके साथ देखेगा ? वृत्ति विषयक तो वृत्ति होती नहीं। वह भाई काहन सिंह एक बार शंका की महान कोश की। उसको एक बड़े संत ने कह दिया भई इसके साथ बातकर। मैंने कहा - अरे ! संत राम सिंह जी बताते थे भई वृत्ति विषयक वृत्ति है, कि नहीं ? वह मुझे कहता वहां चल, वहां बतायेंगे। वह जब आये - बलवन्त सिंह कहे अब पूछ। मैंने कहा - न। वह कहता पूछ। वह कहता यह तो संतों के काम होते हैं, हमारे तो नहीं हैं। मैनें कहा अब क्या बात कहोगे ? इसलिये आप यह बताओ आपका जो आत्मा चेतन है, वह परमात्मा है।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
एको अंम्रित बिरखु है फलु अम्रितु होई।। (प॰ ४२१)

अमर हो जायेगा यह। अमर तो यह पहले ही है। चेतन किसी ने अमर करना है ? यह त्रिकुटी कल्पित है, चेतन तो नित्य मुक्त है, अंमृत है, सत्य है।

सत्ता एक है, दो सत्ता तो है नहीं। रामायण में दो सत्तायें लिखी हैं, एक जीव और एक ईश्वर। व्यास ने खण्डन कर दिया। कहता - सत्ता दो कैसे हो जायेगीं ? इसलिए सत्य एक है, वह सत् १ ओंकार है, एका है। वह गुरू साहिब ने स्पष्ट लिख दिया -

एकम एकंकारु निराला।। अमरू अजोनी जाति ना जाला।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।
(प॰ ८३८)

लेकिन यह तो भाई कन्हैया ने देखा था, तुमने तो नहीं देखा। यदि तुम देख लो तो काम न बन जाये ? तो फिर जो आपके सम्मुख आयेगा, परमेश्वर ही आयेगा, चाहे कोई आये। भाई साहिब ने जब से मश्क उठाई, उसने ऐसा तो नहीं देखा कि यह हिन्दू है कि यह मुसलमान है, फलां, अमुक। वह पानी पिलाता रहा। वह जब शिकायत हुई, वह जो रोपड़, रूप नगर जिसको आजकल कहने लग पड़े हैं, वहां का जब पठान पांच सौ आदमी लेकर आया, उसने कहा तो कुछ और ऐसे करूंगा, मैं गुरू गोबिन्द सिंह को लेकर आऊँ, यह तो होता ही है लोगों का। और जब वह घायल हो गया, उसके हाथ न हिलें, उसने कहा पानी। भाई साहिब को कहता, मेरे हाथ तो हिलते नहीं। भाई साहिब ने एक हाथ उसके मुंह को लगाया और एक हाथ के साथ पानी पिलाया और वह था तो शत्रु ही, वह तो शत्रु बनकर आया था लेकिन भाई साहिब को शत्रु दिखाई नही दिया। भाई साहिब तो सब में परमेश्वर देखते थे, सब में गुरू देखते थे, वह तो गुरू गोबिन्द सिंह महाराज को देखता था। उन्होनें कहा था, तुम जल पिलाया करो हमारा रूप समझकर। वह वहां से हिला नहीं। इसलिये जब इसकी वृत्ति यहां जायेगी तो वृत्ति का आश्रय नहीं इसने लेना, यह तो वृत्ति का द्रष्टा है।

मूई सुरति बादु अहंकारु।। (प॰ १५२)

जो व्यर्थ अहंकार था वृत्ति विषयक वह तो नाश होने वाला है।

ओहु न मूआ जो देखणहारु।।२।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।
मरता जाता नदरि न आइआ।।४।। (प॰ १५२)

जन्म-मरण कोई वस्तु तो नहीं है, लेकिन यह भूल गया। जब थोड़ा सा चित्त इसका उदास होता है कहता - मैं मर जाऊं। उसको कहते तुम मरने वाले नहीं, बीस बार तुम मर चुके हो। मैं बैठा था। एक संत को दूसरे संत कहते कि तुमने मरना भी है। वह कहते यह बात तो हम कई बार कर चुके हैं, कहता - यह न मुझे बता। कहता पहली बार हम मरे हैं ? बीस बार हम मरे हैं, बीस बार हमने जन्म लिया है, ऐसी बातें न कर यहां। मैंने कहा - संत को यह बात अच्छी कही है। अब यह तो एक अटल नियम है, जो जन्म लेगा उसने तो अवश्य जाना है। अब इसमें आप क्या करोगे ? यह तो गीता ने कह दिया भई जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। यह तो पक्की बात है लेकिन इसने एक काम करना था, वह सुमिरन के बिना इसकी नाव पार नहीं होगी, यह तुम एक नियम की बात समझो।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (प॰ २६५)

जीव का आधार सुमिरन द्वारा है। सुमिरन लिव में ले जायेगा आपको। जब सुमिरन आपका चल पड़ा अनाहत होता हुआ, धुनि होता हुआ, लिव (लौ) लग जाती है। निष्काम सेवा करनी है, सेवा के बाद तुम्हें सुमिरन प्राप्त हो जायेगा। क्यों? अन्तःकरण शुद्ध, सेवा के बिना किसी का हुआ नहीं, यदि हुआ हो तो बताओ ? इसलिये जब तुम्हें सुमिरन मिल गया, सुमिरन आपका चल पड़ा, उसको वेदांत वाले निदिध्यासन कहते हैं, सजाति परतः कहते हैं। गीता में लिखा है भगवान कृष्ण ने -

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना पर्यपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। (गीता ६/२२)

मैं ज़िम्मेवार हूँ उसके योग क्षेम का, मैं उसकी मुक्ति का जिम्मेवार हूँ लेकिन अनन्य सुमिरन तुम छोड़ना न अर्जुन। इसलिये इसने सुमिरन नहीं

छोड़ना। संसार के समस्त कार्य करने है लेकिन सुमिरन छोड़कर नहीं करने है। सुमिरन भीतर से बंद नहीं करना है कभी। सुमिरन इसकी नांव पार कर देगा। इसलिये अब शब्द बोलो भाई, समय का अभाव है -

सोरठि महला ५।।

सोरठ राग में पंचत पातशाह गुरू अर्जुन देव जी महाराज पांचवें नानक कथन करते हैं -

गुरि पूरै चरणी लाइआ।।

हमें, गुरू राम दास महाराज जी ने शरण में लिया है। उनके पूर्ण गुरू, गुरू रामदास थे। श्री गुरू राम दास जी ने अपनी चरणी (शरण) लिया। चरणी अर्थात् कृपा की, कृतार्थ कर दिया।

हरि संगि सहाई पाइआ।।

वह जो हरि संग था सदैव-

नामु संगी सो मनि न बसाइओ।।
छेडि जाहि वाहू चितु लाइओ।।
सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ।।
अंम्रित नामु तोसा नही पाइओ।। (प॰ ७१५)

इसका तो संगी नाम ही था।

नाम के धारे खंड ब्रहमंड।। (प॰ २८४)

नाम अक्षरों का नाम नहीं है। तुम जब कबीर की वाणी पढ़ोगे, उसको उन्होनें कहां पंडितों ने, तुम्हें अधिकार नहीं 'ओम' का, तुम शुद्र हो, जुहाला। उसने कहा -

ओअंकार आदि मै जाना।।
लिखि अरू मेटै ताहि न माना।।
ओअंकार लखै जउ कोई।।
सोई लखि मेटणा न होई। (प॰ ३४०)

वह कहता - मैंने ओंकार को जान लिया, जो सृष्टि का आदि कारण परमेश्वर है, वह ओम है, इसको मैंने जान लिया है। मैं आपके अक्षरों वाले ओम को नहीं लेता हूँ। यह तो आप प्रतिदिन लिख लेते हो पट्टी पर और मिटा देते हो। कबीर कहता - मैं इसका उपासक तो नहीं हूँ। मैं जो संसार बनता है और लय होता है, मैं इसका उपासक नहीं। मैं तो एक का उपासक हूँ। उसका ओम का, वह है लक्ष्य और जिसको लक्ष्य हो गया, वह मिटेगा नहीं। क्यों ? उसका आपा जो है। अब आप यह बताओ ? ओंकार परमेश्वर का पहला नाम है गुरू ग्रन्थ साहिब में भी और उपनिषदों में भी। उपनिषद् एवं गुरू ग्रन्थ साहिब एक होंगे, निचले लेखक अलग चले जाते हैं, हमने देखा हैं, वे यहां नहीं रहते। वे अलग चले जाते हैं। इसलिये ओम नाम है।

ओअंकार आदि मै जाना। (प ष्ठ ३४०)

जो सृष्टि का आदि कारण है, ओंकार है, वह परमेश्वर है। वह परमेश्वर सब जगह व्यापक नहीं है ? आपकी वृत्ति, बुद्धि की वृत्ति में नहीं बैठा ? आपकी वृत्ति, आपके विचार को देखता नहीं ? वह जानता नही हैं ? वह तो द्रष्टा है, वह तो साक्षी है। यह भी तुम देख लो, साक्षी आज तक शाख के साथ नहीं मिला। जब तुम कोई कल्पना करोगे, वह साक्षी, तब भी देखी जायेगी, भई यह तुम्हारी गलती है, यह ठीक है। तुम स्वयं ही निर्णय कर लोगे भई हां ! वह बात मैंने सोची थी, वह गलत थी, यह ठीक है। वह कौन बताता है भीतर ? साक्षी ही तो बताता है, भई यह तुम्हारी गलती है। वह है साक्षी, वह है चेतन, उसका नाम है 'आत्मा'। उसको अन्तरात्मा कहते हैं। उसको परमेश्वर कहते हैं। इसलिए वह आपका आपा है और कोई आपका आपा नहीं। यह तो सारे तीन गुण हैं। सतो गुण का प्रधान अन्तःकरण है। वृत्तियां तीनों की हैं - रजो, सतो, तमो की और विषय तमो गुण का होता है। यह तो तीनों गुण समाप्त हो गये।

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइया।।
चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिनु ही परम पदु पाइआ।।

(प ष्ठ ११२३)

वह **'परम पद'** परमेश्वर है, वह तुम्हारी आत्मा है। उसको ही परमात्मा कहते हैं, उसी को साक्षी कहते हैं। उसको ही **'दाना बीना साई मैडा'** कहते हैं। दाना बीना सर्वज्ञ है, अध्यक्ष नही है। अध्यक्ष होता है। अनात्म पदार्थ, वह तो सर्वज्ञा है। वह आपके किसी विचार को निर्णय करके सही नहीं बताता जाता ? वह चेतन आपका आपा है, जब तुम्हें उसका लक्ष्य हो गया तो मिटने वाली तो कोई वस्तु न रही, फिर तो तुम्हे किसी विचार की आवश्यकता नही। लेकिन ज्ञान में कोमलता है जैसे कच्चा, कोमल होता है। जब नया कांटा होता है कीकर का कच्चा, उसके साथ कांटा नही निकलता, पक्के के साथ निकलता है। जब इसको स्वरूप का निश्चय हो जाये, उसे ही गुरू साहिब **'नाम का द्रिड'** कहते हैं, वह हो जाये। वह मुझे जो मेरे साथ था मेरी त्रिकुटियों को, मेरी वृत्तियों को देखने वाला, उसे मैंने पा लिया, गुरू अर्जुन देव जी कहते, यह गुरू रामदास की कृपा से मुझे प्राप्त हो गया। अवतार की यह शक्ति होती है। गुरू अवतार कभी भी अवतरित होता है। कलावतार, अंशावतार, कितने गिनोगे तुम वहां? लेकिन गुरू अवतार तो कभी कभी आयेगा। गुरू अवतार यदि कभी कभी न आये तो उसे चारों धामों पर न जाना पड़ता, वह जहां अवतरित होता है, वहां उपदेश करता रहता है। 'शिवनाभि' कहां बैठा है, झंडा वाढ़ी कहां बैठा है, उसके तो सब दृष्टि में है और समस्त कार्य सिद्ध करने हैं। वह गुरू नानक रामदास की कृपा से जो मेरा साक्षी था वृत्ति का, सहायता करने वाला परमेश्वर, सत्ता स्फूर्ति देने वाला, वह मैंने पा लिया, गुरू अर्जुन देव जी कहते।

जह जाईऐ तहा सुहेले।। अब दुख तो तब होता यदि तीन गुणों में हो तो अब तो आत्मा अपना आप प्राप्त हो गया। वह व्यापक है। जहां जायेंगे अब तो 'सुहेले' सुखी हैं। गुरु अरजन देव महाराज जी कहते- जहां जाइऐ तहां सुहेले।।

जहां भी जायेंगे सुखी हैं। क्यों ? सुख स्वरूप तो आपा है इसका। सुख स्वरूप इसका आपा है, यह दुःखी कैसे हो जायेगा ? दुःख तो मन तक आता है, आगे तो दुःख का कोई स्थान नहीं।

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई।।
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई।। (प ष्ठ ६३२)

वह तो दुःख-सुख से परे है, वह तो दुःख-सुख का द्रष्टा है, इसलिये अब तो सुख ही सुख है। जहां जायें वहां 'सुहेले' बड़े सुखी हैं।

करि किरपा प्रभि मेले।।

प्रभु परमेश्वर ने कृपा करके, गुरू रामदास मिलाये और गुरू रामदास ने कृपा करके, परमेश्वर से मिला दिया। यह एक नियम है शास्त्रों का। परमेश्वर की कृपा से पूर्ण गुरू मिलेगा और पूर्ण गुरू की कृपा से परमेश्वर मिलेगा। यह नियम है एक। जो भी ग्रन्थ आप पढ़ोगे, यह आपको आयेगा। कृपा की परमेश्वर ने, गुरू रामदास के चरणों में मिला दिया और गुरू रामदास ने कृपा करके परमेश्वर से मिला दिया। पता लग गया, जो व्यापक चेतन है, मेरे हृदय में मौजूद है, स्थित है, द्रष्टा होकर बैठा है, जन्म-मरण से रहित है। यही जन्म-मरण से रहित नारायण है।

हरि गुण गावहु सदा सुभाई।।

हे श्रेष्ठ पुरूषो ! हे भाइयो ! तुम हरि गुण गाया करो। जब तक आपको परमेश्वर प्राप्त न हो जाये, तब तक नाम न छोड़ना, यह नियम है।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (प ष्ठ २६५)

सुमिरन न तुम छोड़ना यदि आपके हाथ से सुमिरन छूट गया तो तुम्हारी लौ नहीं लगेगी। न एक रस शब्द हो, न धुनि आये, न लिव लगे। लिव के बिना अविनाशी पद की प्राप्ति नहीं होनी। इसलिए भाई ! तुम सब परमेश्वर का स्मरण किया करो नाम जपा करो, नाम ने नामी से मिलाना है, यह गुरू घर का सिद्धान्त है।

नाम संगि जिस का मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (पृष्ठ २८१)

नाम के साथ जिसका मन मिल गया, उसने निराकार को जान लिया। तुम स्वयं अपने भीतर देखो किसी के कहने पर न मानना, तुम्हारा मन नाम के साथ एक हुआ है कभी ? कोई कहो। जब एक हो जायेगा, समाधि लग जायेगी, अन्य समाधि का कोई रूप तो है नहीं। जब तुम्हारा मन, परमेश्वर एक हो गया, नाम के साथ लीन हो गया, आपकी समाधि हो जायेगी और नित्य मोक्ष आपने उस समय हो जाना है, तुम जागृत हो जाओगे।

एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक।।
बिनु बूझे तूँ सदा नापाक।। (पृष्ठ ३७४)

एक वस्तु जब तुम ने जान ली तो पवित्र हो जायेगा, ब्रह्मज्ञान तुम्हें हो जायेगा।

मन चिंदे सगले फल पावहु

और जो भी तुम मन में कहोगे, यह विधि वाक्य है, वही फल प्राप्त करोगे। गुरू साहिब कहते - नाम न छोड़ना आपने, जो भी आप अपने अंदर कोई विचार करोगे, वह तुम्हारा पूर्ण हो जायेगा। वह फल तुम्हें प्राप्त हो जायेगा।

जीअ कै संगि सहाई।।

वह जीव के संग जो परमेश्वर है, वह सहायता करेगा। जीव कोई वस्तु तो नहीं, जीव कोई जानवर का नाम नहीं, कोई पशु का नाम नहीं। यह जीव तो कल्पित है। इसने कल्पना कर ली एक जीव - भई मैं जीव हूँ। उसे कहे कैसे जीव है ? कबीर ने तो निर्णय ही दे दिया 'कबीर बीजक' में। उसने कहा, तू तो पारख है। गुरू साहिब कहते-

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछानिआ।। (पृष्ठ १४४)

और यहां तक कबीर गया, कहते वह तो पारख है, पारख तो साक्षी, चेतन, आत्मा, परमात्मा है। पारख तो चेतन है, जड़ कभी हुआ नहीं। कबीर साहिब कहते, इससे आगे तुम्हें आवश्यकता ही नहीं, बस पारख को पहचान लो। जो समस्त संसार की परीक्षा करता है तुम्हारे अन्दर बैठकर, तुम्हारे विचारों को जानता है, तुम्हारे संकल्पों को जानता है, तुम्हारी वृत्तियों को जानता है, वह पारख है, वह सर्वज्ञ है, वह परमेश्वर है। इसलिये आप भाई, यहां पहुंच जाओ।

रहाउ।।

'रहाउ' रागियों के लिए होता है, यह पंक्ति दो बार पढ़नी है, **'रहाउ'** की पंक्ति। हम सम्प्रदाय में पढ़े हैं, वे कहते थे भई समस्म शब्द का तात्पर्य होता है **'रहाउ'** वाली पंक्ति में। इसलिये रागी इसको दो-चार बार पढ़ते हैं। चलो आगे भाई-

नाराइण प्राण अधारा।।
हम संत जनां रेनारा।।

यह जो 'नाराइण' है कि न चेतन 'आत्मा' सभी मनुष्यों का अधिष्ठान, वह सब के प्राणों का आश्रय है। हमारे प्राण उसके आश्रित हैं। जब यहां तक पहुंच गया तो समस्त संत जन जो, संसार के महापुरूष हैं, मैं उनकी चरणधूलि हो गया। मैं उनकी चरणधूलि, उस दिन से हो गया। मुझे उस संत के पास से, यह वस्तु प्राप्त हुई थी। गुरू रामदास की कृपा से यह वस्तु प्राप्त हुई, गुरू रामदास की कृपा से यह वस्तु प्राप्त हुई। जो मेरे प्राणों का आश्रय था 'चेतन' वह मुझे प्राप्त हो गया। इसलिये मैं उन गुरू रामदास जी के चरणों की धूलि हूँ और जो भी यहां पहुंचे उनकी भी धूलि हूँ।

पतित पुनीत करि लीने।।

इन पतितों को पवित्र करने वाली यही वस्तु है। हम पहले भूल में थे, यह हमें पता नहीं था। परंतु गुरू साहिब लिखते हैं हमें पवित्र कर दिया, गुरू रामदास की कृपा गुरु राम दास की मिहर ने, गुरु राम दास की मिहर ने, कृपा ने हमें महापवित्र कर दिया। आत्मा महा-पवित्र है। आत्मा, आज तक मलिन कभी नहीं हुआ, न उसमें कोई काम, क्रोध, लोभ, मोह पहुंचा। कोई विचार नहीं जो चेतन

में चला जाये। लेकिन आज हम महापवित्र हो गये। हमें यह ज्ञान हो गया। हमारा आपा, चेतन, व्यापक, परिपूर्ण, ईश्वर कह लो, परमेश्वर कह लो, ब्रह्म कह लो, जो आपकी खुशी है - विशेषण दे दो, हम यहां पहुंच गये।

गुर अरजुनु परतख हरि।। (पृष्ठ १४०६)

चलो -

करि किरपा हरि जसु दीने।।

कृपा करके परमेश्वर ने हरि यश दिया। हरि यश अपने आप नहीं मिलता। जब यह भ्रमित हो जाता है, उस समय हरि यश प्राप्त नहीं होता। जब यह अपने स्वरूप में जाग जाता है फिर इसका हरि यश बन्द नहीं होता।

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ।।
जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ।।
समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ। (प॰ ७०२)

इसे हरि यश विस्मृत हो गया। इसने भुला दिया। वह हरि का यश हमें, गुरू रामदास ने कृपा करके दे दिया। अब हम हरि यश गाते हैं हर समय।

पारब्रहमु करे प्रतिपाला।।

पारब्रह्म परमेश्वर हमारा पालन-पोषण करता है। जितने विरोधी थे, प्रिधिया कितना विरोधी था लेकिन प्रतिपालन करने वाला तो परमेश्वर था। यह सुलही (सुमार्ग) पर आया और नारायण ने रख लिया। उसे परमेश्वर कहो, नारायण कहो, पारब्रह्म कहो, वह हमारा प्रतिपालन करता है। अब हम किसी जीव के आश्रित नहीं हैं। हमारा प्रतिपालक, रक्षक, एक परमेश्वर पारब्रह्म है।

सद जीअ संगि रखवाला।।

समस्त संसार का वह रक्षक है, जितने संसार में जीव हैं और हमने भी उसे अपना रक्षक मान लिया।

राखा एकु हमारा सुआमी।। सगल घटा का अंतरजामी।। (प॰ ११३६)

वह हमारा रक्षक है।

हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ।।

अब तो एक ही बात रह गई, रात्रि-दिवस 'कीर्तन करना' अर्थात् सुमिरन करना, यशोगान। अब तो हरि का कीर्तन ही करना है।

बहुडि न जोनी पाईऐ।।

अब जन्म समाप्त हो गये हमारे। जन्मों का कोई काम नहीं रहा, वे संस्कार नही नहीं रहे। अब तो भाई। जन्म-मरण से रहित नारायण हो गये।

जिसु देवै पुरखु विधाता।।

कृपा करके जिसको दाता पुरखु देता है, गुरू रामदास जी द्वारा परमेश्वर ने हमें दिया।

गुरू परमेसरु एको जाणु।।
जो तिसु भावै सो परवाणु।। (पृष्ठ ८६४)

अब तो परमेश्वर एवं गुरू एक हैं। ब्रह्मज्ञानी परमेश्वर होता है।

ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर।।
नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर।।

ब्रहमगिआनी का सगल अकारु।।
ब्रहमगिआनी आपि निरंकारु।।

ब्रहमगिआनी सभ स्रिसटि का करता।।
ब्रहमगिआनी सद जीवै नही मरता।। (पृष्ठ २७३)

उसका जन्म-मरण फिर होता ही नहीं।

हरि रसु तिन ही जाता।।

हरि का रस उसने ही जाना। उसने

उह रसु पीआ इह रसु नही भावा।। (पृष्ठ ३४२)

उसको हरि-रस प्राप्त हो गया। आनन्द प्राप्त हो गया।

जमकंकरु नेड़ि न आइआ।। (पृष्ठ ६२३)

वे यमों के जो 'कंकर' थे, नौकर थे, दूत वे हमारे समीप नहीं आते। यमों के साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं।

दूरि रही उह जन ते बाट।। (पृष्ठ ३६३)

यह स्वतन्त्र मार्ग है, यह तो ज्ञान है, यहां यमों का कोई काम नहीं है।

सुखु नानक सरणी पाइआ।।

हम परमेश्वर के शरण पड़े। उन्होनें हमें गुरू मिला दिया। हमें आत्म सुख प्राप्त हो गया, लेकिन शरण पड़कर हुआ।

सर्वधर्मा-परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। (गीता १८/६६)

मत चिंता करना तुम मोक्ष की, पाप की। लेकिन तुम शरण पड़ जाओ। शरण उस पारब्रह्म परमेश्वर की पड़ जा, अन्य किसी की शरण नहीं। जो लोगों को भ्रम है कि कृष्णा ने 'मैं' कहा, यह नहीं। उसने कहा पारब्रह्म परमेश्वर की शरण पड़ जा। उनका अपना व्यक्तिगत 'मैं' का अर्थ नहीं वहां। व्यक्ति का तो वह सातवें अध्याय में खण्डन करके आया है। वह तो पहले खण्डन करके आया है। उसने तो क्षेतज्ञ कहा है। वह तो त्रयोदशो अध्याय के दूसरे श्लोक में चल गया। वह कहते क्षेतज्ञ जो चेतन है, इसके हृदय में वह ज्ञान 'मैं' हूँ। वह सब में एक है। वह परमेश्वर क्षेतज्ञ एक है, अर्जुन ! वह सब के हृदयों में परमेश्वर है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।। (प ष्ठ १४२७)

वह तो सब के हृदयों में ओंकार बैठा है, परमेश्वर बैठा है, ईश्वर बैठा है। अब हम कृपा पात्र बन गये, हमें आत्म सुख प्राप्त हो गया।

जमकंकरु नेड़ि न आइआ।।
सुखु नानक सरणी पाइआ।। (प ष्ठ ६२३)

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू।। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

५

सलोकु।।

फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ।।
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ।। १।।

असटपदी।।

जाचक जनु जाचै प्रभु दानु।। करि किरपा देवहु हरि नामु।।
साध जना की मागउ धूरि। पारब्रहम मेरी सरधा पूरि।।
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ।। सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ।।
चरण कमल सिउ लागै प्रीति।। भगति करउ प्रभ की नित नीति।।
एक ओट एको आधारू।। नानकु मागै नामु प्रभ सारू।। १।।
प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ।। हरि रसु पावै बिरला कोइ।
जिन चाखिआ से जन त्रिपताने। पूरन पुरख नही डोलाने।
सुभुर भरे प्रेम रस रंगि।। उपजै चाउ साध के संगि।
परे सरनि आन सभ तिआगि।। अंतरि प्रगासु अनदिनु लिव लागि।
बडभागी जपिआ प्रभु सोइ।। नानक नामि रते सुखु होइ।। २।।
सेवक की मनसा पूरी भई।। सतिगुर ते निरमल मति लई।।
जन कउ प्रभु होइओ दइआलु।। सेवकु कीनो सदा निहालु।
बंधन काटि मुकति जनु भइआ।। जनम मरन दुखु भ्रमु गइआ।
इछ पुनी सरधा सभ पूरी।। रवि रहिआ सद संगि हजूरी।
जिसका सा तिनि लीआ मिलाइ।। नानक भगती नामि समाइ।। ३।।
सो किउ बिसरै जि धाल न भानै।। सो किउ बिसरै जि कीआ जानै।

सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ।। सो किउ बिसरे जि जीवन जीआ।

सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै।। गुर प्रसादि को बिरला लाखै।।

सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै।। जनम जनम का टूटा गाढ़ै।
गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ।। प्रभु अपना नानक जन धिआइआ।। ४।।
साजन संत करहु इहु कामु।। आन तिआगि जपहु हरि नामु।
सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु।। आपि जपहु अवरह नामु जपावहु।।
भगति भाइ तरीऐ संसारु।। बिनु भगती तनु होसी छारु।।
सरब कलिआण सूख निधि नामु।। बूडत जात पाए बिस्रामु।
सगल दूख का होवत नासु।। नानक नामु जपहु गुनतासु।।। ५।।
उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ।। मन तन अंतरि इही सुआउ।।
नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ।। मनु बिगसै साध चरन धोइ।।
भगत जना कै मनि तनि रंगु।। बिरला कोऊ पावै संगु।।
एक बसतु दीजै करि मइआ।। गुर प्रसादि नामु जपि लइआ।।
ता की उपमा कही न जाइ।। नानक रहिआ सरब समाइ।। ६।।
प्रभ बखसंद दीन दइआल।। भगति वछल सदा किरपाल।।
अनाथ नाथ गोबिन्द गुपाल।। सरब घटा करत प्रतिपाल।।
आदि पुरख कारण करतार।। भगत जना के प्रान अधार।।
जो जो जपै सु होइ पुनीत।। भगति भाइ लावै मन हीत।।
हम निरगुनीआर नीच अजान।। नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान।।७।।
सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए।। एक निमख हरि के गुन गाए।।
अनिक राज भोग बडिआईं।। हरि के नाम की कथा मनि भाई।।

बहु भोजन कापर संगीत।। रसना जपती हरि हरि नीत।।
भली सु करनी सोभा धनवंत।। हिरदै बसे पूरन गुर मंत।।
साधसंगि प्रभ देहु निवास।। सरब सूख नानक परगास।। ८।। २०।।

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!

फिर क्या मांग मांगे ? भक्ति कैसे करें ? यह भक्ति प्रधान अष्टपदी है। चल भाई -

सलोक।।

फिरत फिरत प्रभ आइआ

हे परमेश्वर परिपूर्ण ! मैं धूमता धूमता, पंचम पातशाह कहते - बहुत स्थानों पर फिरकर आया, लेकिन कहीं भिक्षा नहीं मिली।

परिआ तउ सरनाइ।।

अब मैं हारकर आपकी शरण आया हूँ। गीता की समाप्ति यहां आकर हुई है और रामायण में भी यह प्रसंग आया है और गुरू साहिब ने लिखा है -

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा। (प॰ ५४४)

शरणागति भक्ति सब से प्रथम और सब से अंतिम है। जिस समय यह सारी अपनी शक्ति, बल सब त्याग दे अहंकार, उस समय यह अन्य की शरण जाता है कि मैं तुम्हारी, शरण हूँ और पांचवें पातशाह कहते - मैं घूमता घूमता जन्मों में, आपकी शरण आया हूँ, हे परिपूर्ण परमेश्वर!

परिआ तउ सरनाइ।

मैं आपकी शरण पड़ा हूँ।

सरनि परे की राखु दइआला।।
नानक तुमरे बाल गुपाला।। (पष्ठ २६०)

शरण पड़े की परमेश्वर अवश्य रक्षा करता है क्योंकि उसका शेष संकल्प तो कोई है नहीं। जब सब संकल्प समाप्त हो जाते हैं, उसकी (अहंकार की) शक्ति लग चुकती है, फिर वह शरण आता है। मैं अब आपकी शरण आया हूँ।

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज
अहंत्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। (गीता १८/६६)

जब उसने (अर्जुन ने) बहुत अधिक कहा, मैं जी कर नही सकता, मुझे शान्ति नहीं है। उसने कहा, तुम समस्त साधनों को छोड़कर मेरी शरण आ जा। समस्त धर्मों को त्यागकर एक 'शरणागति' बड़ा धर्म है, उसको ले ले और मैं तुम्हारे समस्त पापों का नाश करूंगा, तुम पापों की कुछ चिंता मत करो, कि मेरे पाप नाश नहीं होंगे। मोक्ष के सम्बन्धों में मत सोच। तेरे समस्त कार्य ठीक हो जायेंगे, तुम एक शरणागति हो जा।

नानक की प्रभ बेनती

श्री गुरू अर्जुन देव जी कहते - हे महाराज ! मेरी एक आप के पास प्रार्थना है, हे परमेश्वर!

अपनी भगती लाइ।।

कृपा करके मुझे अपनी भक्ति में लगा लो। अन्य कोई मेरी संसार की मांग नहीं है। मुझे अपनी भक्ति दे दो। भक्ति से संत बन जाता है। संत की कृपा से मोक्ष हो जाती है, परमेश्वर प्राप्त हो जाता है।

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है।।
(प ष्ठ १३८८)

प्रेमाभक्ति में जब इसका मन जुड़ गया तो फिर इसे प्रेम प्राप्त हो गया। प्रेम, जब इसको प्राप्त हो जाये-

जिन प्रेमु तिन ही प्रभु पायो

यह दसवें पातशाह का वचन है।

साचु कहौं सुन लेहु सभैं जिन प्रेमु कीओ तिन ही प्रभु पायौ।

(अकाल उस्तति)

सारी संगत का एक ही प्रश्न था, जी हमें आप परमेश्वर की प्राप्ति की, कृपा करके बात बताओ। वे कहते मैं सत्य कहता हूँ, सब सुन लो। जिसने प्रेम किया वह परमेश्वर को प्राप्त हो गया। चाहे वह सूरदास है, चाहे वह गणिका है, चाहे वह अजामल है। जो भी संसार में कबीर, धन्ना कोई भी है। जिसने भी प्रेम किया, उन सबका प्रेमाभक्ति द्वारा उद्धार हो गया, वे संत बन गये। जिसके अंदर प्रेमाभक्ति आ जाये, जिसकी वृत्ति प्रेम में भीगी, परमेश्वर के आकार में लौ लग जाये, उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है, वह संत बन जाता है।

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।। (प ष्ठ २६३)

और उसकी संगति से परमेश्वर अन्दर दिखाई दे जाता है, वह जो सर्व व्यापक है, तुम्हारे हृदय में भी तो साक्षी रूप, पारख रूप बैठा है। इस समय व्यापक तो है नहीं, जब तुम्हारी वृत्ति व्यापक होगी, कोई क्रिया तुम नहीं कर सकोगे, तब तो समाधि होगी। लेकिन वह साक्षी तो हर समय ही तुझे उपस्थित है और हाज़िर-नाज़िर है। वह तुम्हारी समस्त वृत्तियों को, समस्त विचारों को, तुम्हारी वासनाओं, कामनाओं को हर समय देखता है द्रष्टा होकर। वह जन्म-मरण वाली वस्तु नहीं है।

मूई सुरति बादु अहंकारू।। ओहु न मूआ जो देखणहारु।। (प॰ १५२)

वह देखने वाला जन्म-मरण वाला नहीं है। जो देखने में आता है, वह जन्म-मरण वाला है।

द्रिसटिमान है सगल मिथेना।। (प ष्ठ १०८३)

जो आपके सम्मुख कोई विचार आयेगा अथवा किसी विषयक वह बनेगा अथवा किसी पदार्थ विषयक विचार होगा, वह सब मिथ्या हैं, बदलने वाले हैं, झूठे हैं, परिणामी हैं। लेकिन जो देखने वाला द्रष्टा है, वह तो नहीं जन्म-मरण में कभी आया। वह शुद्ध है, व्यापक है, परिपूर्ण है, पारख है।

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।। (प ष्ठ १४४)

पारख तो वह स्वयं ही होता है। पारख की पदवी अन्य तो किसी को दी नहीं। कबीर ने तो इसको 'कबीर बीजक' में बहुत अधिक लिखा है। उसने इससे आगे लिखा भी कुछ नहीं। वह कहता पारख कहो तुम, अपने आप को। तुम हर समय अपनी वृत्तियों को देखते हो, परखते हो, जो तुम्हारी वृत्ति में भरा पड़ा है, वह देखते हो। आगे उस वृत्ति द्वारा विषय को देखते हो। सच बोलो आपने देखा तो नहीं वह पारख है, वह साक्षी है। तुम तो उस समय होंगे व्यापक, जब तुम्हारी वृत्ति ब्रह्माकार होगी अथवा लौ लगी होगी, उस समय वहां अविनाशी पद ही होगा, अन्य कोई वस्तु नहीं होगी, वह तो समाधि होगी। इसलिए भाई ! वह जो परमेश्वर है, वह सर्वव्यापक है, परिपूर्ण है, द्रष्टा है, साक्षी है। इसका निजरुप कहे 'आपा' है, 'सोइ' है। ग्रन्थों में लिखा है 'सोइ'। कहता 'सोइ' क्या ? कहते सोइ स्वरूप। पहले उसको 'सोइ' लिखा है। 'सोइ' की समस्त समाप्त कर उसने 'सोइ' लिखा है। वह दूसरे कहते 'सोइ' क्या ? वह कहते सोइ स्वरूप, अपना स्वरूप अर्थात् स्वस्वरूप।

तदा द्रष्टुः स्वरूप अवस्थानम् (उपनिषद्)

यह योगदर्शन में पतंजलि लिखते हैं। कहते - तुम ने तो अपने स्वरूप में स्थित होना है। तेरा स्वरूप द्रष्टा है, तुमने वहां इस्थित होना है। तुझे आगे पीछे की कोई बात नहीं। न तुम संसार में जाओ, न तुम व्यापक में जाओ। तुम 'सोइ' (स्वस्वरूप) में स्थित हो जा अपने में, सब कुड स्वयं ही हो जायेगा। इसलिये हे परमेश्वर! कृपा करके मुझे प्रेमा भक्ति दे दो, जिसके परिणामस्वरूप मेरी मुक्ति हो जाये।

असटपदी।।

आठ पदों की पदी आयेगी। अष्टपदी।

जाचक जनु जाचै प्रभु दानु।।

याचक होकर जीव, दान मांगता है प्रभु से, परमेश्वर से।

करि किरपा देवहु हरि नामु।।

परमेश्वर पूछते क्या दूँ ? कहता जी कृपा करके नाम दे दो, अन्य कोई वस्तु नहीं देनी। क्यों ? नाम से नाभी प्राप्त हो जायेगा।

नाम संगि जिसका मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (पृष्ठ २८१)
नामु संगी सो मन न बसाइओ।।
छोड जाहि वाहू चितु लाइओ।।

नाम मैं मांगता हूँ जिज्ञासु होकर, गुरू अर्जुन देव कहते - कृपा करके मुझे नाम-दान दे दो।

साध जना की मागउ धूरि।।

मैं उन संतों की, जो नाम वाले संत हैं, जिन्हें नाम प्राप्त हो गया, मैं उनके चरणों की धूलि मांगता हूँ।

पारब्रहम मेरी सरधा पूरि।।

हे परमेश्वर परिपूर्ण ! यह मेरी श्रद्धा पूर्ण कर दो। यह एक मेरी प्रार्थना है, मुझे नाम दान दे दो।

सदा सदा प्रभ के गुन गावउो।।

फिर जो नाम लोगे।

सदा सदा प्रभ के गुन गावउो।।

उस परमेश्वर के गुरू गाते रहना। उसको विस्मृत करके, अन्य संसार के गुणु न गाना।

सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउो।।

हे परमेश्वर, श्वास श्वास मैं तुम्हें ही जपूँगा, तेरा ही ध्यान करूंगा, तेरा ही नाम जपूंगा।

चरन कमल सिउ लागै प्रीति।।

चरण-कमल के साथ जब मेरी प्रीति लग गई, आपके चरणों से।

भगति करउो प्रभ की नित नीति।।

नित्य, सदैव ही हे प्रभु ! आपकी भक्ति करूंगा। हे भाई ! सदैव उस प्रभु की भक्ति के बिना अन्य कोई काम न करना।

एक ओट एको आधारु।।

वह मेरा आसरा है, वही परमेश्वर मेरा आधार है। अन्य मेरा कोई संसार में आसरा, उसके बिना नहीं है।

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ। (प ष्ठ ६३४)

अंत में तेरे बिना, परमेश्वर के, कोई काम नहीं आता है। तुम्हें पता है? आजकल लोग, मैं भी देखता हूँ, तुम भी देखते हो, वे अपने अपने जो जो उनके गुरू हैं, इष्ट हैं, चाहे वे पत्थर हैं, चाहे वे मनुष्य हैं, चाहे वे कुछ भी हैं, चाहे देवते हैं, उनकी रक्षा करेंगे। तो गुरू साहिब कहते हैं - एक परमेश्वर जो एका है, उस परमेश्वर का आश्रय लेना है।

एकम एकंकारु निराला।। अमरु अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रुपु न रेखिआ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।

(प ष्ठ ८३८)

वह समस्त, चार प्रकार के जीवों के हृदय में बैठा है, चींटी से लेकर हाथी तक, सबके हृदय में वह बैठा है।

साहिबु मेरा एको है।। एको है भाई एको है।। (पृष्ठ ३५०)

साहिब मेरा एक है, स्वामी मेरा एक है।

नानकु मागै नामु प्रभ सारु।।

मैं संसार में जो सार-वस्तु है, गुरू साहिब कहते, मैं वह मांगता हूँ। एक नाम मांगता हूँ।

प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ।।

यदि प्रभु की कृपा दृष्टि हो जाये तो समस्त सुख इसको प्राप्त हो जाते हैं, जीव को।

हरि रसु पावै बिरला कोइ।।

लेकिन हरि का रस तो कोई विरला ही प्राप्त करेगा।

उह रसु पीआ इह रसु नहीं भावा।। (प ष्ठ ३४२)

जिनको वह रस प्राप्त हो गया, उनको संसार का रस बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। कबीर को, नामदेव को, धन्ना को, किसी भक्त को यह रस अच्छा नही लगा संसार का। लेकिन जिनको एक बार हरि का रस प्राप्त हो गया, परमेश्वर का -

जिन चाखिआ सो जन त्रिपताने।।

जिन्होंने ने उसका रसपान किया - परमेश्वर के आनन्द को, वे तृप्त हो गये, वे जन्म-मरण से छूट गये, ि कृत कृित हो गये, जीवन मुक्त हो गये।

पूरन पुरख नही डोलाने।।

वही पूर्ण पुरूष हुये हैं, वे फिर विचलित नहीं हुये कभी। कबीर विचलित हुआ कभी ? गंगा नदी में फैंका, लकड़ियों पर रखकर जलाया, हाथी को सुरापान कराकर छोड़ा, यह कभी विचलित हुआ ? बिल्कुल विचलित नहीं हुआ। नामदेव कभी विचलित हुआ ? जो राम जपता था। माँ ने भी कहा, माँ का स्नेह अधिक होता है। कहती - यदि तू बच जाये, राम-राम छोड़ कर खुदा-खुदा कह ले। कहता - तु मेरी माँ नही, मैं तुम्हारा पुत्र नहीं। झगड़ा समाप्त हुआ। तू चली जाओ। इसलिए तू भाई ! वहां से विचलित न होना कभी, उस परमेश्वर के नाम से।

सुभर भरे प्रेम रस रंगि।।

'सुभर' अर्थात् 'लबालब' प्रेम के साथ अब हमारा आनन्द के साथ मन भर गया है। पहले नाम होता है ग्रन्थों में, तुम देखोगे जो भी गुरू देगा, पहले नाम देगा, भई इसका जाप करो। प्रेम नहीं पहले होता, प्रेम से पहले अभी संसार होता है, प्रेम तो तब होता है जब संसार समाप्त हो जाये, पहले तो प्रेम नहीं आता होता। लेकिन नाम भी कृपा है, प्रेम भी कृपा है, मोक्ष भी कृपा है और ये समस्त-

सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई।। (प ष्ठ ८२२)

यह समस्त कृपा की वस्तु भी हैं। यह कई गुरू कृपा किया करता है। कौन सा गुरू ? जो ब्रह्मज्ञानी पूर्ण गुरू है, वह कृपा किया करता है।

अपजै चाउ साध कै संगि।।

अब जो साधु संग मैंने किया था, गुरू राम दास का, अब मेरे मन में बड़ा ही उत्साह, चाव पैदा हुआ, परमेश्वर को मिलने का।

परे सरनि आन सभ तिआगि।।

जब 'आन' अन्य सारा त्यागकर शरण पड़ गये।

अंतर प्रगास अनदिन लिव लागि।।

वह **'प्रगास'** भीतर हो गया। रात्रि दिवस लौ लग गई और अविनाशी पद की प्राप्ति हो जाती है। यह गुरूवाणी ठीक बताती है और बुद्ध को जब उस का सारा बल, जब बिल्कुल उसकी हड्डियां निकल आई, छः गुरू धारण किये बुद्ध ने। जितने साधन कहे उसने किये लेकिन न हुआ प्राप्त। उसने कहा मैंने तो अब कर दिया, अब बताओ? वह कहता अब अन्य गुरू के पास जा, मेरा तो यहां तक वश चलता है। जब उसको तीसरे गुरू ने बताया भई ! तीन मास तुम इस प्रकार साधना करना। उसको कहता, अब बता ? कहता भई ! मैं इससे आगे पहुंचा नहीं। गौतम को कहता - मैं नहीं पहुंचा, अन्य से पूछ। उस दिन जब वह निरंजना नदी को पार करने लगा तो उसका इतना शरीर निर्बल हो गया। अन्ततः वह शाखा पकड़कर, पीपल की जड़ों में बह गया। आगे नहीं उससे चला गया। उस समय उसका सब कुछ समाप्त हो गया और एक स्त्री खीर लाई उसके आगे रख दी, उन्होनें खाई, उनमें कुछ शक्ति आ गई उठने की। जब वे खीर खाने लगे, जो बुद्ध के पांच शिष्य थे साथ, वे छोड़कर चले गये। उन्होंने कहा - गौतम भ्रष्ट हो गया, यह तो शुद्रा की खीर खा गया। यह तो गया आया। भविष्य में इसके साथ नहीं रहना, इसके दर्शन नहीं करने। यह तो भ्रष्ट हो गया। वे चले गये। उस समय बुद्ध के हृदय में एक वृत्ति उठी, भई कोई वस्तु सत्य नहीं, सब मिथ्या है, सब उसने दिल से त्याग दी।

परे सरनि आन सभ तिआगि।।

यह एक परमेश्वर की शरण, सब कुछ त्याग कर पड़ेगा तो क्या होगा ?

अंतरि प्रगास

इसके भीतर ज्ञान की ज्योति पैदा हो जायेगी, ज्ञान रूपी दीपक प्रकट हो जायेगा।

अनदिन लिव लागि।।

रात्रि-दिवस इस की वृति जुड़ जायेगी। उसको निर्वाण पद की प्राप्ति हो गई बुद्ध को, उस क्षण में। उसने कहा - भई अब जिसकी खुशी है, आ जाओ, मुझे वह वस्तु प्राप्त हो गई है। पहले नहीं थे वे मानते, वे कहते थे, मुझे नहीं वह वस्तु प्राप्त हुई, बड़े सच्चे महापुरूष थे और वे भी चले गये शिष्य। बुद्ध उनके पीछे गये। उनका नियम था, ले भई वह आ रहा है, माथा नही टेकना, इसके चरण स्पर्श नहीं करना, वह तो शुद्रा की खीर खा गया। जब बुद्ध उनके पास गये, वे चरणों पर गिर पड़े। उसने कहा कि तुम ऐसी बातें करते थे, यह की थी तुम सलाह, ऐसे किया था और अब क्यों चरणों में गिर पड़े ? कहते - हमें नहीं पता, कोई शक्ति है, जिसने पकड़ कर चरणों पर गिरा दिया। वे कहते - तुम्हारा भला होने वाला है। मुझे वह वस्तु प्राप्त हो गई है, मैं भी तुम्हारे पीछे इसीलिये आया हूँ, भई तुम मेरी सेवा बहुत की थी। इसलिये मैं तुम्हारे पीछे आया हूँ, फिर उनको ज्ञान-बोध कराया, वे भी पाँचों ज्ञानवान हो गये। इसलिये जब यह सब कुछ भीतर से त्याग देगा, एक चेतन परमेश्वर पूर्ण की शरण पड़ जायेगा, इसको सब कुछ स्वयं ही प्राप्त हो जायेगा। बुद्ध ने पहला अक्षर ही यही निकाला, भई जाति कोई नहीं। जाति तो कल्पित पदार्थ है, झूठ है, जाति तो गलत है। अब एक हिन्दू मुसलमान हो जाये, उसमें मुसलमान जाति आ जायेगी और हिन्दू जाति चली जायेगी और यदि वह सिक्ख हो जाये, उसमें सिक्ख जाति आ जायेगी और हिन्दू जाति चली जायेगी। कहते - यह तो गलत है, यह तो लोक निर्मित है, जाति तो बनाई गई है, झूठ है। बुद्ध जाति नहीं मानते। क्यों नहीं मानते ? उसने जब उसकी खीर खा ली, उसके जो शिष्य थे, विमुख इसी बात से हुए, भई शुद्रा की खीर खा ली। उसने कहा जाति समाप्त करो, यह भी खराब है। फिर वह जाति, बुद्ध नही मानेगा कभी भी। इसलिये उसने जब अंदर से सब देख लिया, वह कहता

सब झूठ है। कोई मुझे किसी वस्तु की प्राप्ति इन के साथ नहीं हुई। जब उसने अंदर से त्याग दिया, उसके अंदर ब्रह्मकार वृत्ति पैदा हो गई - लौ। उसे 'निरवाण पद' प्राप्त हो गया, उसका नाम बुद्ध पड़ गया। बुद्ध नाम है बोधन वाला, ब्रह्मज्ञानी।

बडभागी जपिआ प्रभु सोइ।।

कहते 'सो' जो परमेश्वर है, वह बड़े भाग्य वालों ने ही जपा है।

नानक नामि रते सुखु होइ।।

यदि नाम के साथ एक रस हो जाये तुम्हारा मन, तुझे आत्म सुख प्राप्त हो जाये। बात कुछ भी नहीं है। लेकिन तुम देखते हो अपने मन को, ऐसे बातें तुम बीस करते हो, लेकिन तुम अपने मन को देखते नहीं ? जब तुम्हारा मन नाम के साथ एक हो जायेगा, मन नहीं रहेगा, मन तो लीन हो गया, फिर तो वहां परमेश्वर ही रहेगा। इसी नाम तो समाधि है, अन्य क्या है ? अब तुम कभी तुम्हारा मन, नाम के साथ एक हुआ है ? नाम-नामी का तो अभेद है, सच्चे दिल से बताना ? मन तो इसका होता है भागता इधर चक्कर लगाता अन्य स्थानों में और यह अपनी ओर से सुमिरन करता होता है, समझ गये ? यहां एक आया था हमारे पास। वह इस प्रकार यहां बैठे ब्रह्ममुहूर्त में, दो घंटे, वह कहता समाधि लग जाती है। वही स्कूटर उठा कर ले गया ससुरा, ऐसी समाधि लगी कि स्कूटर ही ले गया उठाकर। ऐसी लोगी की समाधियां हैं ससुरों की। ये कहते कुछ और हैं और करते कुछ और हैं, सच तो यह बोलते नहीं है और भारत का तो स्वभाव ही है सत्य न बोलना और इसलिये तुम बताओ ? तुम्हारा मन कभी एक हुआ है नाम के साथ। जब एक हो जायेगा, लीन हो जायेगा मन, फिर मन नहीं रहेगा, फिर तो नाम और नामी तुम्हें परमेश्वर प्राप्त हो जाना है। बात तो इतनी है। लेकिन यह तो बिना मन के लगने से मन इधर जाता होता है। यह उधर भजन कर रहा होता है। कभी कभी आप देखना, यह जपु जी साहिब की पौड़िआं (श्लोक) सात-आठ पढ़ जाता है और मन का पता ही नहीं कहां होता है। वह तो रमा होता है, पढ़ता जाता है, इसलिये रटा हुआ होता है। मन को जोड़ दो नाम के साथ, उसी समय परमात्मा प्राप्त हो जायेगा। बस! फिर तुम्हें परमेश्वर प्राप्त हो जायेगा, चलिए-

सेवक की मनसा पूरी भई।।

कहते - यहां जाकर भाई ! सेवक की समस्त मन की इच्छायें पूरी हो जायेंगी।

सतिगुर ते निरमल मति लई।।

यह शुद्ध मति, भाई ! पूर्ण गुरू रामदास महाराज से ली है मैं।

जन कउ प्रभु होइउ दइआलु।।

जब अपने भक्तों पर प्रभु दयाल हुआ, अपने सेवकों पर -

सेवक कीनो सदा निहालु।।

सदा के लिये निहाल (गद् गद्) कर दिया। वह घासी कर दिया था न, छठे पातशाह के पास आया था जो। ये जाते थे कश्मीर को और जहांगीर लेकर गया था छठे पातशाह को बड़ी प्रार्थना करके। उसका अभिप्राय था मेरे से पहले कोई गलती हो गई है, क्षमा मिल जायेगी। जब वहां आता था कोई सिख, वह पूछता था, सच्चे पातशाह का शमियाना कौन सा है ? लोग बताते कि भई वह है। आगे होता था गुरू साहिब का शमियाना, जहांगीर का पीछे होता था। काज़ियों ने, उनके मुल्ला जो थे बड़े उन्होंने सलाह की कि अपने राजा का, बादशाह का बड़ा भारी अनादर है। यह आजकल भारत का बादशाह है, हज़रत कहते हैं इसको। लेकिन यह जब कोई साधारण सा सिक्ख पूछता है कि सच्चे पातशाह का शमियाना कौन सा है ? कहते हमें कहना पड़ता है भई वह है। यह तो अपमान है। उन्होंने एकमत कर लिया भई प्रातः पहले जो भी आकर पूछे सच्चे पातशाह का शमियाना तो संतरी जहांगीर के तंबू की ओर संकेत करे। वह जो घासी था, उसने घास खोदा, पहले दिन भोजन नहीं किया, भई ये पैसे मैं भेंट करूंगा गुरू को। वह आया, उसने कहा - जी सच्चे पातशाह का शमियाना कौन सा है ? उसने जहांगीर के तंबू की ओर संकेत कर दिया, वह है। वह चला गया और जहांगीर बैठा था। उसने

जाकर मत्था टेका, परिक्रमा कीं, पैसे आगे रख दिये, दण्डवत् की और हाथ बद्ध खड़ा हो गया। उसने कहा - मांग क्या मांगता है ? उसने कहा जी मुक्ति मांगता हूँ, मुक्त होना है। वे जो साथ बैठे थे अहलकार उन्होंने कहा - ओए! तुम्हें एक कुँआ दे देते हैं, घास खोदने से छूट जायेगा। वह कहता - न जी। दूसरे ने कहा- ओये। गांव दे देता हू तुम्हें सारा। कहता न जी। तीसरे ने कहा - अरे तुम्हें नाज़िम बना देते हैं। वह कहता - मुझे तीनों की आवश्यकता नहीं, मैने तो मुक्ति लेनी है। वह जहांगीर कहता - वह है शमियाना, मुक्ति वाले का तंबू वह है। मैं तो संसारी राजा हूँ। वह है सच्चे पातशाह का तंबू। उसने पैसे लिये उठा, सीधा चल पड़ा। पीछे जहांगीर भी चल पड़ा। वह जब वहां गया, वही सब कार्य उसने वहां भी किया। वह हाथ बांधकर खड़ा हो गया, दण्डवत् वन्दना सब कुछ करके। छठे पातशाह कहते - सिक्ख क्या मांगता है ? कहता जी मुक्ति। वे कहते मेरी आंख के साथ आंख मिला। उसने जब मिलाई वह कहता- निहाल !! निहाल !! निहाल !!! जहांगीर हैरान हो गया। कहता जी एक बात मैं प्रार्थना कर सकता हूँ ? कहते हाँ कर सकते हो। कहता जी हिन्दुओं की मुक्ति बड़ी सस्ती है। इसने से पैसों में आ जाती है। वे कहते - तुम क्या देते थे ? कहता हम तो बहुत कुछ देते थे, इतने कुछ नहीं लिया। कहता तीनों लोकों की आवश्यकता नहीं। फिर कहते, उसका मुक्ति का अधिकार नहीं है? जिसको तीनों लोकों की आवश्यकता नहीं उसकी तो परमेश्वर के पास जाने की इच्छा रह गई और वे अहलकार चकित रह गये। तो इसलिये भाई ! परमेश्वर की सेवा यहां पूर्ण होगी। वह गद् गद् हो जायेगा, वह मुक्त हो जायेगा।

सेवकु कीनो सदा निहालु।।

सदा के लिए उसका जन्म-मरण काट दिया। 'हाल' नाम है दुःखों का और 'निहाल' नाम है दुःखों से रहित। जन्म-मरण से रहित कर देता है परमेश्वर।

बंधन काटि मुकति जनु भइआ।।

उसके समस्त बंधन काट दिये तो वह मुक्त हो गया है। इसके कितने बंधन हैं मोह के, जो यह डाले बैठा है।

जनम मरन दूखु भ्रमु गाइआ।।

जन्म और मरण, दुःख और भ्रम सारा नष्ट हो गया। अर्थ तो गुरू जी आप ही करते जाते हैं।

इछ पुनी सरधा सभ पूरी।।

इसकी इच्छा बिल्कुल यह पूर्ण हो गई और श्रद्धा भी पूर्ण हो गई।

रवि रहिआ सद संगि हजूरी।।

कहते - अब यह पता लग गया कि जो सब में रमा हुआ व्यापक है वह सदा ही मेरे साथ है, सदैव उपस्थित है। यह इसे अनुभव हो गया इस बात का।

जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ।।

जिसका था यह जीव, यह जो वृत्ति में आरूड़ (स्थित) चेतन बैठा था, यह व्यापक तो पहले ही था। उसके साथ अब मुझे यह ज्ञान हो गया, वह एक है, परिपूर्ण है।

नानक भगती नामि समाइ।।

कहते - नाम और भक्ति के द्वारा भाई ! परमेश्वर में लीन हुआ जाता है। नाम बंद न हो और भक्त भी ऐसा ही हो और बिल्कुल अहं का लेशमात्र न हो भीतर। अहंकार समाप्त हो जाये तो नाम चल जायेगा, यह नियम है। जब तक अहंकार नहीं जीव का समाप्त होता, तब तक कोई नाम नहीं चलता, ऐसे ही गप्पें हांकता है। नाम कब चलेगा ? जब अहंकार सारा नष्ट हो जायेगा, तो इसका नाम चल जायेगा। फिर क्या हो जायेगा ? अब पढ़ -

नानक भगती नामि समाइ।।

वह नाम और भक्ति द्वारा हम परमेश्वर के साथ उसमें 'समाए' हमारा मन एक होगा।

सो किउो बिसरै जि घाल न भानै।।

जो इतनी मेहनत भी कभी वह व्यर्थ नहीं जाने देता जो इसकी हुई है, ऐसा प्रभु विस्मृत क्यों हो भाई !

सो किउ बिसरै जि कीआ जानै।।

जो कि कमाई को सदैव स्मरण रखता है, वह क्यों विस्मृत हो ? तुम्हें पता नहीं 'कीआ' कहां तक जानते हैं। जब वह भौरा एवं गुरदास भाई भगते के पुत्र थे। भगता बहलो का पुत्र था। बहलो ने वहां जाकर सेवा की थी, जब हरिमन्दिर साहिब बनाया अमृतसर। जब गुरू साहिब बनाने लगे मन्दिर, उन्होंने कहा भई बात सुन लो, पहले उस पुराने सिक्ख को लाओ, वह भूला बैठा है। वहां 'भाई के फफड़े' एक गांव है, मालवे में, दमदमे साहिब के इस ओर है। बड़ा भारी गांव है। वह 'भाई के फफड़े' भी बहलो के कारण पड़ा है उसका नाम। उस समय उस पर ऐसा प्रभाव पड़ गया, वह मुसलमानों का अंगुआ नम्बरदार हो गया था। मुसलमानों का अंगुआ, जो मुसलमान मत को मानता है, उसको वे बताते थे अपना, आगे लोगों को उपदेश करने वाला। उसके पास एक तो छड़ी होती थी लोहे की और एक वह थड़ा बनाते थे। उसके ऊपर आकर शीश झुकाते थे लोग। वह छड़ी उसको लगाता था। वह छड़ी सुलतान पीर की मानते हैं। फिर लोग उसके साथ ठीक हो जाते यदि कुछ होते। उसने अपने आंगन में थड़ा बनाया था, भाई बहलो ने। वह छड़ी उसके पास थी, गांव का वह नम्बरदार था। पंचम पातशाह कहते लाओ उसको, पक्का करना है हमने। लाओ, लेकिन छः व्यक्ति जाओ, उसने आना नहीं तुम्हारे। साथ ही उधर इस्लाम के मत का, उसके ऊपर प्रभाव पड़ा हुआ है। जब न चला, दो व्यक्ति खींचना, चार धक्के मारना, ऐसे लाना पकड़ कर। लेकिन तुम्हें गांव के व्यक्ति सब कहेंगे कि क्यों अन्याय करते हो ? उनको कह देना, यह गुरू का पुराना सेवक है और गुरू के पास ले जाना है। वही बात हुई, जब पकड़ा उन्होंने वे लोग कहते, क्यों जबरदस्ती करते हो, इसके साथ। वह कहता मैं गुरू को मानता ही नहीं, मैं सुल्तान को मानता हूँ, मैं तो गुरू को मानता ही नहीं। वह कहते - तुझे पता ही नहीं लेकिन तुम बाद में विमुप्त हो गये, माया के प्रभाव में आ गया। वह लोगों ने उनको रोका, वह कहते न भई ! तुम्हारा अधिकार नहीं है, यह पुराना गुरू का सेवक है, भ्रमित हुआ। लोग कहते, न जी ! हम गुरू बारे कुछ नहीं कहते, ले जाओ भाई ! वह गुरू का सेवक है, गुरू तो ज़ाहिर हैं। वे लाये, और सतलुज दरिया तक पकड़कर लायें, चल पड़ा साथ आ गया। जब नांव में बैठा और आधे में गया सतलुज के, वह कहता, खोल दो भाई ! वह कहते न ! फिर तुम भाग जाओगे। कहता अब भागने योग्य रहा ही नहीं। वह नक्शा, पंचम पातशाह ने स्पष्ट दिखा दिया, फिर वह कहता खोल दो, मैंने भागना नहीं। उन्होंने खोल दिया। उतर कर ज्यों चला उनको अमृतसर तक मिलने ही नहीं दिया, भाई बहलो ने। वे दौड़कर मिलें। उसको तो यह हो गया, मैं तो बहुत चूक गया, भूल गया और अंततः जब गये, उसने मत्था टेका और सिक्ख भी बैठ गये मत्था टेक कर। वे कहते - क्या बात है ? वह कहता, जी भूल गया, माया ने भ्रमित कर दिया, नम्बरदारी मिल गई, गांव का बड़ा बन गया, मुसलमानों का राजा है, यह बात है। उन्होंने कहा अब ? कहता, अब तो जी सब कुछ आपके अर्पण, सब कुछ आपका। कहते यह हरमन्दिर साहिब बनाना है। भट्टे तुमने लगाने हैं, उनमें तुमने सब कुछ डालना है और पकाने हैं। वे ईंटे हम लादकर यहां लानी हैं, ऐसे बनाना है। वह जब बिल्कुल पूर्ण हरमन्दिर सम्पूर्ण हो गया, उस दिन गुरू साहिब बोले - पंचम पातशाह **'भाई बहिलो सभ से पहिलो'** कहते भाई बहलो सब से पहले है, वह जब गया गुरू साहिब के पास वे कहते - चादर बिछा, उसके पास चादर ही थी। वह कहता - जी मैं तो गद् गद् हो गया, मुझे तो सब कुछ प्राप्त हो गया। गुरू साहिब कहते मांग। वह कहता जी मांगने की कोई इच्छा नहीं है। वे कहते - जब हम कहते हैं तीन बार भई मांग। वह कहता जी - हमारे जल नहीं मालवा देश में, बहुत दूर है, दौ सौ हाथ पर है। कहता जल नहीं वहां, लोग बड़े तंग हैं और तो कुछ नहीं। उन्होंने कहा - वह जो तेरा है न इधर की ओर तालाब, उसकी ईंट उठा देना जाकर। वह कहता 'सति वचन'। उसने आकर ईंट उठाई जल ही जल हो गया। लोगों ने कहा, भाई बहिलो जैसा कोई नहीं। प्यासे मरते थे, पशु दुःखी थे। अब वह तालाब बना हुआ है, लोग जाकर स्नान करते हैं और यह जो सूखे बच्चे होते हैं उनको नहलाते हैं उसमें।

अतः इसलिये, जब भाई बहलो ने अपनी पूर्ण कमाई की, वह कृत्य कृत्य हो गया। यह सेवक उस समय पूर्ण होता है, जब इसकी सेवा पूर्ण हो जाये। सेवा तो होती है कहीं बारह वर्ष गागरें उठाकर। यह पहले दिन ही चाहता है, मुझे यह मिल जाये और वह मिल जाये। यह जितनी इसकी मांग होती है वह परमार्थ वहां चौथे भाग का भी नहीं होता। इसलिये सेवक की सेवा तब पूरी होगी जब वह स्वीकृत हो जायेगा। अब पढ़ भाई-

सो किउ बिसरै जि कीआ जानै।।

हां ! मैं भूल गया वह बात जो बात अन्दरूनी थी। जब राम राय को भोजा, दिल्ली बादशाह ने बलाया। गुरू साहिब कहते, हमने तो नहीं जाना, यह हमारा साहिबज़ादा जायेगा। उसको कह दिया भई जो औरंगजेब कहे, इस जेब में हाथ डालकर कह देना, वही हो जायेगा। बेहत्तर (७२) सिद्धियां दिखाईं। यमुना तक उसको साथ लेकर भेजा और बिना पालकी के भी गये। कुएं पर चादर बिछा दी कि देखेंगे। उस पर जाकर बैठ गए वैसे जैसे रहा। अंत में उसने एक बात कह दी भई और तो बात ठीक है, यह जो कहा है न-

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुमिआर।। (प ष्ठ ४६६)

यह देखो जी मुसलमानों के साथ भेदभाव किया है। यहां रामराय चूक गये। वह कहता न जी मुसलमान नहीं, मिट्टी बेईमान की। बस- इस पंक्ति से राम राय गद्दी से रह गया। इसलिये दोनों भाई वे, राम राय के साथ ही रहे हैं। राम राय को देहरादून दिया औरंगजेब ने। वह कहता मैं गद्दी से रह गया हूँ, विमुख हो गया, यह मैं पंक्ति पढ़ दी है। इसलिये बात यह है, अब मुझे तो गद्दी मिलनी नहीं, मैं विमुख हो गया। उसने कहा, तुझे देहरादून देता हूँ मैं। मेरी तो इतनी ही ताकत है। वह देहरादून फिर रामराय को दिया। वह भाई गुरदास और भौरा भी रामराय के साथ ही रहे। वह कभी कभी रामदाय कहते भई मैं रह गया, दशम् पातशाह पूर्ण गुरू है और गुरदास और भौरा भी शूरबीर थे, भगतू के पुत्र। वे कहते - तुम क्यों चिंता करते हो ? यदि वे बाण चलाना जानते हैं दशम् पातशाह, हम भी तो जानते हैं। इतने में जब दशम् पातशाह पांवटा गये, वहां राजा मेदिनी प्रकाश ने यह बात कही कि महाराज मेरे राज्य में एक अपना मकान बनाओ। वह दशम् पातशाह जब शेर को मारकर आये, फिरते फिरते जब वहां आये, वहां यमुना आवाज़ करती। वहां पैर रखकर कहते, लो बना दो। वह तब ही उसका नाम पांवटा साहिब पड़ गया। इसलिए, वे फिर ऐसे हुये थे। राम राय ने फिर पत्र भेजे अपने सिक्खों के पास भई गुरू साहिब को कह दो, मुझे एक बार दर्शन दो। वह सातवें गुरू ने तो उसको कहा था, बारह कोस हम से दूर रहना है, तुम विमुख हो। वह जो गुरू पदवी है वहां अब गुरू गोबिन्द सिंह ने, उसको पता था रामराय को कि मैं गुरू तो नही हूँ। एक बार उस सींहें ने कहा गुरू तेग बहादुर के लिए। वह कहता सीहां कि जी ऐसे है, ऐसी करेंगे - वह सीहां कहता। धीरमल कहता - हम गुरू तो नहीं है, गुरू तो नौवें पातशाह ही हैं, अपना तो जितनी देर चलता है चलाओ और इस करके जब उसको आज्ञा दे दी भई राम राय को कह दो, हम यहां जाते होते हैं सैर करने, यमुना में नांव पर, वहां आये। वह रामराय दूसरी नाव पर सवार होकर उससे उतरकर जब दशम् पातशाह की नाव में सवार हुआ, वहां आकर दशम् पातशाह के, रामराय चरणों पर गिर पड़ा, महाराज भूल हो गई, बहुत समय का भूला हुआ हूँ क्षमा दान दो और वह जो उसकी संगत की रामराय की, उन्होनें पीठ कर ली, भई हम अपने गुरू के बिना, दूसरे गुरू को देखना ही नहीं है। तब दशम् पातशाह कहते ''रामराइ गुरू है तो संगत भूतनी''। वे अब भी रामरायों के घरों में भूतने आये ही रहते हैं, एक आवाज़ सी होती ही रहती है। मैंने कहा ओये ! तुम्हें तो यह बात है। कहते - जी बात तो ठीक है। बढ़ई था, बढ़इयों को भूत अधिक होंगे। कई यहां हमारे पास बढ़ई आते हैं, वे भूतों वाले ही होते हैं। वह एक कहता - महाराज इसको निकाल दो किसी तरह। ओये कैसे निकाल दें ? यह तो गुरू साहिब का भेजा हुआ है तेरे में । इसलिये जब वह पड़ गया चरणों पर, उनको देखकर वह गुरदास और भौरा दोनों भाई भी पड़ गये। दशम् पातशाह कहते - बाण लाओ ओये। तुम जो कहते थे कि हम बाण चलाना जानते हैं। वे कहते - जी हमें क्षमा कर दो। हमने बड़ी भूल की। वे दशम् पातशाह

कहते - तुम्हें क्षमा करते हैं भाई बहलो के कारण। क्यों ? बहलों ने सेवा की थी। नहीं, तुम्हें क्षमा क्या करना था। वे पोते थे न बहलो के। कहते जाओ! भाई बहलो करके तुम्हें भी क्षमा कर दिया। देखो ! अब यह वह है न पंक्ति **'कीआ जानै'**। अब पढ़ -

सो किउ बिसरै जि कीआ जानै।।

वह गुरू को याद था, उनका किया हुआ भाई बहलो का, उसके पौत्र बख्शे। वह भूलता कभी थोड़ा है। वह भूलता नहीं। जीव गलती का पुतला है। गुरू करतार नहीं भूलता होता है। करतार और गुरू ब्रह्मज्ञानी नहीं भूलता, जीव गलती का पुतला है। इसने तो माया में ठोकरें खानी है, कभी इधर को चला गया, कभी उधर को चला गया। वह भूलता नहीं होता, गुरू ने कहा, हम तुम्हें क्षमा करते हैं। क्षमा नहीं करना था, भाई बहलो के कारण क्षमा करते हैं। उसने सेवा की थी और तब वे क्षमा किये थे। वह किये हुये को जानता है। चौथी पीढ़ी में आ गये तब भी वह जानता है कि भाई बहलो के हैं, भई इनको क्षमा करना है। चलिये-

सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ।।

कहते जिसने मन, तन सब अर्पण कर दिया, वह कैसे परमेश्वर को भूल जायेगा अथवा परमेश्वर उसको कैसे भूल जायेगा, वह तो एक हो गया।

सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ।।

जिसने तुम्हें जीवन दान दिया, प्राण-दान किया है, तुम्हारे हृदय में प्राणवान वस्तु है, सब के भीतर।

घट घट मै हरि जू बसै (प ष्ठ १४२७)

वह प्राणवान् वस्तु है। जड़ के जो उपासक होते हैं, वे गलत होते हैं। कबीर कृत 'बीजक' में आया है। एक कबीर पंथी, मेरे साथ रहता था, यहां मेरे पास। वह (कबीर) रामानंद को कहता - तुम जड़ की उपासना करते हो। कबीर कहता - नहीं तो जड़ की उपासना छोड़ दे नहीं तो मैं तुझे छोड़ दूंगा। यह मूर्ति का उपासक था रामानन्द, उसने छोड़ दी। कबीर कहता, यह लो मैं तुम्हारी संगत में रहा, आपके सत्संग में रहा लेकिन तुम तो जड़ के पुजारी थे। लेकिन हां अब तुम्हारा और मेरा कोई अन्तर नहीं। फिर कबीर चेतन का उपदेश करता रहा, उपासना से विलग होकर। उसने कहा स्व अनुभव था। मुझे इसलिये, रामानन्द ने फिर एक बात छोड़ी और कहा -

कत जाइए रे घर लागो रंगु।।
मेरा चितु न चलै मन भइओ पंगु।। रहाउ।।
एक दिवस मन भई उमंग।।
घसि चंदन चोआ बहु सुगंध।।
पूजन चाली ब्रहम ठाइ।।
सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि।। (प ष्ठ ११६५)

कहता - मैं मन्दिर में परमेश्वर की अर्चना किया करता था, और कहता - गुरू ने कहा - ओये ! कहां दौड़ा जाता है प्रतिदिन। कहता, जी पूजा करने। कहते - तेरे मन में बैठा -पूजा किस की करनी है ? वह तो तुझे देखता है, तुम्हारी वृत्ति को देखता है, सब देखने वाला, जानने वाला, वह तो दाना बीना है।

पूजन चाली ब्रहम ठाइ।।
सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि।।
जहा जाइऐ तह जल पखान।।
तू पूरि रहिओ है सभ समान।। (प ष्ठ ११६५)

कहता-अब जहां जाते हैं, पत्थर होते हैं और जल होता है।

जहा जाइऐ तह जल पखान।।
तू पूरि रहिओ है सभ समान।।
बेद पुरान सभ देखे जोइ।।
ऊहां तउ जाइऐ जउ ईहां ना होइ।। (प ष्ठ ११६५)

वे तो कहते-हृदय में बैठा है।

सतिगुर मै बलिहारी तोर।।

जिनि सकल विकल भ्रम काटे मोर।।
रामानंद सुआमी रमत ब्रहम।।
गुर का सबदु काटै कोटि करम।। (प ष्ठ ११९५)

रामानन्द ने यहां आकर छोड़ा, यहां से चेतन का उपासक हुआ। वह कबीर ने 'बीजक' ग्रन्थ में ठीक लिखा है, लेकिन यह शब्द गुरू ग्रन्थ साहिब में लिखा है। भाई रामानन्द यहां आकर चेतन का उपासक हुआ। नहीं तो जड़ का उपासक ही था और कबीर तो जड़ को मानता ही नहीं था। चलिये-

सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै।।

माँ के गर्भ में, जठराग्नि में जो रखता है, वह परमेश्वर क्यों विस्मृत हो जाये भई, ऐसा जो है ?

गुर प्रसादि को बिरला लाखै।।

भई - गुरू की कृपा से इस बात को कोई निराला ही जानेगा, देखेगा, कोई करोड़ो में से, एक आदमी ही देखेगा।

सो किउ बिसरै जि बिख ते काढै।।

जिससे विष में से निकाल लिया, गर्भ में से, विष में से निकाल लिया, विष मुक्त किया तो वह क्यों विस्मृत हो। वह मीरा बाई को विष दिया था, वह एक राणा का पिता था और एक राणा उसका सुसर था। वह नाचती थी, कृष्ण के मन्दिर जाकर। कृष्णा की उपासक थी, जपती सत्नाम थी, रविदास की शिष्या थी और इस करके जब वह ऐसा हुआ, कहते हैं, उन्होंने सलाह की भई यह हमारे आदर का प्रतिदिन अपमान करती है, कीर्तन रोज़ करती है और नाचती है कि यह किसी प्रकार मृत्यु को प्राप्त हो। उसकी ननद को भेजा कि भई वह चरणामृत ग्रहण करती थी ठाकुर का, भई उनका चरणामृत कहकर उसको विष दे दो। उसने जाकर कहा मैं ठाकुर का चरणामृत लाई हूँ, तुम पी लो। वह मस्त थी, वह कहती ठाकुर का है ? वह कहती हाँ ठाकुरों का है। तीन बार कहा। वह कहती ला, वह मीरा बाई पी गई। वह मस्त थी, वह जो उन्होंने विष भेजा था, वह अमृत बन गया। इसलिये ऐसा परमेश्वर क्यों विस्मृत हो, जो ऐसे विष से भी रक्षा करे। हाँ जी -

जनम जनम का टूटा गाढै।।

यह जीव करोड़ों जन्मों का भ्रमित हुआ, टूटा हुआ जोड़ना परमेश्वर ने है।

है कोऊ ऐसा मीतु जि तोरै बिखम गांठि।।
नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ सांठि।। (प ष्ठ १३६३)

यह तो भाई परमेश्वर ही यह कार्य करेगा। यह तो कृपा द्वारा अपने साथ जोड़ेगा। लेकिन यह टूटा हुआ है। यह तो अपने आपको जीव प्रच्छिन जानता है और व्यापक परमेश्वर को विलग जानता है। इसलिये इसको चेतन का ज्ञान नहीं, इसको सत्य का ज्ञान नहीं। सच्चिदानंद को जाना ही नहीं इसने।

गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ।।

मुझे यह पूर्ण गुरू रामदास ने तत्व की बात बता दी, समझा दी।

प्रभु अपना नानक जन धिआइआ।।

भई लोगों का धर्म है, अपने प्रभु का स्मरण करो। आपकी आत्मा जो है वही परमात्मा है, उसका स्मरण किया करो जो सच्चिदानन्द परिपूर्ण है।

साजन संत करहु इहु कामु।।

हे सज्जनों ! हे संतो ! यह काम करो।

आन तिआगि जपहु हरि नामु।।

संसार की समस्त कामनायों, वासनायों को त्याग कर, हरि का नाम स्मरण करो। नाम के साथ मन को जोड़कर, नाम का स्मरण करो।

सिमरि सिमरि नामु बारंबारु।।
नानक जीअ का इहै अधार।।
सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु।। (पृष्ठ २९५)

यदि स्मरण करोगे, स्मरण करोगे, स्मरण करोगे आत्म सुख को प्राप्त होगे।

आपि जपहु अवरह नामु जपावहु।।

आप भी परमेश्वर का नाम, मन को जोड़ कर जपो और दूसरों को भी जपने के लिए कहो।

भगति भाइ तरीअै संसार।।

भाई! प्रेमाभक्ति से ही संसार से मुक्त होंगे।

बिनु भगती तनु होसी छारु।।

यदि आपने भक्ति न की, आपका यह जो 'तन' शरीर है, निष्फल जायेगा। किसी काम नहीं। यह व्यर्थ है, ये वासनाओं के साथ तो काम नहीं चलना, यह तो भक्ति से ही काम आना है।

सरब कलिआण सूख निधि नामु।।

कहते - समस्त कल्याण, समस्त निधियां, खजाने, सुख, एक नाम से प्राप्त होंगे। एक बार आपका मन, नाम के साथ जुड़ जाये।

एक चित जिहि इक छिन धिआइओ।।
काल फास के बीच न आइओ।। (अकाल उस्तति)

दसवें पातशाह कहते, एक क्षण भी आपका मन, नाम के साथ जुड़ जाये, बस ! तुम्हारा जन्म-मरण काटा गया, मोक्ष हो गई।

बूडत जात पाए बिस्रामु।।

कहते - जो डूब रहे थे अजा मिल, वेश्या (जीवन्ती नाम की वेश्या अर्थात् गणिका) आदि, वे भी नाम द्वारा विश्राम पा गये, उनको भी परमेश्वर प्राप्त हो गया।

सगल दूख का होवत नासु।।

समस्त दुःखों का नाश हो जायेगा, नाम के कारण। जब तुम्हारा मन, नाम के साथ एक बार जुड़ गया, समस्त दुःख नष्ट हो जायेंगे।

नानक नामु जपहु गुनतासु।।

कहते- उसका नाम जपा करो, गुणों का जाप किया करो।

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु।।
बिनसि जाई हउमै बिखु फैलु।। (पृष्ठ २८६)

और इसलिये गुण गायन किया करो ऊंचे स्वर में। जब आपका नाम के साथ चित्त न जुड़े तो गुण-गायन किया करो, फिर उसके गुण-गायन करने लग जाया करो।

उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ।।

कहते तुम्हें प्रेम उत्पन्न हो जायेगा। प्रेम का जब रस आ गया, फिर तुम्हें परमेश्वर के नाम का बड़ा उत्साह पैदा होगा।

मन तन अंतरि इही सुआउ।।

कहता - मन तन के अन्दर, वह प्रयोजन से रहित परमेश्वर बैठा है जो परिपूर्ण है। यही 'सुआउ' अर्थात् आपका प्रयोजन अभिप्राय है भई नाम जपा करो।

नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ।।

यदि तुम परमेश्वर को, मन बुद्धि शुद्ध होने पर, इन नेत्रों द्वारा देख लो तुम्हें सुख प्राप्त हो जायेगा **'आत्म सुख'**।

मनु बिगसै साध चरन धोइ।।

वह जो पूर्ण ब्रह्मज्ञानी, साधु है, उसके यदि चरण धाओगे तो मन आपका आनंदित हो जायेगा, प्रसन्न हो जायेगा।

भगत जना कै मनि तनि रंगु।।

भक्तजनों के मन तन के भीतर **'रंगु'** अर्थात् एक **'प्रेम'** ही होता है, **'आनन्द'** ही होता है।

बिरला कोऊ पावै संगु।।

उनका संगति कोई विरला पुरूष ही प्राप्त करेगा। ऐसे महापुरूष का, पूर्ण पुरुषों का, जो परमेश्वर के कृपा पात्र हैं, कोई विशेष ही उनका संग पायेगा।

एक बसत दीजै करि मइआ।।

मेहर करके, मेहर से 'मइआ' बना हुआ है। मेहर करके, हे परमेश्वर ! कृपा करके मुझे एक वस्तु प्रदान कर।

गुर प्रसादि नामु जपि लइआ।।

गुरू की कृपा से मेरा नाम में, जप में, मन स्थित हो जाये।

ता की उपमा कही न जारा।।

उनकी उपमा, मैं आगे कुछ कह नहीं सकता।

नानक रहिआ सरब समाए।।

कहतै वह सर्वत्र व्यापक है। चारों प्रकार के प्राणियों के हृदय में **'घटि घटि में हरि जू'** निवास करता है।

प्रभ बखसंद दीन दइआल।।

वह दीनों पर अत्यन्त दयालु है और क्षमाशील भी है वह जिनके पास विनम्रता भक्ति है, उनको क्षमा भी कर देता है।

भगति वछल सदा किरपाल।।

भक्तों का इतना प्रिय है, जितना पहले दिन गाय को अपना बछड़ा प्यारा होता है। वह बच्छे को चाट-चाट कर सफेद कर देती है। उसको नहीं पता, गोबर कहाँ गया है ? इतना प्रेम भक्तों के साथ परमेश्वर का है।

सदा किरपाल।।

वह सदैव ही कृपा करता है।

❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

६

।। सोरठि महला ५।।

हरि नामु रिदै परोइआ।।
सभु काजु हमारा होइआ।।
प्रभ चरणी मनु लागा।।
पूरन जा के भागा।।१।।
मिलि साधसंगि हरि धिआइआ।।
आठ पहर अराधियो हरि हरि मन चिंदिआ फलु पाइआ।। रहाउ।।
परा पूरबला अंकुरु जागिआ।।
राम नामि मनु लागिआ।।
मनि तनि हरि दरसि समावै।।
नानक दास सचे गुण गावै।।२।। (पृष्ठ ६२७)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु!!

हरि नामु रिदै परोइआ।।

कहते, हमने हृदय में नाम पिरो लिया जैसे सूई में धागा पिरो लेते हैं, जिधर सूई जायेगी, धागा साथ ही जायेगा। हमने भी अपने हृदय में नाम पिरो लिया। नाम, नामी के पास ले जायेगा।

सभु काजु हमारा होइआ।।

समस्त कार्य हमारा पूर्ण हो गया। अमृतसर तीर्थ बन गया, तरन तारन बन गया, बीड़ बंध गई और करतार पुर बस गया। जो हमारे गुरू ने हमें कार्य बताया था, हमारे समस्त कार्य पूर्ण हो गये।

प्रभ चरणी मनु लागा।।

कहते - जब जीव का मन, परमेश्वर के चरणों में लीन हो जाये, समस्त कार्य परमेश्वर कर देता है। इसको कोई चिंता नहीं रहती।

पूरन जा के भागा।।

परंतु जो बड़ा सौभाग्यशाली हो, उसका मन परमेश्वर के चरणों के साथ लगता है। उसका मन नाम के साथ जुड़ता है।

मिलि साधसंगि हरि धिआइआ।।

कहते - हमने सत्संगति से प्रभु का नाम स्मरण किया, नाम का जाप किया, परमेश्वर का ध्यान किया।

आठ पहर अराधिओ हरि हरि

आठों हमने (पहर) हरि नाम की आराधना की। आठों याम हमने नाम का स्मरण किया।

मन चिंदिआ फलु पाइआ।। रहाउ।।

और जो हमारे मन में इच्छा थीं, समस्त पूर्ण हो गईं।

परा पूरबला अंकुरु जागिआ।।

कोई यह आज की बात नहीं, कोई पिछला हमारा पूर्व जन्म का पुण्य किया हुआ निष्काम, जाग पड़ा। उस पूर्व कर्म ने हमें मिला दिया।

राम नामि मनु लागिआ।।

इसीलिये जीव का मन, राम के साथ जुड़ गया। जब इसके समस्त पुण्य एकत्रित हो जाते हैं तो इस का मन, नाम के साथ जुड़ता है।

पुन्य पुंज बिनु मिलहि न संता
सतसंगति संसृति कर अंता। (मानस ७/४५)

तुलसीदास जी का कथन है -

पुण्य पुंज बिनु मिलहि न संता (मानस ७/४५)

जब पुण्यों का समूह एकत्रित होता है तब संत मिलते हैं। संत के मिलाप

से इसको नाम प्राप्त होता है। नाम की प्राप्ति पर इसको नामी परमेश्वर प्राप्त होता है। कोई हमारा पूर्व पुण्य का हमें संत मिल गये श्री गुरू रामदास, फिर उनके मिलने से हमें नाम प्राप्त हुआ है और नाम ने हमें नाम के साथ मिला दिया।

मनि तनि हरि दरसि समावै।

हमारा मन भी एवं तन भी हरि दर्शन में लीन हो गया। हमारा मन परमेश्वर के साथ तदाकार हो गया और तन सेवा में जुड़ गया।

नानक दास सचे गुण गावै।

श्री गुरू अर्जुन देव महाराज जी कहते - हम तो भाई सच्चे के गुण गाते हैं। अब तो परमेश्वर के गुणगान करते हैं।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

७

।। होड़ी महला ५।।

रसना गुण गोपाल सिधि गाइण।
सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण।।रहाउ।।
जो भागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण।
जनम मरण दुहहू ते छूहहि भवजलु जगतु तराइण।
खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोबिन्द पराइण।
अविनाशी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।।२।।

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु।

वाक् गुरू अर्जुन देव जी का है। गुरू अवतार कभी कभी आते हैं, हमेशा गुरू अवतार नहीं आते। गुरू अवतार तब होता है, जब बहुत साधना वाले भक्त, उसके द्वार के सम्मुख खड़े हो जाते हैं। संसार के अहंकार को त्याग कर नाम के अधिकारी हो जाते हैं, गुरू अवतार उस समय आता है। मैं बहुत शीघ्र करूंगा झंड़ा बाढ़ी कहां है, शिवनाभि किस स्थान पर है समस्त जितने भी थे, वे समस्त इसी वस्तु में संलग्न थे, उनको एक ही आशा थी। गुरू अर्जुन देव ने लिखा है-

नाम तुलि कछु अवरू न होई। (प ष्ठ ६२७)

'नाम' जैसी संसार में कोई वस्तु नहीं है। तुलसीदास जी ने तो नाम को नामी से बड़ा बताया। नाम-नामी की प्राप्ति कर दी। नाम एक ऐसी वस्तु हैं संसर में जो जीव की मोक्ष कर देती है लेकिन होता गुरू के पास है। वास्तविक देव, गुरू होता है संसार में। दशम् पातशाह के ऊपर पंवर करता था। गुरू साहिब पूछते हैं उस बड़ई को, तेरा मुरशद देव कौन है ? जो भई नंदलाल के पास आया था।

उसने कहा जी यह है। उसने कहां, न गुरू अन्य नहीं है ? उसने कहा बस। गुरू हज़ार गुणा बना सकता है। गुरू तो एक प्रकाश होता है।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।
ताते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।। (प ष्ठ १४०८)

गुरू जलता प्रकाश है संसार में। हमारे देश में महात्मा बुद्ध हुये हैं। वे भी बड़े महापुरूष हुये हैं। उनको उस पुस्तक वाले ने **'एशिया का प्रकाश'** लिखा है। लेकिन गुरू नानक को हम यह नहीं कह सकते। क्यों ?

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानक कहायउ।

उस ज्योति स्वरूप ने स्वयं, संसार में आकर गुरूनानक कहलाया। उसका नाम गुरू नानक प्रसिद्ध हो गया। 'नानक तपा' पर आप पूर्व में जाकर यह पूछ लो। अनपढ़ व्यक्ति भी ये बात कहेंगे, जी पंजाब में एक गुरू नानक हुये हैं। वे किसी से सीखकर नहीं कहते, वह गुरू पद रूढ़ हो गया - 'गुरूनानक'। इसलिये गुरू जो होता है वह संसार का प्रकाश होता है, गुरू के पास एक परमेश्वर की ओर चाबी मिली होती है।

गुरू कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति।
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उधैड अवर न कुंजी हथि।।
(प ष्ठ १२३७)

यह चाबी गुरू के बिना किसी के पास नहीं है। नारद महाराज देव ऋषि, चौदह विद्या पढ़ा हुआ था। जब यह बातें आई कि आत्म वेत्ता शोक को पार कर जाता है, मोह को पार कर जाता है। उसको पढ़कर उसके हृदय में एक बात आई कि भई आत्म वेत्ता को शोक नहीं होता। मैं बड़ा भारी विद्वान हूँ, मुझे शोक है। उसने जाकर पूछा उसने कहा सनक सनंदन और सनत कुमार उत्तराखंड में बड़े महापुरूष हैं, बड़े ब्रह्मज्ञानी हैं, तुम उनके पास जाओ। चला गया, उनके पास, उसने प्रार्थना की। उन्होनें कहा नारद ! पहले तुम सुनाओ, कहां तक तुम्हारी बुद्धि पहुंची हुई है ? उसने चौदह विद्यायें सुना दी। वह कहता - यह अपरा विद्या है, यह परा विद्या नहीं है, परा विद्या तो ब्रह्मकार वृत्ति है। तुम्हारी अखण्डाकार वृत्ति

नहीं हुई ब्रह्मकार वृत्ति नहीं हुई, तुमने शब्द का मनन और निदिध्यासन नहीं किया।

सुणिआ मनिआ मनि कीता भाउ।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ।। (प ष्ठ ४)

तुम्हारी निदिध्यासन की परिपक्व अवस्था नहीं हुई। निदिध्यासन की परिपक्व अवस्था को समाधि कहते हैं। फिर उपदेश किया, पूर्ण अधिकारी उनका बना। यह प्रसंग अब भी 'भूमा विद्या' में आता है। अब भी मैं वहां टीका पढ़कर आया हूँ उन्होनें बड़ा भूमा विद्या का उपदेश किया है। भूमा व्यापक को कहते हैं। वह साधन सम्पन्न था, उसको भूमा का ज्ञान हो गया, उसकी व्यापकार वृत्ति हो गई।

नानक का प्रभु रहियो समाइ।। (प ष्ठ ११३६)

नानक का प्रभु तो व्यापक है। नानक का कोई अन्य प्रभु तो नही।

महिमा न जानहि वेद।
ब्रहमे नही जानहि भेद।
अवतार न जानहि अंतु।
परमेसरु पारब्रहम बेअंतु। (प ष्ठ ८६४)

इसका यह अभिप्राय नहीं है कि अवतार नहीं होते, नहीं लेकिन वह उपासना तो गुरूमत में इक ओंकार व्यापक की है। इक ओंकार से लेकार 'सैभं' (स्वयंभू) तक विशेषण आयें हैं लेकिन जो इक ओंकार है, वह सैभं (अर्थात् स्वयंभू) है।

एकम एकंकारु निराला।
अभरू अजोनी जाति न जाला।
अगम अगोचरू रूप न रेखिआ।
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ। (प ष्ठ ८३८)

वह सब में 'घट घट मैं हरि जू' निवास करता है। वह परिपूर्ण परमेश्वर है। चलें - भाई बोल -

रसना गुण गोपाल निधि गाइण।।

यहां से भाई आरम्भ करना है। जब तुम्हें किसी पूर्ण परमेश्वर के प्यार ने अथवा पूर्ण गुरू ने तुम्हे उपदेश देना है, पहले तुम्हे नाम दान करना है। वह कानों के माध्यम से आपके अन्तःकरण में नाम ने पहुंचना है। फिर उस महापुरूष ने जितना हमें पता है, जो हमने देखा है, जैसे हमें मिला है, हम तो वही बतायेगे और तो कुछ कह नहीं सकते और तो फैलाव है। फिर उसने तीनों को एकत्रित करना है। श्वास, नाम और नामी को। उन्होंने नाम का चलाना है। भई - तुम इस नाम को श्वास के साथ जपना, श्वास तो पहले ही परमेश्वर ने चलाये हुये हैं और नाम को आपने साथ लेकर जाना है और साथ लेकर आना है। वह कौन है ? मन। मन ने नाम को लेकर जाना है श्वास के साथ जब श्वास ने ऊपर को आना है तो मन के साथ आना हैं, तीनों चीज़ों एकत्रित होनी हैं श्वास, मन और नाम। जब उसका चित्त, एकाकार हो जायेगा, वह कहेगी ठीक है, हां जी, चल गया। लेकिन आप सोच लो, उस समय आपका मन कहीं नहीं गया हो। जब मन नाम को लेकर जायेगा और नाम को लेकर आयेगा। यदि बाहर जायेगा तो नाम नहीं चलेगा, केवल श्वास चलेंगे। लेकिन आप यह भी सोच लो उन तीनों को एक साथ देखने वाला भी आपके हृदय में है।

दाना बीना साई मेडा नानक सार न जाणा तेरी। (प ष्ठ ५२०)

वह दाना बीना आप के हृदय में बैठेगा, वह कहीं अलग नही हैं।

सभना जीआ का इक दाता सो मैं विसरि न जाई।। (प ष्ठ २)

वह मुझे कभी विस्मृत न हो। अब जब तुम उसको देखोग मन को और नाम को और श्वास को एक साथ चलते उसके द्रष्टा तो तुम दो। वह तो तुम्हे नही न मिला। बिल्कुल स्पष्ट तुम मन को देखो लेकिन वह तो मन के पहले था वह परमेश्वर आपका 'आत्मा' तो मन से पूर्व था। वे तो दृश्य के बनने से द्रष्टा बना है। वह देखने वाला जो है, वह जब मन जुड़ा, तो भी तुम देखते हो, जब मन नहीं जुड़ा तब भी देखते हो जी मेरा नहीं लगा, मेरा मन स्थिर नही हुआ। स्थिर तब हो तब यदि स्थिर के साथ मिलाया जाये। जब नाम के साथ मन लग जायेगा, वह कहां जायेगा ? वह जो आपका दाना-बीना चेतन है, वह जो द्रष्टा है, वह जन्म-मरण में आने वाला कभी नहीं।

मूई सुरति बादु अहंकारु।
ओहु न मूआ जो देखणहारु।
जै कारणि तटि तीरथ जाही।
रतन पदारथ घट ही माही।
पडि पडि पंडित बाद बरवाणै।
भीतरि होदी वसतु न जाणै। (प ष्ठ १५२)

वह पंडित **'खट शाशतरी'** शोक मग्न हुआ वह सुदर टीका वालों ने लिखा है उसकी भूमिका। जब उसने यह बात कही जी आप नहीं मरेंगे शोक में ? उसके पुत्र का देहांत हो गया था पंडित का। गुरू साहिब ने कहा - ओये। मृत्यु तो किसी की भी नहीं हुई।

देही माटी बौले परणु।
बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु।। (प ष्ठ १५२)

मरने वाली तो कोई वस्तु नहीं है तो उसने कहा जी आप नहीं मरोंगे। तो यहां कहा गुरू साहिब ने -

हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।
मरता जाता नदरि न आइआ।। (प ष्ठ १५२)

यह मरना- जन्म लेना नहीं है। आपके पांच ज्ञान इन्द्रियां हैं, पांच उनके विषय है, पांच वह वृत्तिया हैं। लेकिन उसने प्रत्येक वृत्ति के साथ जुड़ा ही रहना है, वह तो त्रिकुटी का साक्षी है। वह त्रिकुटी से अलग है। वह ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय है और अलग है। एक स्थूल दृष्यांत जाटों को हम देते हैं। वे कहते जी, परमेश्वर? मैंने कहा चौथा है। कहते जी कैसे ? मैंने कहा - यह आपकी क्यारी है ? कहते जी हाँ। यह नाल है ? हाँ जी। मैंने कहा, यह चबचा है जहां से पानी निकला है?

कहता - हां जी, मैंने कहा, पानी सब में एक है। वे कहते - हांजी मैंने कहा, वह चेतन सर्वत्र व्यापक है लेकिन वह चौथा है। वह द्रष्टा है, उपाधि अवस्था में उसको 'दाना बीणा कहते हैं। 'दाना बीना साई मैडा' जो दाना बीना है, वह परमेश्वर है। वह शब्द है ? नियता परमेश्वर है, फलदायक परमेश्वर है। परमेश्वर के दोनों रूप वाणी में आते हैं।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।
ता के लेखा न गनै जगदीस। (प ष्ठ २७७)

असंख खते जिन बखसनहारा।
नानक साहिब सदा दइआरा।। (प ष्ठ २६०)

जेहा बीजै सो लुणै करता सदंडा खेतु। (प ष्ठ १३४)

यदि तुम अपने कर्म को पकड़ोगे तो तुम्हे वे कर्म भोगने पड़ेगे। यदि तुम शरण में जाओगे तो कर्म समाप्त और सदना ने समस्त कर्म भोगे ? विधि चन्द ने सारे भोगे ? जितने उदाहरण हैं, वे कहां गये इनके कर्म ? लेकिन जब यह शरण गया तो कर्म की समाप्ति हुई। लेकिन यह जीव का मन शरणागत नहीं होता। इसको एक ग्रह ने पकड़ा हुआ है। एक दिन हमारे साथ एक संत बातें कर रहा था, उसको वे बड़ी स्मरण थी साखियां। वह साखी बहुत सुन्दर बोलता था। उसमें ऐसे आया। उसने कहा ओये ? नौ ग्रह हैं लेकिन दसवां ग्रह अहंकार है, जब तक यह नहीं उतरता, नौं काम करेंगे और जब यह ग्रह मिट गया, नौं ने आपके पास कभी नहीं आना क्यों ?

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै।
इहु बिरदु सुआमी सदा।। (प ष्ठ ५४४)

यह तो एक प्रण है महाराज का, भई जो शरण आया, उसको कठे लगाना है। आपको पता नहीं ? बाली को जब मारने लगे, उसने एक ही प्रश्न किया।

मैं वैरी राम मीत पिआरा।
कारन कवन नाथ मेहि मारा। (रामायण)

परमेश्वर को, अवतार को, ब्रह्मज्ञानी को कोई चीज़ निर्मित नहीं करनी पड़ती उनके सम्मुख होती है, यह बात हम स्वयं आपको बताते हैं, जो हमने देखी है। बीरम दास के पास जो जाता था, पहले वहीं बाते सुनाता था, वह अभी जीवित है। वह जब वहां आता था फिर कहता था - आता है ससुरा, यहां लड़का लेने, बीरम दास बनाता है है लड़के ? आया है ससुरा अमुक वस्तु के लिए। उसको यहां तक सर्वज्ञता थी, बड़ा नाम जपने वाला महापुरूष था। इसलिये अब बताओ? अवतो वे तो सम्मुख हैं सब अवतार और महापुरूष तो एक ही होता है।

हरि हरिजन हुई ऐक है बिब बिचार कछु नाहि।।
जल ते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि।। (बचित्र नाटक)

वह तो समस्त वृत्तियों, जितने आपके विचार हैं, उसका टाइप करने वाला जो वृत्ति के बीच में ही बैठा है, कहीं बाहर से तो उसने आना नहीं। जो आप का विचार उठते हैं, वह टाइप हो जायेगा, वह तो वहीं बैठेगा। उसको साक्षी कहते हैं, द्रष्टा कहते हैं, नियंता कहते हैं, अर्न्तयामी कहते हैं।

राखा ऐकु हमारा सुआमी।
सगल घटा का अंतरजामी।। (प ष्ठ ११३६)

और रक्षक भी यही है, अन्य कोई इसका रक्षक भी नहीं। वह तो उसको वैसे ही भ्रम है। वह पट्टी वाली लड़की (रजनी) की कथा पढ़कर देख लो। उसके (पिता राजा ने) पूछा सारी लड़कियों को, भई किसके आश्रित हो। कहतीं, आपके आश्रित। वह (रजनी) कहती न, मेरी प्रारब्ध मेरे साथ है, लेकिन तुम मेरे निमित्र हो। इसलिये तुम्हे भ्रम हो गया शायद मेरे आश्रित हैं नही, नियंता परमेश्वर के हाथ में सब की प्रारण्ध है। उसने उसका कोढ़ी के साथ विवाह हुआ, वह समस्त हाल आपने देखा है। नहीं इसका दिल में भरोसा नहीं है।

मानुख की टेक ब्रिधी सभ जानु।
देवन कउ एकै भगवानु।
जिसके दीए रहै अघाइ।
मार राखै एको आपि।

मानुख कै किछु नाहि हाथि।
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ।
तिस का नामु रखु कठि परोइ।
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभ सोइ।
नानक बिधनु न लागै कोइ।। (प ष्ठ २८१)

इसने एक वस्तु नहीं छोड़नी, अन्य सब त्याग देनी हैं।

सभना जीआ काइकु दाता सो मैं विसरि न जाई। (प ष्ठ २)

वह कभी भूले न। पढ़ दो जल्दी भाई ! कहीं वही बात न हो।

रसना गुण गोपाल निधि गाइण।।

वह जो **'नाम'** तुम्हें गुरू ने दिया है, उसको जिहा के साथ प्रतिदिन गाते रहना, उसको भूल न जाना कभी। उसको कभी लाकर छिक्के पर न रख देना, भई मरते समय ले जायेंगे। यदि बिल्ली खा गई, फिर क्या करोगे ? इसलिये उसको एक क्षण नही भूलना। थोड़ी सी बात मैं एक कहता हूँ, वृद्ध आत्मा राम विरक्त बड़े महापुरूष थे। मैं रहा वहां उनके पास। मैं उनकी चादर धोने लग गया, वे कहते न धोना। मैंने कहा - कोई बात नहीं हम बैठ गये। मैंने कहा - जी वह बात बताओ जहां यह परमेश्वर को हर समय जपता रहे। वह कहते - भाई! जीहवा ने थक जाना है, त्रिकुटी ने खड़े हो जाना है। इसका एक ही उपचार है, वह जो आपका स्वरूप है साक्षी, द्रष्टा व्यापक उसको कभी भूलना नहीं। वहां वृत्ति को जोड़कर चलना और जो थोड़ी बहुत वृत्ति बाहर भी आयेगी, उसका एक ही अर्थ होगा, जो उस फकीर ने प्रश्न किया था श्री गुरू अर्जुन देव जी को। वह बड़ी विस्तृत बात है इतिहास की। उसने कहा - जी यह क्या ? तुम तो सेवा हो, वाह भाई वाह ! बड़ा टोकरा उठाया शाबाश। वे छड़ी लेकर खड़े थे न इलायची बेरी के नीचे। उसने कहा- मैं दो सौ कोस से चल कर आया, भई वे मोक्ष के दाता हैं, और वह फकीर वापिस हो लिया, संसारिक व्यवहार समझकर महाराज पंचम पातशाह बाबा बुड्ढ़ा को कहते, मार टोकरा सत् नाम कहकर। उसने मारा जलोदर रोग था, ठीक हो गया। वह चरणों में गिरने लगा। बाबा जी कहते - न वहां जिस पर शंका हुई है, वहां जाकर 'बाबा बुड्ढ़ा' भी एक महापुरूष था। वह आया। उसने कहा जी यह बात कैसी ? गुरू साहिब कहते -

साचि नामि मेरा मनु लागा।
लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।। (प ष्ठ ३८४)

हमारा मन जुड़ा हुआ है, उसके नाम के साथ। यह 'ठाठा बागा' है। यह संसार की सेवा, ठाठा बागा है। लेकिन उसको भूलना नहीं कभी। इसलिये, वह परमेश्वर व्यापक है। नामदेव ने वहां जहां उसका संवाद हुआ है, उसने भी यही बात कही है, उसने कहा तुम क्या करते हो लोभ के वशीभूत ? उसने कहा न -

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि।। (प ष्ठ १३७६)

एक संत ने एक दिन बहुत अच्छा पढ़ा। मैं साथ था, अखण्ड पाठ भोग पर गये। उसकी कोई बात नहीं की, पहले यही बात कही। मंगलाचरण भी नहीं किया, कहता तन्मयता से -

चीतु निरंजन नालि, चीतु निरंजन नालि।।

ऐसा सुन्दर उसने पढ़ा समस्त संगत को पढ़ाया बहुत ही अच्छा। उस संत को मैंने देखा है, मेरे साथ रहे हैं। हम एक दिन पंचम पातशाह के दिन पर गये बड़े गांव, मैंने कथा की। मैंने कहा तुम भी कुछ करो। उसने कुछ नहीं कहा, कोई बात नहीं कही। उसने उठकर ऐसी लय से पढ़ा- दुःख में सुख मनाई, दुःख में सुख मनाई पढ़ो सारे -

"दुःख में सुख मनाई, दुःख में सुख मनाई।"

पढ़े सारे -

"दुःख में सुख मनाई, दुःख में सुख मनाई।"

दुःख में सुख मनाई, दुःख में सुख मनाई वह पढ़कर संगत में से कई व्यक्तियों की आंखों में पानी आ गया, मेरे देखते हुए। वे कहते यह उस का दिन है जिसने दुःख में सुख मनाया था। यह उस का दिन है जिसने तवे पर बैठकर दुःख में सुख मनाया था। यह उस गुरू का पर्व है। अधिक नहीं उसने कहा, यह

उस गुरू का पर्व है।

"दुःख में सुख मनाई, दुःख में सुख मनाई।"

बस आपको कोई गुरू अर्जुन देव का शिष्य ही मिलेगा जो दुःख में सुख मनाने वाला होगा। उसने यही शब्द पढ़ा सारा। बस - इसलिये भाई ! इन मन को, उसमें जोड़ देना, नाम में। पढ़ो भाई ! शीघ्र कर देंगे।

रसना गुण गोपाल निधि गाइण।

वह गोपाल जो समस्त पृथ्वी का स्वामी है, जिहवा से उसके गुण गाया करो। कभी उसको भूलना नहीं। अपने गुरू मंत्र को कभी न भूलना। संसार की समस्त वस्तुयें चाहे भूल जायें, लेकिन गुरू मंत्र को कभी न भूलना। वह चलते हुये भी उसका अभ्यास न छोड़ना।

ऊठत बैठत सोवत नाम।।
कहु नानक जन कै सद काम।। (प ष्ठ २८६)

यह है सदा करने वाला कार्य। गुरू साहिब कहते, यह सदैव करने वाला है, वे जो हमारे सदा करने वाले काम नहीं, वे तो हम करते हैं सदैव, और जो सदा करने वाला, उसको कहते, जी फिर कभी कर लेंगे। यदि इसको कहे, नाम जपा करो कहता - जी बूढ़े होकर जपेंगे। यह इसका काम है।

दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाइऐ पारो।
चरपटु बोलै अरधू नानक देहु सचा बीचारो। (प ष्ठ ६३८)

यह तो प्रश्न है चर्पट का। उसने क्या उत्तर दिया, एक ही था।

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नैसाणे।
सुरति सबदि भवसागर तरीऐ नानक नामु वखाणे। (प ष्ठ ६३८)

नाम जो आपको दिया, उसी ने रह जाना है, वह आपकी वृत्ति में बैठा है, तुम ने बाहर तो नहीं जाना। वह जो वृत्ति का साक्षी है 'द्रष्टा' उसी का नाम है, वही व्यापक है, कोई इसमें बल नहीं लगता, मांगकर कोई चीज़ भी नहीं लानी पड़ती। वृत्ति भी आपकी है और चेतन भी तुम्हारा अपना आप है। इसलिये यहां जुड़कर, इस रसना के साथ नाम गाया करो। गुरू अर्जुन देव महाराज कहते - इसको भूलना नहीं। यह आपके आधार का उपाय है। चलें -

सांति सहजु रहसु मनि ऊपजिउ

ये फल हो जायेंगे आपको इतने। ये तो सरल सीधी बातें हैं। टीका तो गुरू अर्जुन देव जी कर गये हैं, हम ने तो कहना ही है, उनकी कृपा से। नहीं तो हमें क्या पता है ? इस वाणी का कोई माप ले सकता है ? कोई पैदा हुआ है संसार में ? यह तो अनुभवी वाणी है, अथाह वाणी है। इस करके अब एक एक पढ़ भाई -

सांति सहजु रहसु मनि ऊपजिउ।

आपके मन में शान्ति आ जायेगी।

सगले दुःख पलाइण।। रहाउ।।

समस्त दुःख आपके दूर हो जायेंगे, तुम्हारे भीतर कोई भी दुःख नही रहेगा। वह जन्म-मरण का दुःख भी नहीं रहेगा। बड़ा दुःख तो यही है।

जो मागहि सोई सोई पावहि।

जो तेरा उस परमेश्वर के नाम जपते, जो संकल्प जो जायेगा, वह स्वयं ही पूर्ण हो जायेगा। ये तो ऐसे ही पागल लोग हैं, जो लोगों के पास दौड़े फिरते है, यदि वास्तविक बात करें। यदि यहां दृढ़ हो जाये तो समस्त कार्य बन जायें लेकिन इसको पता ही नहीं। ये चाहते हैं, शायद हमने अपनी चतुराई के साथ वश की है माया। माया तो परमेश्वर के अधीन है, उसकी खूशी है जहां भेजे।

सेवि हरि के चरण रसाइण।।

कहते - एक ही तुम्हारे लिये सेवा है, हरि के चरणों का ध्यान नहीं छोड़ना, कभी नाम नहीं छोड़ना। देवी-देवताओं ने सारे गुरू ग्रन्थ साहिब में।

सचु सभना होइ दारू पाप कढै घोड़।
नानक वरवाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।। (प ष्ठ ४६८)

सरब रोग का अउरबदु नामु।
कलआण रूप मंगल गुण गाम।। (प ष्ठ २७४)

दोनों यह बीमारियां हैं-

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इस माहि।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।। (प ष्ठ ४६६)

'हउमै' ऐसी बीमारी है, यह प्रतिदिन बढ़ती जाती है। यह बीमारी प्रतिदिन बढ़ती जाती है, इसको लोग बढ़ाते जाते हैं। दूसरी बीमारी तृष्णा हैं।

एह तिसना बड़ा रोगु लगा मरणु मनहु बिसारिआ। (प ष्ठ ६१६)

यह रोग, इन दोनों चीज़ों के साथ टूट जाने हं। सत्य के साथ और नाम के सुमिरन के साथ। जब तक नाम के साथ मन नही जुड़ेगा, इसके अन्तःकरण में पूर्ण सत्य नही आयेगा।

आदि सच जुगादि सचु।। है भी सचु नानक हासी भी सचु।। (प ष्ठ १)

उस पर भरोसा नहीं होगा तो कुछ कार्य नहीं होगा। फिर तो ऐसे भी भौकता फिरे चाहे न भौकता फिरे, इसका लाभ तो नहीं होगा। हम देखते हैं भई आपका जीवन ऐसा होना चाहिए। इन बातों का अभिप्राय ही क्या ? यह तो अभिज्ञता की बाते हैं। जब तक अभिज्ञ है -

परमेश्वर यास्ति सा पश्यति।

जिसने उस परमेश्वर को निर्लिप्त देख लिया, अपने आपको, वह आंखों वाला है, नही तो सब अंधे हैं। यह बात ही और है लेकिन यह महापुरूष की सत्संग के बिना काम बनने वाला नहीं, चाहे तुम कुछ कहो। यह कोई महापुरूष ही होगा। तुम देख लो गुरू घर का इतिहास पढ़कर -

जनम मरण दुहहू ते छुलहि।

वे दोनों जन्म-मरण से छूट जायेगा, जब नाम के साथ मन जुड़ गया। इसको अपने आपकी पहचान हो गइ, त्रिकुटी और साक्षी व्यापक की। फिर इसका जन्म-मरण कभी आत्मा का हुआ ही नहीं। यह तो न कभी जन्मता न कभी मरता है। जन्म-मरण वाले शरीर हैं।

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए।
जीअ दानु दे भगति लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए।। (प ष्ठ ७४६)

वे तो हरि के साथ मिलाप करा देते हैं। फीसा कर हुई कबीर की कृपा। मैं थोड़े में ही सुनाता हूँ। जुहाहा था, सारा गांव बिगाड़ दिया। जीता नम्बरदार था। उसने कहा जी वह सारा दिन गाता रहता है वे घीसा के शब्द। वह कहता घीसा नहीं 'घी' 'सा'। कहते घीसा न कहना उसको, कहता यह तो घी है बिल्कुल। उसके शब्दों में लिखा हुआ है। वे जीते के पास आये, वह लाठी लेकर चल पड़ा, सब चल पड़े। कहते - गांव से निकाल कर आना है उसको, जुलाहे को। घीसा कहता, उस जीता ने मुझे क्या निकालना है मैं उसको अपने घर पहुंचा दूंगा। आज तो घर पहुंचा कर छोडू और जब वह जीता सामने आया, उसने मारी दृष्टि, घीसे ने, जीते पर और सब कुछ फैंककर चरणों पर गिर पड़ा और नाम जपने लगा। जो वह घीसा जपता था। लोहा खेड़ा यमुना के किनारे पर है, नौ कोस पर जाकर ठहरा जीता। बस- इस प्रकार घीसा 'घी' 'सा' है मैंने वे गांव देखे हैं। यह है महापुरूषों का यश। लेकिन यह तो ऊंची बात है गुरू घर की। गरीब दास ने लिखा है एक स्थान पर अपने ग्रन्थ में -

नानकु दादू अगम अगाधू तेरी जहाज़ दे खेवट सही।।
सुख सागर ते हंसा आए भगति हदेवा ऊरथि गये।।

कहता - देखो एक एक वस्तु लेकर आये, प्रेमाभक्ति लेकर आये हैं जिस पर कृपा कर देंगे वह संसार का साझा व्यक्ति हो जायेगा। वह जहां जायेगा, वही उसका परिवार होगा और यहां रहे यहां परिवार दूसरी ओर जायेगा वहां परिवार। उसका अपना आप जो समस्त है। लेकिन यह बड़ी ऊंची बात है। यह संत की कृपा के बिना नहीं बनती। क्या आपको पता है बहतर व्यक्तियों के ताले खोले दादू ने और उसके तुमने व्यक्ति सवैये पढ़े होंगे और सुंदर दास के। वह था सरदार, वह नाम लेने आया, खच्चर पर सब कुछ लादा। दादू जी का शरीर स्थूल था, रंग के काले थे। वह आता था और दादू जी के एक कोपीन है और एक भूरी है वह शगुण लिये एक पंडित आ रहा था, पंडित कहता जी अपशगुण हो गया। वह कहता

क्या ? कहता - ये जो नग्न व्यक्ति मिल गया, वह मार्ग में दादू जी नग्न, कोपीन धारण लिये मिल गये थे न ! वह पंडित कहता, यह तो नग्न व्यक्ति मिल गया, अपने काम में विध्न पड़ जायेगा। वे कहते इसका कोई निदान ? कहता जी इसके सिर में जूते लगाकर निकल जाओ। उसने मान दी। वे जब आये वहां बैठे दादू के उेरे में उसने पूछा महाराज कहां गये हैं ? कहता जिधर से तुम आये हो, इध ार ही गये हैं। कहता - कैसे हैं ? कहता - एक भूरी है, एक कोपीन है, नग्न ही गये हैं। कहता रंग कैसे है ? कहता - काला। उन्होनें कहा ले भाई ! मारे गये, आये तो गुरू धारण करने के लिए, उल्आ काम हो गया। यह दादू के जीवन में लिखा हुआ है। जब दादू जी वापिस आये, हाथ पैर धोकर बैठ गये। वे बैठे थे, न जाने योग्य न बैठने योग्य। वे कहते बताओ भाई ! क्या बात है ? कहते महाराज ! बड़ा अपराध हो गया, बड़ा कुछ हुआ। वे कहते बात तो बताओ। कहते जी गुरू धारण करने आये हैं, अब इस योग्य तो हम रहे नहीं। उसने कहा - ओये - दो पैसे की लेते हैं हांडी, कितनी बार ठोक कर देखते हैं और सम्पूर्ण आयु के लिए गुरू धारण करना है, अच्छा किया ठोंक बजाकर देख लिया। समझ गये? क्यों ? यह महापुरूष की पहचान है। गुरू नानक जहां गये सारा जीवन लो उनका कोई आदर तो नहीं किया, और फटकारें सहन की। क्यों ? वे पूर्ण गुरू थे। यह बहुत कठिन बात है, मन जुड़े बिना काम ही नहीं चलनाचच। जब इसका मन सुमिरन में जुड़ गया, परमेश्वर के साथ एक हो गया, परमेश्वर के चरणों के साथ जुड़ गया तो वह कहता इसका जन्म-मरण काटा जायेगा।

भवजलु जगतु तराइण।।

यह संसार सागर में से पार हो जायेगा और लोगो को पार करने वाला हो जायेगा।

खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोबिंद पराइण।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।।

एक ही बात है। हमने यह खोजकर सारा सिद्धान्त निकाल लिया यदि तुम अविनाशी पद की, अपने स्वरूप की प्राप्ति करना चाहता है तो सदैव **'सुमिरन'** कर। **'सुमिरन'** न कभी आपका बंद हो जाये, एक क्षण भी, लेकिन माया की प्रबलता, मन को आकर्षित कर लेती है, सुमिरन का पता ही नहीं रहता, कही है कि कही नहीं है है। इसका एक ही मुख्य कार्य है **'सुमिरन'**। **'सुमिरन'** न भई छोड़ना। जो आपके गुरू ने मंत्र दिया है उसका **'सुमिरन'** न छोड़ना। उसकी ओर भी न देखना गुरू की ओर, भई गुरू कौन सा ? नाम तो ठीक है, वह जो तुम्हे नाम दिया, वह तो परमेश्वर का है, वह तो परमेश्वर के पास लेकर जायेगा। वह नहीं छोड़ना कभी। दशम् पातशाह का आता है न ! क्यों ? बंद कर दें। अच्छा समाप्त कर देते हैं।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

८

सोरठि महला - ६

प्रीतम जानि लेहु मन माहि।
अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ।
काहू को नही।। रहाउ।।
सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत
रहत चहू दिसि घेरे।
बिपति परी सभ ही संगु छाडित
कोऊ न आवत नेरै।।१।।
घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ
सदा रहत संग लागी।
जब ही हंस तजी इह कांइआ
प्रेत प्रेत करि भागी।।२।।
इह विधि को बिउहारू बनिओ है
जा सिउ नेहु लगाइओ।
अंत बार नानक बिनु हरि जी
कोउ काम न आइआ।।३।। (प ष्ठ ७४६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु।

शब्द अखण्ड पाठ के बाद, गुरू नौंवे पातशाह द्वारा ईश्वरीय वाणी का जो आया है यह उस महापुरूष द्वारा आया, जिसने संसार में धर्म की रक्षा की। धर्म की रक्षा, बड़ा महापुरूष ही कर सकता है, नहीं धर्म की रक्षा, कोई कर नहीं सकता। धर्म की रक्षा अंत तक 'सिर' तक होती है, जब यह सिर तक पूर्ण रक्षा कर जाये उसको धर्म रक्षक कहते हैं। वह धर्म के श्वेत चार होती है, उस पर कोई दाग़ नहीं लगा होता, धर्म की रक्षा सामूहिक होती है। अपने कुल की, अपनी जाति की, अपने पंच धर्म की नहीं रक्षा। यहां जाकर बहुत महापुरूष जब पंथ में और धर्म में जाते हैं, ठोकर खा जाते हैं। लेकिन संसार में क्षमाशील परमेश्वर का, पूर्ण महापुरूष कोई ही होगा, जो सामूहिक धर्म की रक्षा करे। सांझा धर्म क्या है ?

सरब धरम महि स्रेसट धरमु। हरि को नामु जपि निरमल करमु।

(प ष्ठ २६६)

सांझा धर्म संसार का यही है, सबसे बड़ा धर्म, श्रेष्ठ धर्म, उत्तम धर्म यही है। क्या ? **'हरि का नामु जपि'** हरि के नाम का जाप नहीं छोड़ना। **'निरमल करमु'** कर्म निर्मल करने हैं, शुद्ध कर्म तुम्हे पता है कि कौन से होते है ? जिसमें अपना स्वार्थ कोई न हो। कोई अपना गुप्त तात्पर्य न हो, वह होता है शुद्ध कर्म, जिसमे लेशमात्र भी स्वार्थ न हो, मलतब न हो। बताओ श्री गुरू तेग बहादुर, नौंवे पातशाल को इसमें क्या लाभ था ? औरंगजेब में एक पूरी ज़िद आ चुकी थी, भई दो से एक कर देने से रोज़ का मैं झगड़ा समाप्त करके जाऊंगा। सब को वह अपनी बुद्धि के अनुसार कहता था यह बात, मैंने मोमिन बनाने हैं, फिर नहीं कोई छोड़ना। वह मुसलमानों को मोमिन कहता था, भई ये ठीक (मोमिन) हैं, शेष सब लुटेरे हैं, बुतपरस्त ने और काफिर हैं। इसलिये मैं मोमिन बनकर जाऊं। जब यह बात आई, सबसे अधिक कश्मीर पर कष्ट आया। कश्मीर पहाड़ जो है वह कश्यप ऋषि का है। उस पहाड़ पर कश्यप ऋषि बैठे थे। वे सब कश्यप की संतान है। इसलिए उस ऋषि की संतान होने के कारण ब्राह्मण कहते थे सब को। इसलिये, जब उनको, उसने पकड़। भई जनेऊ तोड़ दो और इनको मुसलमान बना दो। उन ब्राह्मणों को बहुत कष्ट हुआ इस बात की। वे अमरनाथ जाकर, अमरनाथ एक तीर्थ है कश्मीर में, मैं भी वहां गया हूँ, देखा है गुफ़ा है। वहां पहुंचे ब्राह्म, प्रार्थनायें की, अरदासे की, जो संसार में माने जाते थे, उन के पास गये भई ! हमें बचाओं, हमारा हिन्दू धर्म बचाओ, हमारे हिन्दू धर्म की रक्षा करो, किसी प्रकार रक्षा करो। किसी का भी साहस न पड़ा, औरंगजेब का सामना करने का। वह

विश्व का बादशाह था। बादशाही कर्मों के अनुसार मिलती होती है। यह कोई इश्वरीय वस्तु नहीं होती। कर्म जो होता है।

करमा उपरि निबडै जे लोचै सभु कोइ।। (प ष्ठ १५७)

इसका जो कर्म होगा, उसके अनुसार निर्णय होगा। क्यों निर्णय होगा ? तुम्हे पता है ? तुम्हारे भीतर वह बैठा है। कौन बैठा है ? जो आपके मन के भीतर है।

प्रीतम जानि लेहु मन माहि।।

वह जो आपका अत्यन्त प्यारा, वह आपके मन के भीतर है। **'अपना आप'** सबसे प्यार होता है। इस बात का एक दृष्टांत लिखा हुआ है। वह कहता जी - अपना क्यों प्यारा होता है ? इसका कोई दृष्टांत बालक प्यारे हैं, बालिकायें प्यारी हैं, स्त्री प्यारी है, भूमि प्यारी है, घर प्यारा है, उसने एक दृष्टांत दिखाया - भई एक स्थान पर बंदरों को इकट्ठा कर दो बच्चो सहित, फिर वहां पानी भर दो। वे बंदर जब डूबने लगे, वे अपने बच्चों को पैरों के नीचे लेकर खड़े हो गये। इसलिये वह 'अपना आप' सबको प्यारा था भई हम बच जायें अन्य सब कार्य हो जायेंगे। इसलिये वह 'अपना आप' जो है वह प्रीतम है, परमेश्वर है।

घटि घटि मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।
कहु नानक तिह भजुमना भउ निधि उतरहि पारि।। (प ष्ठ १४२७)

तुम्हारे हृदय के भीतर परमेश्वर का निवास है। सुमिरन के साथ इसने प्रकट होना है।

सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ।
कलि कलेस तन माहि मिटावउ।
सिमरउ जासु बिसुंभर एकै।
नामु जपत अगनत अनेक।
वेद पुरान सिंम्रिति सुधारण्यर।
कीने राम नाम इक आरण्यर।
किनका एक जिसु जीअ बसावै।

ताकी महिमा गनी न आवै। (प ष्ठ २६२)

वह तुम्हारे हृदय में निवास करता है।

प्रीतम जानि लेहु मनु माहि।

वह 'अपना आप' इतना प्यारा है। उन कश्मीरी पंडितों को किसी ने कहा, भई श्री गुरू नानक देव जी की गद्दी पर नौंवे पातशाह, धर्म के स्वरूप हैं, उनके पास जाओ, वह एक पूर्ण गद्दी है। अब पूछो गद्दियां तो अनेक थी यह पूर्ण क्यों थी ?

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।। (प ष्ठ १४०८)

वह ज्योति स्वरूप स्वयं आया था संसार में। गुरू नानक को किसी ने गद्दी नहीं दी, किसी ने गुरू नहीं बनाया। उन्होंने लहणा को अगंद बनाकर गुरू बनाया है। गुरू नानक को किसी ने गुरू बनाया है ? वे तो धुर से जगत् गुरू थे। वे ध ुर से आये हुये थे। इसलिये जो धुर से आया होता है, उसमें शक्ति भी पूर्ण ही होती है, वे तो ज्योति स्वरूप थे। इसलिये वे सारे चलकर कश्मीर से गुरू साहिब के चरणों में आये भई हमारे धर्म की तुम रक्षा करो। हम कई स्थानों पर भटक चुके हैं, लेकिन हमारा बना कुछ नहीं। जब वे आये, उन्होंने यही बात कही, भई औरंगज़ेब को कह दो जाकर, भई हमारा गुरू है नौंवा पातशाह गुरू तेग बहादुर उनको तुम मुसलमान बना लो हम सब बन जायेंगे। जब यह बात औरंगज़ेब के पास गई, वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा, अन्ति तो राज गद्दी है, मैं वज़ीर तक कहूंगा यदि वे न माने, मैं कहूंगा इस गद्दी पर बैठ जाओ। फिर तो मान जायेंगे, ऐसा हुआ भी। गुरू साहिब गये, उसने कहा औरंगज़ेब ने, जी आप इस्लाम स्वीकार कर लो, इस्लाम सत्य है, अन्य सब झूठे हैं। गुरू साहिब कहते, यह परमेश्वर को स्वीकार नहीं है। तुम जो काम करते हो यह जीव कृत है, ईश्वर कृत नहीं है। वह कहता - जी हमें कैसे पता लगे ? गुरू साहिब कहते- एक मन आप मिर्चें मंगाये, उनको आग लगाओ, सामने जलाओ। वही काम औरंगज़ेब ने कराया। छानों, वे छानने पर तीन मिर्चें निकली। गुरू साहिब कहते - इनको जो

आग से शेष रखा है, किसने शेष रखा है ? औरंगज़ेब कहता, खुदा ने। फिरयह तीन क्यों हैं ? औरंगज़ेब कहते -खुदा को तीन मंजूर हैं, तुम तो दो से एक करना चाहते हो, लेकिन भगवान ने तो तीन करने हैं। वह कहता इसका क्या मतलब? कहते मुसलमान है, कहता है हिन्दू है ? क्हता है ? एक कहते सिक्ख भी होगा। वह कहता - कौन बनायेंगा ? कहते वह हमारे सम्बन्ध से आयेगा। उसके साथ हमारा पुराना सम्बन्ध है। उसने यहां पातशाही करनी है, विश्व की रक्षा करनी है और वह यहां एक तीसरा पंथ भी बनायेगा। यह तुम देख लो, हम सामने दिखतें हैं तीन। यह दशम् पातशाह ने भई कन्हैया को कहकर, तीनों को ही पानी पिलाया क्यों ? उसे पता था ये तीनों भगवान की चीज़े हैं। कोई ऐसा नही हैं। ये मुसलमान परमेश्वर को नहीं, हिन्दू परमात्मा के नहीं। ये तीनों ही परमेश्वर के बनाये हुये हैं। उस परमेश्वर की वस्तु तो सब की सांझी होती है। यह तुम देखते हो न।

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वसना कउ साझा। (प ष्ठ ७४७)

यह तो तो सब की सांझी वस्तु एक होती है, यह सब की सांझी होती है। इसलिये जब औरंगज़ेब ने कहा - कहां तक पहुंचा, तुम्हें पता है ? अपना शीश दिया, धर्म की रक्षा कर गये। हिन्दू भी, मुसलमान भी है, और सिक्ख भी हैं। जो गुरू साहिब ने कहा - वे तीनों हैं। यह महापुरूष को पता होता है, जो आते होते हैं भई यह क्या बनना है, क्या नहीं बनना ? गुरू तेग बहादुर साहिब गये, जब वे साबो को तलवण्डी पहुंचे, तो डल्ले के पिता ने उनकी बड़ी सेवा की। उनका शिष्य बन गया। उन्होंने कहा - हम तो भाई। बाहर रहेंगे। उसने कहा - चलो जी ! मैं स्थान बताता हूँ। बहुत अच्छी है। वह जहां अब तख्त दमदमा साहिब है। उन्होंने कहा - न ! हमारा मंजी वहा डाल दो, नौंवे पातशाह कहते। वह अब नौंवे पातशाह का गुरूद्वारा भी साथ है, लेकिन नीचा है अब तो कुछ ऊंचा जैसा जो गया लेकिन वह स्थान नीचे था। गुरू नौंवे पातशाह कहते, वहां डाल दो। उसने कहा नहीं जी, यहां डालना ऊंचे स्थान पर। तुम्हें नहीं पता, यह हमारा स्थान नहीं। उसने चारपाई डाल दी नीचे स्थान पर, वे बैठ गये। कहते - जी यह किस का स्थान है ? डल्ले के पिता ने कहा। नौंवे पातशाह कहते उन्होंने आना है यहां। जब फिर दशम् पातशाह गये, डल्ले पहले ही मिल गया था आकर, वह लेकर गया। वह डल्ले के पिता ने डल्ले को बात बताई हुई थी, भई एक महापुरूष ने यहां आना है, मुझे इतना पता है, मेरे गुरू कह गये, अन्य नहीं पता कुछ। दशम् पातशाह ने आकर उस स्थान पर मत्था टेका, जहां नौंवे पातशाह बैठे थे लेकिन आप वहां बैठे ऊंचे स्थान पर, वह जहां अब तख्त दमदमा साहिब है, आप वहां बैठे। डल्ला समझ गया, यह वही महापुरूष है, जिसको मेरे पिता जी कहते थे, उनको बड़ी श्रद्धा थी। इसलिये जो महापुरूष, पूर्ण महापुरूष, अवतार आते हैं इनमें पूर्ण शथ्कत होती है। धर्म के लिए शीश दे दिया।

तिलक जवु शरवा प्रभ ताका।।
कीनो बड़ो कलू महि साका।।
साधनि हेति इति जिनि करि।।
सीस दीया पर सी न ऊचरी।। (बचितर नाटक)

उन्होंने ने धर्म की रक्षा की। वह एक महापुरूष धर्म की रक्षा के लिये आया था। वह एक महात्मा था। तुम कभी पढ़ोगे न ध्यान से सारे गुरूओं ने एक कार्य किया। गुरू अंगद देव ने अक्षर बना दिये। तीसरे पातशाह ने 'पंगत' एक बना दी। वे समस्त ऐसे जैसे काम करके गये, लेकिन क्यों ? क्योंकि वह ज्योति एक थी, लक्ष्य एक था।

जोति ओहा जुगति साइ
सहि काइआ फेरि पलटीऐ। (प ष्ठ ६६६)

ज्योति वही थी, युक्ति एक थी, लेकिन काया परिवर्तित हुई थी।

नानक अंगद को बणुधरा।।
धरम प्रचारि इह जगमों करा।। (बचितर नाटक)

उस गुरू नानक ने, उस ज्योति ने अंगद में बैठकर, धर्म का प्रचार संसार में किया। धर्म-विद्या निर्मित की (भाषा-लिपि) जिसको गुरूमुखी कहते हैं क्योंकि वह गुरू के मुख से निकली इसलिये गुरमुखी कहते हैं। पहले हम डेरों में यह बात देखते थे, जब लिखते थे न सुहारनी, फिर उसको ऐसे करके, फिर मत्था टेककर

उठते थे। आजकल तो कोई परवाह नहीं करता, आजकल तो पत्थरों पर लिख देते हैं, लोग पास से निकल जाते हैं, वे बातें तो रही नहीं है, अब। वह समझ नहीं आई न। इसलिये उस महापुरूष द्वारा जो वाणी आई, अब आप सुनो -

सोरठि महला ६।।

सोरठ राग में नौवें पातशाह महाराज कथन करते हैं -

प्रीतम जाति लेहु मन माही।।

जो सबसे प्रिय वस्तु है।

किनका ऐक जिस जीअ बसावै।।
ताकी महिमा गनी न आवै।। (प ष्ठ २९२)

वह तुम्हारे हृदय में कोई है - ज्योति।

सब महि जोति जोति है सोइ।।
तिसदै चानण सभ महि चानण होइ।।
गुर साखी जोति परगटु होइ।। (प ष्ठ १३)

यदि आपके हृदय में ज्योति न हो तो पाप पुण्य का आपको पता ही न लगे। वहां तो प्रकाश ही नहीं है, तुम्हे देखता तो नहीं कोई। जब आप चोरी करते हैं, ठग्गी करते हो, बेईमानी करते हो अथवा मनोराज्यच में विचरते हो, मन में बैठे चिंतन करते हो भई वह बुरा, वह भला।

नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।। (प ष्ठ १४४)

वह तो तुम्हारे खोट खेट संकल्पों को टाइम करता है वह स्वयं नहीं है परमेश्वर ? वह आपके हृदय में बैठकर करता है कि कहीं और करता है ? अन्य तो कोई स्थान नहीं, अन्य स्थान पर बैठकर क्यों नही करता ? अन्य कहीं बैठकर नहीं वह 'घट घट मैं हरि जू बसै' वह हृदय में बैठकर नहीं टाइम करता तुम्हारे पाप-पुण्यों को ? आप यह बताओ ? जो आपके कर्म किये हुये हैं, वे शुभ कर्मों को तुम चाहते हो, बुरों को तो नहीं चाहते। एक व्यक्ति यहां से बीस बार लांघता है, एक दिन ऐसा होता है वह फिसल कर गिर पड़ता है और उसकी टांग टूट जाती है। वह तो प्रतिदिन लांघता था, आज क्या हो गया ? कोई भीतर बैठा है जो कर्मों की गति को चलाता है, सर्वज्ञ है। यदि आपके कर्म, आपके हाथ में हो तो बुरों को बाहर फैक आओ अथवा दबा आओ, शुभ-शुभ को संजोकर रख लो, चतुर तो तुम बहुत हो। लेकिन ईश्वर के सम्मुख चतुरता काम नहीं आती, वह अन्तर्यामी है।

राखा ऐकु हमारा सुआमी।। सगल घटा का अंतरजामी।। (प ष्ठ ११३६)

अब तुम उसे ढूंढ़ोगे कैसे ? ऐसे बताओ, कोई आपके पास रहता है, वहां पहुंचने का ? जो आपके हृदय में बैठा है, वह तुम्हे मिल गया, वह ज्योति स्वरूप? वह एक मस्तुआने वाले संत हुए हैं, मैंने उनका कीर्तन सुना है छोटी आयु में। उनका कीर्तन बहुत अच्छा था और बड़ा सादा था और बड़ा सच्चा था। उन्होंने वह सवैया पढ़ा और सवैया पढ़कर सवद्दी वालों की हवेली में लुधियाना, उन्होंने यह धारणा लगाई -

जपो खालसा जी सारे नागदी जोत नूं।

पहले स्वयं बोलते थे, फिर लोग बोलते थे, फिर मातायें बोलती थी। उस समय ऐसा पुराना रिवाज था, खेस (चादर) बीच में बांधते थे। मातायें इधर और पुरूष इधर। मैं वहां बैठा, अन्य भी मेरे साथ थे। उन्होंने कहा, खालसा जी, तुम जागृत ज्योति के उपासक हो, कहीं भूलकर अन्य ओर न चले जाना। बड़ी सादी एवं सच्ची बात थी। अब वह ज्योति तो तुम्हारे भीतर है।

सब महि जोति जोति है साइ।। (प ष्ठ १३)

वह जो 'जोति' है वह सब में नहीं है ? वह तो 'घट घट मै हरि जू' है। वह ज्योति तो प्रकाश है, रोशनी है, ज्ञान है। वह ज्ञान आपके हृदय में ज्ञान-स्वरूप परमेश्वर नहीं बैठा ? तुम मार्ग ही नहीं पड़े। तुम्हारा मन नाम के साथ जुड़ गया? तुम सत्य बताना, आपका मन, नाम के साथ जुड़ गया ?

नाम संगि जिसका मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प ष्ठ २८१)

लेकिन तुम तो -

नामु संगी सो मनि न बसाइओ।
छोडि जाहि वाहु चितु लाइओ। (प ष्ठ ७१५)

'नाम संगी' के साथ तुमने मन को नहीं जोड़ा तो नामी के समीप कैसे पहुंच जायेगा ? कोई है आपके पास उपाय ? जब तक तुम नाम के साथ मन नहीं जोड़ोगे, नाम तक नहीं पहुंचोगे। नामी तो तुम्हारे भीतर बैठा है और नामी तो तुम स्वयं ही हो। वह चेतन एक है, दो तो है नहीं। वह तो 'घट घट में हरि जू' है।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।
ताते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।। (प ष्ठ १४०८)

वह जो गुरू साहिब आये संसार में ज्योति स्वरूप, वे जगत् गुरू कहलाये और जगत गुरू ने सच्ची शिक्षा दी। जितने भ्रमित के **कौड़ा, बली कंधारी**, तुम कितने गिनोगे ? सब को शिक्षा दी और सब उनके शिष्य बने, हिन्दू, मुसलमान सब बन गये। क्यों बने ? क्योंकि वे ज्योति को पहचानते थे। इसलिए वह 'जोति रूपि हरि आपि' है।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।। (प ष्ठ १४०८)

उन्होंने एक साथ मिलाया। आया था न !

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ।
कलि कलेस तन माहि मिटावउ। (प ष्ठ २६२)

वे कहते फिर कैसे मिटे ? वह कहता -

सिमरउ जासु बिसुंभर एकै, नामु जपत अगनत अनेकै। (प ष्ठ २६२)

वह जो विश्व का भरण पोषण करने वाला, संसार की उत्पत्ति पालना, लय करने वाला है, उसका सुमिरन करो। अनेक उसका सुमिरन करके पार हो गये।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (प ष्ठ २६५)

बस ! सुमिरन न छोड़ना। वह सुमिरन तुम्हे वहां पहुंचा देगा। निष्काम कर्म और निष्काम सेवा ने आपका मन शुद्ध करना है और सुमिरन तुम्हें वहां पहुंचा देगा। उसको तुमने जानना है। वह नौंवे पातशाह कहते हैं -

प्रीतम जानि लेहु मन माही।।

हमने उस प्रीतम को अपने मन में अष्टम् पातशाह की कृपा से जान लिया। वे ज्योति स्वरूप हैं दिल्ली वे बैठे हैं, इसलिये रामराय असफल हो गये और गुरू गद्दी वहां चली गई। आकर उपदेश भी नहीं उस समय दिया। वह तो व्यापक था, वह सबके मन में बैठा था।

मन तूं जोति सरूपु है आपणा भूलु पछाणु। (प ष्ठ ४४१)

हे मन ! तुम ज्योति स्वरूप तो हो, लेकिन ज्योति तुम्हारे भीतर प्रकट हो तब। यह तुम अपने प्रकाश को ढक लो, दीपक को, आपके सारे घर में अंधेरा छा जायेगा। वह ज्योति तो आपके आवरण के साथ ढ़की हुई है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये सब ढ़कने वाले हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये ढकने वाले हैं। मनोराज्य तुम प्रतिदिन करते हो। यह तुम अपने भीतर देखो, जब आप एकांत होते हो, क्या सोचते हो ? भई कोई इतनी बन गई और इतनी बना लेंगे, ऐसे करेंगे और यह करेंगे। इतने में आपका समय निकल जाता है, फिर कोई अन्य काम आ जाता है। कभी नाम के साथ भी मन जोड़ा है कभी? क्या भैंसे, गाय ही गिनते रहते हो ? इसलिये भाई !

प्रीतम जानि लेहु मन माही।।

वह जो सब से प्रिय परमेश्वर है, उसको अपने मन के भीतर, नौंवे पातशाह कहते, जान लो ! हमने जान लिया है। हाँ -

अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ।

वे कहते - जी संसार का झगड़ा नहीं समाप्त होता, यह तो स्वार्थ है आपका, जहां से आपका सुख निकलता है, उसके साथ बातें करते हो, तुम ऐसे करना, मैं ऐसे करूंगा, तुम झूठ बोल जाना, मैं सत्य बोल दूंगा, तेरा कार्य हो

जायेगा। वे कहते, यह तो व्यर्थ बात है, यह तो लोगों के साथ तुम पुनः पढ़ सारी पंक्ति -

अपने सुख सिउ ही जगु फाधिओ

अपने सुख के साथ यह संसार जकड़ा हुआ है कि अन्य किस के साथ जकड़ा हुआ है ? तुम आठों याम अपने सुख की पूजा करते हो कि परमेश्वर की पूजा करते हो। सुख बनाते हो, भई इतना सुख एकत्रित कर लिया और इतना। वह परसों-तरसों मुझे एक कहता लो जी दो पीढ़ियों तो हमारी हो गई - भविष्य के लिए ठीक यह नहीं समाप्त होते अब। मैंने कहा कि इसको यह नहीं पता कि कल क्या होना है ? वह कहता दो पीढ़ियों की अब कोई चिंता नहीं, आगे जो हो सो हो। उसने अपना काम कर लिया, भई इतनी मैंने माया अर्जित कर ली है, इनसे समाप्त नहीं होगी। इसको यह नहीं पता कि शराब पीने लग गया तो सब ही समाप्त कर देगा। इस प्रकार यह जीव भूला हुआ है।

अपने सुख सिउ ही जगु फाधिओ

जीव भूला हुआ है, यह सुख में बंध गया है, स्वार्थ में बंध गया। वह स्वार्थ की ही बातें करता रहता है।

को काहू को नाही।।

और कोई किसी न नहीं। इसी श्लोक में ही अंत में बताना है।

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ काभि न आइओ।। (पृष्ठ २६५)

वे कहते - अंत में इसके कोई काम न आया। अब इसके पास धर्म नहीं था, दया नही थी, सत्य नहीं था तो गुरू साहिब पंचम पातशाह ने यह लिखा -

सतु सतोरतु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई।। (पृष्ठ ८२२)

यह शिक्षा हमने गुरू रामदास से ली है। सत्य बोलना संतोष रखना, दया करना, धर्म करना और अन्तःकरण को राग द्वेष से पवित्र रखना। किसी की बात नहीं सुनना, उसे वहीं रखना। यदि आप लोगों की बात सुनकर भीतर रख लोगे तो भजन किस समय करोगे ? वे एक हमारे साथ जीवन मुक्त जी संत होते थे, बड़े महापुरूष उसका एक संत आकर कहने लगा जी फलां ऐसा है, अमुक ऐसा। वे कहते, तुम मुझे क्या समझते हो ? वह कहता जी मैं आपको ईश्वर समझते हो, ईश्वर के भीतर कूड़ा फैकते हैं ? कहते - कूड़ा क्यों फैकते हो हमारे भीतर? वह बात ऐसी ही करता था फलां नीच, अमुक उत्तम। वह समझ गया। वह कहता - जी मैं आज से नहीं करूंगा, मैं भूल गया, मेरी बड़ी गलती है। फिर वह मेरे पास आ गया। मैंने कहा, तुम तो बड़ी बातें करते थे, आज नहीं बोलता ? वह कहता अब नहीं बोलने योग्य रहा। मैंने कहा बात क्या है ? कहता बात यह है मैं जीवन मुक्त जी के पास गया था। मैंने उनको सुनाया, फलां संत ऐसा है, अमुक अच्छा फलां बुरा है। वे कहते तुम मुझे क्या समझते हो ? मैंने कहा - जी मैं आपको ब्रह्मज्ञानी, ईश्वर समझता हूँ। फिर कहता, यह कूड़ा हमारे भीतर क्यों फैकता है, इसको कौन साफ करेगा। यह मुझे उसने समझाया, साथ तो तुम हमारे अन्तःकरण को ढ़कते हो, अन्तःकरण ये चेतन है, आत्मा है, परमात्मा है, हरि है। साथ तो इसके सिर पर कूड़ा डालते हो, साथ में हामरी बुद्धि भ्रष्ट करते हो। वह कहता, अब नहीं मैं बोलता, मुझे तो आज ही पता लगा है, यह तो गलत ही बात है। इसलिये भाई ! सारे अपने सुख के लिए संसार में फंसे बैठे है, वैसे कोई नहीं किसी के साथ फंसा हुआ। हाँ वह जो आपने पैसे एकत्रित करके जाओगे अपने बच्चों के लिए, वह कोई संसार में पर-उपकार नहीं है। पता नहीं आपने कैसे कमाया है। इसलिये **'आपने सुख सिउ ही जगु ढाधिउ।'** चले -

सुख मैं आनि बहुतु मिलि बैठत

जहां विश्व का सुख हो, वहां आकर सब बैठ जायेंगे। यहां खाने-पीने को भी मिलेगा बहुत अच्छा है, यह काम भी कर देता है। कहते - सब मिलकर के इकट्ठे बैठ जायेंगे।

रहत चहू दिनि घेरै।।

रात दिन कभी उसको खाली नहीं होने देते। एक नामधारी हुये हैं - राम सिंह बड़े महापुरूष। उनका बड़ा यश हुआ। उनको किसी ने पूछा तुम कितने सुखी हो ? वे कहते मेरा जितना दुःखी कोई नहीं। वे कहते क्यों जी ? वे कहते पेशाब

करना भी बन्द कर दिया लोगों ने, इतनी भीड़ रहती है, रोटी खाने का समय नहीं मिलता है। मैं चाहता हूँ भई राम नाम का जाप करना परमेश्वर वाहिगुरू का नाम जपा करूं, कहते दुनिया नहीं छोड़ती है। बात तो उनकी सत्य थी। इसलिये भाई! चारो दिशाओं से ये अपने सुख के लिए संसार घेर कर रखता है। वह तुम्हारे पास कोई परमेश्वर लेने तो नहीं आते होते। लेकिन संसार के दुःखों के लिए हमारा यह काम कर दो, दूसरा कहता जी यह कर दो, कहते चारो ओर से उसको घेर कर रखते हैं।

बिपत्ति परी सब ही संगु छाडित।

यदि परमेश्वर की ओर से कोई ऐसा काम आ जाये। कर्म तो परमेश्वर ने भुगताना है, आपने अपना कर्म आप तो भुगताना नहीं, वह जो आपके भीतर घट घट मैं हरि जू हैं, उसे डोर संचालित करनी है, फिर उस कर्म ने आप के आगे आ जाना है, किसी की शक्ति नहीं, उसको हटा दे, बिना परमेश्वर के। इसलिये फिर वह क्यो ? पढ़ फिर-

बिपत्ति परी सब ही संगु छाडित।

कहता पुराना मित्र था, यह कुछ मांग लेगा। मैं आपको एक 'मालो दौद' की बात बताता हूँ। वहां एक व्यक्ति था, वह अपने आपको परोपकारी जैसा कहलाता था, कुछ उसके पास रूपये थे। उन दिनों रूपये थोड़े ही होते थे। वह दूसरे के काम में सहायता कर देता था। वह ऐसा समय आ गया, अफीम खाते खाते उसके सभी रूपये समाप्त हो गये। कीकर के ऊपर उसने डिब्बी में देखा कि मावा (अफ़ीम) नहीं है। वह अपने पुत्र को कहने लगा, मालो दौद को जल्दी दौड़ा। पुत्र कहता जी, घर में पैसा तो कोई है नहीं। कहता - फलां से ले लेना। वह गया, उसने उससे पैसे मांगे। वह कहता - हमारे पास तो भाई ! इस समय है नहीं । क्योंकि उसको पता था भई अमली (अफ़ीमची) देता तो होता नहीं दोबारा। वह जो दोबारा खेत में गया, बाप कहता क्या बात है ? वह कहता जी यह बात है। वह कहता (अमली) ओये सुंदरा ! तुझे भी जवाब देने वाले हो गये, अहंकारी था न ! उस खेत में हल चलाया हुआ था, वहीं बैठ गया। अपने को कहता, वह है श्मशान घाट। देखना ! किसी को बुलाकर हाथ लगा ले। जोड़ी (बैलों की) के पीछे लगाकर वहां ले जाना। वही वह पड़ गया। लेकिन दूध, घी, खाता रहा, ठीक हो गया। समझ गये ? वे सारे छोड़कर चले गये, जवाब दे दिया। गुरू साहिब कहते - जब यह किसी काम का न रहे तो इसके समीप भी कोई नहीं आता। अगला कहता - ओये ! इधर की ओर लांघ जा, उसने रूपये मांगने हैं, पिछली लिहाज़ है, दोबारा देने नहीं, इधर से निकल जा। कोई समीप नहीं इसके आता। उस समय इसको पता चलता हैख भई यह समय भी कर्म मेरा था।

करमा उपरि निबडै जे लोचै सभु कोइ।। (प ष्ठ १५७)

करम प्रधान बिस्व करि राखा।

जो जस करड़ सो तस फलु चाखा।। (रामायण)

तुलसीदास कहते, यह संसार कर्म का बनाया हुआ कर्म प्रधान है।

करम प्रधान बिस्व करि राखा

'विश्व' नाम है संसार का। यह कर्मों द्वारा निर्मित है सारा संसार। ज्ञान ने तो संसार नहीं बनाना, ज्ञान तो संसार को गिरा देगा।

जो जस करै सो तस फलु चाखा।।

जैसा जैसा इसने कर्म किया, उसका फल इसको अवश्य चख़ना पड़ेगा, कभी चख़ना पड़े। वह कर्म इसके पास ही फल देकर जायेगा। इसलिये, इसको पता नहीं लगता। कहता फिर कोई समीप नहीं आता जब इस प्रकार का कर्म आता है। अब तुझे पता लग गया यदि तेरे पास पैसे होते आज, तेरे पास सब आते और अब कोई समीप नहीं आता। तुम्हे पता नहीं लगा, भई संसार का स्वार्थ का है, मतलब की है। चलें-

कोउू ना आवत नेरै।।

कोई इसके समीप नहीं आता।

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउु।

कहता - सबसे हित अधिक तो अपनी स्त्री के साथ ही होता है, बड़ा हित थी।

सदा रहत संग लागी।।

सदैव साथ रहती थी, मंत्री थी, यह बादशाह था, स्त्री मंत्री थी, वह साथ रहती थी। सलाह देती थी।

जब ही हंस तजी इह काइआं।

जब इस जीव ने हँस ने काया त्याग दी।

प्रेत प्रेत करि भागी।।

समझ गये ? यहां तक संसार का लेन देन है। बस ! संसार का लेन देन यहां तक है, आगे नहीं है, यहां तक था और वह नौंवे पातशाह ने समस्त संसार का सांझे धर्म की रक्षा की। फिर वह महापुरूष हुए - पूर्ण कि न हुये ? और हम इधर गये नहीं। अब तुम देखो, हम कैसे हैं ? अपने भीतर आप ही देखो, तुम कैसे हो ? तुम्हारे नक्शा तो सम्मुख है मन में, तुम स्वयं ही देख लो।

प्रेत प्रेत करि भागी।।

बस ! वह भी साथ छोड़ गई।

इह विधि को बिउहारू बनिओ है

इस प्रकार संसार का व्यवहार है भाई ! इसमें न फँस जाना संसार में। ऐसा है और इतना ही है संसार का व्यवहार। इससे अधिक या कम नहीं है।

जा सिउ नेहु लगाइओ।।

जिसके साथ तुमने प्रेम लगाया हुआ था। प्रेम तो तुमने प्रभु के साथ करना था।

साचु कहौं सुन लेहु सबै
जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो। (अकाल उस्तत)

दशम् पातशाह कहते - ओये यदि तुम मोक्ष की इच्छा रखते हो तो प्रभु के साथ प्रेम डाल ले और तुम अब स्वयं देखों, तुम्हारा प्रेम कहां है ? तुम अपने आप देखो, अपने अन्तःकरण को। आपको प्रेम तुम्हे पता है कहां है, परमेश्वर के साथ है कि संसार के साथ है ? बस ! यदि संसार के साथ है तो जहाज़ मार्ग में ही डूबेगा। चलिये -

अंत बार नानक बिनु हरि जी।

इसके ये गुरू नौवे पातशाह कहते, अंत में हरि के बिना कोई काम नहीं आता। एक परमेश्वर अंत में मोक्ष प्रदान करने वाला था, कृपा करने वाला था, दया करने वाला था।

अजामल पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा। (पृष्ठ ६३२)

लेकिन यदि आप के पास नाम होगा तो नामी आपकी रक्षा करेगा। यदि नाम न हुआ तो संसार के पदार्थों को परमेश्वर कुछ जानता। इनके साथ तुम परमेश्वर को कभी प्रसन्न नहीं कर सकते। हां 'प्रेम ते नाम' आपके पास दो वस्तुएं होगी तो आपका मिलन परमेश्वर से हो जायेगा यह पक्षी दो पंखो के साथ उड़ता है, उसका एक पंख काट दो वही घूमता रहेगा। प्रेम भी परमेश्वर के साथ पूर्ण हो और नाम भी हर समय चलता रहे तब आप परमेश्वर के पास जाओगे।

सरब रोग का अउरबदु नामु।
कलिआण रूप मंगल गुणगाम। (पृष्ठ २७४)
सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ।
नानकु बरवाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।। (पृष्ठ ४६८)

आपके पास सत्य होना चाहिए। आपका मन, नाम के साथ जुड़ा होना चाहिए फिर आपकी खुशी है।

नामु संगी जिसका मनु मानिआ।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (पृष्ठ २८१)

लेकिन आपने तो उलटा कर दिया।

नामु संगी सो मन न बसाइओ।
छोडि जाहि वाहू चित लाइओ। (पृष्ठ ७१५)

वह, जो आपने त्याग कर जाना था, चित्त को तुने वहीं जोड़ा हुआ है। वहीं आयेगा किसी ढ़ंग से। यदि तुम्हारा मन मन्दिर (मकान) में होगा तो प्रेत बनेगा, यदि माया के साथ होगा तो फिर सांप बनना पड़ेगा। वे तो कह गये हैं गुरू साहिब। अब आप सोच लो यह बात यदि मुक्ति की कामना है तो नौंवे पातशाह के शब्द को मान लो यदि नहीं चाहते तो आपकी खुशी। बोल दे भाई -

अंत बार नानक बिनु हरि जी।
कोऊ कामि न आइओ।।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

९

सूही महला - ५

जिस के सिर ऊपरि तू सुआमी सो दुखु कैसा पावै।
बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै।
मेरे रामराइ तूं संता का संत तेरे।।
तेरे सेवक कउ भउ किदु नाही।
जमु नही आवै नेरे।। रहाउ।।
जो तेरे रंगि रात सुआमी तिनका जनम मरण दुखु नासा।
तेरी बखस न मेटे कोई सतिगुर का दिलासा।।२।।
नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि।
तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि।।३।।
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी।
सभ ते बडा सतिगुरू नानकु जिनि कल राखी मेरी।। (प ष्ठ ७४६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!

धरनि गगन नप खंड महि जोति स्वरूपी रहियो भरि।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरू अरजुनु परतरव्य हरि।। (प॰ १४०६)

श्री गुरू अर्जुन देव पंचम पातशाह, मथुरा भट् कहता - ये साक्षात् परमेश्वर हैं, इन पर शंका न करना, ये ईश्वर स्वरूप है।

जोति रूपि हरि आदि गुरू नानकु कहायउ।
तातै अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।। (प॰ १४०८)

ये ज्योति स्वरूप हैं, गुरू अवतरित होकर नानक नाम कहलाये। वास्तव में ये ज्योति स्वरूप थे। इनको गुरू गद्दी किसी पंचायत ने नहीं दी, किसी ने एकत्रित

होकर नहीं दी, ये धुर से गुरू आये हैं, ये ज्योति स्वरूप हैं। जब संसार में अंधेरा छा जाता है, तब परमेश्वर स्वयं आप रूप धारण कर सुधार करता है। इसलिये श्री गुरू अर्जुन देव जी प्रत्यक्ष हरि हैं। उनके द्वारा जो ईश्वरीय वाणी का शब्द आया है। बोलो भाई -

सूही महला ५

श्रीराग में पंचम पातशाह श्री गुरू अर्जुन देव जी कथन करते हैं-

जिसके सिर ऊपरि तू सुआमी।

हे स्वामी ! जिसके तुम रक्षक हो -

राखा ऐकु हमारा सुआमी।। सगल घटा का अंतरयामी।। (प॰ ११३६)

जिसका रक्षक, हे परमेश्वर तुम हो उसका कभी भी दुःख में प्रवेश नहीं होता। वह तो परमेश्वर के पारायण होता है। उसके सम्बन्ध में तो लिखा है -

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ। (प॰ १४०८)

वे तो ज्योति स्वरूप आप ही गुरू नानक देव हैं। ज्योति स्वरूप जिसका रक्षक है, उसको कोई दुःख नही होता, उसको कोई कष्ट नहीं होता है।

सो दुःखु कैसा पावै।।

वह दुःख कैसे पायेगा ?

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जाकउ कहत गुसाई।
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई।। (प॰ ६३२)

वह सुख दुःख से रहित जो सब का मूल कारण, कर्ता पुरूष है, वह समस्त सृष्स्टि बनाकर, उसमें सर्वत्र व्यापक है। जैसे तुम सोने का गहना बनाओगे, उस गहने में सर्वन सोना होता है। इसलिये वह तुम्हारी वृत्ति में, आपका आपा भी बैठा है, वह कोई अन्य नहीं है। तुम्हे अपने आपकी पहचान नहीं हुई आज तक।

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।।१।। रहाउ।।
पहुप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई।।

तेसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजह भाई।।
बाहरि भीतरि एकोजानहु इहु गुर गिआनु बताई।।
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई।।२।। (प॰ ६८४)

जब तक यह अपने आपको नहीं पहचानता, तब तक भ्रम नहीं मिटता। जब तक यह प्रकाश लेकर, दीपक अथवा लालटेन लेकर, रस्सी को नहीं देखता, तब तक इसका सर्प का भय निवृत नहीं होता। इसके भीतर से भय नहीं जाता। इसलिये जब तक यह अपने आप को नहीं पहचानता तब तक इसके भीतर से भय की निवृत नहीं होती। वह रक्षक सबका एक है, साधन अब इसका एक ही है।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (प ष्ठ २६५)

यह जीव का आधार ही सुमिरन है। इसका सुमिरन एक रस हो। जब इसका सुमिरन एक रस हो जायेगा, गुरू इसके दाहिने और होगा और ईश्वर बाईं ओर होगा। यह बात संत समाज मुझे कहते थे। लेकिन इसका जो सुमिरन है वह एक रस हो जाये, फिर परमेश्वर -

गुरू मेरे संगि सदा है नाले।। सिमरि सिमरि तिसु सदा सभाले।।
(प ष्ठ ३६४)

वह तेरी संभाल करेगा लेकिन सुमिरन न छोड़ना।

खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।। (प॰ ७१४)

यदि तुम अविनाशी पद प्राप्त करने की इच्छा रखते हो, यदि तुम मोक्ष पद की इच्छा रखते हो, तुम सदा उस परमेश्वर का सुमिरन न छोड़ना, निमित आप बनेगा। वह घासी जो था, वह सुमिरन करता था और अपनी आजीविका के लिए घास खोदता था। बेचकर वह अपनी रोटी खा लेता था। सुमिरन उसका किसी संत के सिाथ मिलकर चलता था। उसके गुरू की आवश्यकता थी। जब गुरू छठे पातशाह आये, सुअवसर बन गया। वह काज़ी, मुल्ला आदि ने सलाह की कि जब कोई बाहर से आता है वह पूछता है कि सच्चे पातशाह का तंबू (शमियाना) कौन

सा है ? ये गुरू का तंबू बताते हैं और तुम्हे झूठा पातशाह कहते हैं। इसमे आपका निरादर है। हम सम्मान देते हैं, तंबू हमारा है, सम्मान हमारा है, लेकिन तुम्हे झूठा पातशाह कहते हैं सिक्ख। सच्चा पातशाह, ये गुरू छठे पातशाह गुरू हर गोबिन्द साहिब को कहते हैं। यह बात जब हुई, उन्होंने सलाह की, भई संतरी को कह दो, भई जो प्रातः आये, वह जब पूछे भई सच्चे पातशाह का तंबू (शमियाना) कौन सा है ? तो जहांगीर का तंबू बताओ। ऐसा ही हुआ, उसने जहांगीर का तंबू बता दिया। जहांगीर बैठा था, वह गया सिक्ख घासी, उसने जाकर जो पहले दिन के पैसे थे वे सम्मुख रख दिये, रोटी नहीं खाई उसने उस दिन भई ये गुरू को भेंट करेंगे। और फिर उसने दण्डवत की, परिक्रमा की, कर-बद्ध खड़ा हो गया। उसने पूछा - क्या चाहता है ? कहता जी मोक्ष। वह साथ खड़े अहलकार ने कहा- एक कुआं ले लो, एक गांव ले लो, तुम्हे नाज़िम बना देते हैं इस क्षेत्र का तुम ऐसे ही क्यों दुःख पा रहे हो ? जो कुछ भी उन्होंने कहा। वह कहता मुझे तीनों लोको की आवश्यकता नहीं मुझे तो मोक्ष चाहिए। गुरू से मुक्ति की कामना करते हैं, अन्य कोई वस्तु नहीं मांगा करते और जब उसने यह कहा, वह जहांगीर कहता भाई ! सच्चे पातशाह का शमियाना है वह, मुक्ति द्राता का, मैं हूँ झूठा पातशाह। इन्होंने यह गलती की है, वह घासी चला गया, उसने अपने पैसे उठा लिये और जाकर उसने गुरू साहिब के आगे रख दिये। जो क्रिया वहां की थी, वही की। जब वह सम्मुख कर-बद्ध खड़ा हो गया गुरू साहिब कहते, क्या मांगते हो ? क्या इच्छा है ? उसने कहा, जी - मोक्ष। वे कहते, हामरी आंखों से आंख मिला। उसने मिलाई **'नदरी नदरि निहाल'** हो गया। क्यों हो गया ? क्योंकि उसकी कोई अन्य इच्छा ही नहीं थी मुक्ति के अतिरिक्त और हमारे भीतर हैं। नाना कामनायें, नाना वासनायें। कहना कुछ और करना कुछ और उसके भीतर तो यह बात नहीं थी। उसकी वृत्ति तो सुमिरन के साथ जुड़ी हुई थी, अब एक गुरू की आवश्यकता थी।

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कुछ गिआना।
घटि ही माहि निरंजनु तेरे तै खोजत उदिआना।। (प॰ ६३२)

तुम तो संसार रूपी वन में खोजते फिरते हो। तुम तो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध विषयों में दौड़ा फिरता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आदि विकारों में दौड़ लगा रहा है। तुम्हें मुक्ति कहां? इसलिये वह सुमिरन के साथ जुड़ा हुआ था, गुरू ने कृपा कर दी, उसने कहा निहाल ! निहाल ! निहाल (गद् गद् हो गया) जहांगीर कहता जी मैं कोई प्रार्थना कर सकता हूँ कहता हिन्दुओं की मुक्ति कितनी सस्ती हैं, इतने से पैसों में आ जाती है। कहते - तुम क्या देते थे? कहता - जी इनको सारे अहलकारों ने कहा भई तुम एक क्षेत्र के स्वामी बन जाओ। फिर इसने क्या कहा ? इसने कहा, मुझे तीनों लोकों की आवश्यकता नहीं है, मैनें तो मोक्ष लेना है गुरू से। फिर गुरू साहिब कहते, इसको क्यों न दी जाये, यह तो अधिकारी था, इसका अन्तःकरण शुद्ध सुमिरन कर दिया और सुमिरन वाले को मुक्ति मिलती होती है, यह तो फिर ठीक है और इसलिए जब तक यह परमेश्वर के नाम के साथ नहीं जुड़ता तब तक इसका कोई सिद्ध नहीं होगा। वह मन जो वह संसार में रम गया, कुछ तो रसों में निमग्न हो गया, कुछ फलां अमुक। यह गलत मार्ग पड़ गया, इसने सुमिरन नहीं था छोड़ना।

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि।। (प॰ १३७६)

इसने चित्त को निरंजन के साथ जोड़ना था, हाथों पैरों से संसार का काम करना था। व्यवहार एवं परमार्थ कभी एकत्रित नहीं हुये। इसने इकट्ठे कर दिये। व्यवहार होता है माया का लेन-देन। परमार्थ होता है नाम सुमिरन, नाम व्यापार और माया का लेन-देन कभी इकट्ठे नहीं हुये। यह माया के लेन-देन को उस स्थान पर व्यवहार करता है जहां इसने सुमिरन का व्यवहार करना था, नाम, व्यापार इसको मिला नहीं, माया के लेन-देन में व्यवहार करता है, इसीलिये गलती में चला जाता है। वह जिसके ऊपर परमेश्वर की कृपा है, वह दुःख कैसे पायेगा ? वह दुःख कभी नही पायेगा।

बोलि न जाणै माइआ यदि माता।

माया के मद में ऐसा मस्त हुआ, बोला नहीं जायेगा। जब हुमायूँ ने पूछा साथ वालों को भई - संसार में कोई ऐसा महापुरूष है जो हमें राज्य वापिस मिल जाये। राज्य तो शेरशाह सूरी ने ले लिया था ? उसको दौड़ा दिया था। उसने कहा,

दूसरे पातशाह श्री गुरू अंगद देव जी खडर साहिब में ज्योति लगा रहे हैं, वे गुरू नानक का रूप हैं।

नानक अंगद को वपुधरा।
धरम प्रचारि इह जगनो कर।। (बचितर नाटक)

नानक ने वह दूसरे शरीर में आकर, वही धर्म प्रचार आरम्भ किया।

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ केरि पलटीऐ। (प॰ ६६६)

एक शरीर परिवर्तित हुआ है, ज्योति वही है और युक्ति की प्रेमाभक्ति वही है। उसके पास चलें। जब वे गये गुरू साहिब बच्चों की कुश्ती देख रहे थे, पहलवान अखाड़े में बैठे थे। उनकी दृष्टि उधर थी। वह आकर हुमायूँ खड़ा हो गया, साथ अहलकार भी। जब गुरू साहिब ने उसको कोई आदर न दिया, उसको बड़ा क्रोध आया, भई मैं वहां से हार खाकर आया था, लेकिन इन संतों ने मुझे बादशाह समझकर, आओ जी, बैठो जी, भी नहीं कहा, आदर नहीं दिया। वह अपनी, जो उसके पास तलवार थी, मुट्ठी में पकड़कर निकालने लगा, निकली नहीं। वह निकले न, वहीं सुन्न हो गया खड़ा और अब बोल न सका कुछ, बोलना बंद हो गया। वह साथियों ने देखा, भई यह तो बड़ा भारी गलत काम हो गया। उन्होंने कहा, जी यह भूल गया, गलत हो गया। इसलिये, वह नहीं कुछ बोल सका, न कर सका। वह तो पूर्ण शक्ति थी। पूर्ण शक्ति के सम्मुख छोटी शक्ति कुछ नहीं कर सकती। वह पूर्ण शक्ति के सम्मुख हार कर उन्होंने उसको डाला चरणों पर क्षमा मांगी। गुरू साहिब कहते, जहां तुमने तलवार उठानी थी, वहां से तो तुम भाग कर आये हो और फकीरों पर तुम तलवार उठाते हो। कितनी गलती करता है ? उसने कहा - जी मैं भूल गया। जब बहुत कहा, इतिहास यह बताता है, उसने कहा- जी मुझे फिर राज्य की प्राप्ति हो जाये। गुरू साहिब कहते बारह वर्ष के बाद आना, जा चला जा। इसलिए बारह वर्ष सूरी ने राज्य किया और यह सारी सड़क कलकत्ता से लेकर पेशावर तक उसने ही बनाई और बहुत काम किया। इसलिए भाई, वह माया में जो मस्त हुआ, वह बोल नहीं सकेगा, कुछ कह नहीं सकेगा।

मरणा चीति न आवै।।

उसको तो यही नहीं पता कि मैंने कैसे मरना है, कैसे जन्म लेना है। उसको तो जन्म-मरण की भी स्मृति नहीं है। अन्य किसी का तो क्या पता होना है ? उसको तो ऐसे भी नहीं ज्ञात कि मैं जन्म-मरण वाला जीव हूँ। जब तक इसके भीतर प्रच्छिन्न अहंकार है, इसके मन में प्रच्छिन्न अहंकार है, अनारथा में आत्म बुद्धि है, तब यह जीवात्मा है। जब इसका अहंकार, जब इसकी वृत्ति, सही अपने स्वरूप में ठहर जायेगी, उस समय इसका प्रच्छिन्न अहंकार निवृत होगा। उसी समय यह आत्म शुद्ध हो जायेगा, वही आत्मा परमात्मा है।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
ऐको अम्रित बिरखु है फलु अंम्रित होई।। (प॰ ४२१)

इसलिये जब उस परमेश्वर की कृपा हो जाये, समस्त कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

मेरे राम राम तू संता का संत तेरे।।

हे मेरे राम ! व्यापक 'राई' अर्थात् प्रकाश स्वरूप चेतन तुम संतो के और संत तुम्हारे हैं। संतो और परमेश्वर के भेद नहीं।

प्रेम भगति उधरहि से नानक
करि किरपा संतु आपि करिओ है। (प॰ १३८८)

संत किसका नाम है ? जिसने अपने स्वरूप को साक्षात् कर लिया शरीर में, उसको जीवनमुक्त भी कहते हैं, ब्रह्मज्ञानी भी कहते हैं। इसलिये वह संत है, वह ज्योति है। जब उसने अपनी उस ज्योति को, ज्योति व्यापक जान लिया, उसकी वृति ब्रह्मकार हो गई, लौ लग गई।

तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही।।

तेरे सेवक को कभी कोई भय नहीं होता। तेरे सेवक को डर नहीं होता। ब्रह्मज्ञानी को कभी कोई भय होता ही नहीं। न वह भय देता है। इसलिये ब्रह्मज्ञानी का लक्षण ही यह लिखा है -

भै काहू कउ देत नहिं नहिं भै मानत आनि।।

कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि।। (प ष्ठ १४२७)

वह ब्रह्मज्ञानी है।

जमु नहीं आवै नेरे ।। रहाउ।।

यमों के साथ उसका कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा। यदि वह उपासक भी होगा सीधा सच्च खण्ड हो जायेगा। यदि मुक्त हो गया तो कोई विषाद नहीं। क्यों ? यह तो जीवन्मुक्त है और इसलिये यम के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

जो तेरे रंगि राते सुआमी।

हे मालिक ! हे परिपूर्ण परमेश्वर ! तेरे रंग में जिनका मन लग गया, एक हो गया, जिन का मन, नाम के साथ मिलकर नामी के साथ एक हो गया।

तिन का जन्म मरण दुखु नासा।।

यहां जाकर जीव का जन्म-मरण दोनों दुःख नष्ट हो जायेगें, समस्त दुःख दूर जो जायेंगे, यह तो व्यापक के साथ एक हो गया। पहले भी यह साक्षात चेतन था, पहले कौन सा जड़ था ? दोनों पदार्थ हैं, एक जड़ और एक चेतन, एक अनित्य और एक नित्य, एक सत्य और एक असत्य, एक व्यापक और एक प्रच्छिन्न। ये तो अलग अलग हैं, लेकिन यह तो सत्य है। तुम अपने भीतर देखो यदि यह सत्य न होता तो मन की कल्पना को कौन देखता ? वह -

दाना बीना साई मैडा नानक सार ना जाणा तेरी। (प ष्ठ ५२०)

उसकी, हम सार नहीं जानते, जो देखने जानने वाला, परमेश्वर चेतन आत्मा है वही साईं मालिक है। उसकी हमने सार नहीं जानी हमारी बुद्धि समझी नहीं।

कथनी बदनी कहन कहावन।

समझि परी तउ बिसरिउ गावनु।। (प ष्ठ ४७८)

वहां तो 'गावनु' भूल जायेगा, यह 'गावनु' अहं में होता है।

हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ। (प ष्ठ १५८)

कबीर साहिब कहते, ओये ! अहंकार में जितने तुम गाओगे, सब व्यर्थ जायेगा। जब तुम अहंकार को त्याग कर, एक बार भी परमेश्वर का नाम लिया। परमेश्वर तो अपना आप है, साक्षात है, परिपूर्ण है, लेकिन वहां आपकी वृत्ति नहीं। तुम्हारी वृत्ति ब्रह्माकार होनी चाहिये, तुम्हारी लगन होनी चाहिए, लगन से अविनाशी पद की प्राप्ति होती है।

तेरी बखश न मेटै कोई।

जा कउ अपनी करै बखसीस।।

ता का लेखा न गनै जगदीस।। (प ष्ठ २७७)

तरी बख्शश का मटने वाला संसार में कोई पैदा नहीं हुआ। जब यह बख्शा गया तो यह अविनाशी पद को प्राप्त हो गया, एक हो गया।

सतिगुर का दिलासा।।

यह सत्गुरू का दिलासा है, सत्गुरू की कृपा है, सत्गुरू की दया है।

नामु धिआइनि सुख फल पाइनि।

नाम सुमिरन करेगा जो वही सुख फल पायेगा। सुख है परमेश्वर। वह सुख स्वरूप है, आत्मा सुख स्वरूप है परमात्मा। जो नाम सुमिरन करेंगे, वे सुख फल 'परमेश्वर' को पा लेंगे, फिर उनकी कोई शंका नही रहेगी।

आठ पहर आराधहि।।

फिर वह आठों योम आराधना करेगा, ब्रह्मज्ञानी का सुमिरन आठों याम होता है, नित्य समाधि होती है, वे आठों याम फिर भजन करेंगे, वे कभी परमेश्वर को भूलते नहीं हैं।

सभना जीआ का इकु दाता सो मैं विसरि न जाई।। (प ष्ठ २)

गुरू साहिब कहते, जो सब जीवों का दाता है मैं उसको कभी नहीं भूलता। हे परमेश्वर ! मुझ पर दया कर, जो सब जीवों का दाता है, वह परमेश्वर मुझे कभी नहीं भूले।

तेरे सरणि तेरै भरवासै

मैं आपके आश्रित आपकी शरण आया हूँ, तुम्हारी दया के फलस्वरूप मैं आपकी शरण आया हूँ।

पंच दुसट लै साधहि।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ये पांच दुष्ट हैं, यह वश में कर लिये हैं, वश में हो गये हैं। अब मेरा मन, इनके वशीभूत नहीं, ये मेरे वश में हो गये हैं। क्यों ?

मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ।। (पृष्ठ २६८)

अपना पूर्ण कृपा हो गई, मन में वश में हो गया है। वह जब मन वश में हो गया तो उसके चेले (शिष्य) काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। वह मैंने वश में कर लिये क्यों ?

गिआन धिआन किछु करमु ना जाणा।

न मैंने कोई कर्म किया, न ज्ञानार्जन किया, न ध्यान किया, क्यों ?

सार ना जाणा तेरी।।

हे परमेश्वर ! मैं तेरी सार भी नही जानता।

सब ते वडा सतिगुरू नानकु।

सबसब बड़ा सत्गुरू है, नानक तो यहां पंचम पातशाह का वाचक है। गुरू अर्जुन देव जी कहते, सबसे बड़ा ज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी है, जो गुरू ब्रह्मज्ञानी है, वह सबसे बड़ा है।

जिनि कल राखी मेरी।।

जिसने मेरी कृपा करके आदर रख लिया, वह सबसे बड़ा श्री गुरू रामदास मेरा गुरू है। सबसे बड़ा गुरू है। गुरू अर्जुन देव जी कहते।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१०

।। श्लोक।।

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु।।
हरि किरता ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु।। (पृष्ठ २६३)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!

यह सुखमनी को तेरहवीं अष्टपदी है, इसमें शुद्ध ज्ञान है। आज वह दिन है, जिस दिन दो महापुरूषों का इकट्ठा पर्व है। गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज का और ईसा जी महाराज का। इन दोनों का पर्व है। गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज विश्व के ऐसे महापुरूष हुये थे इनको योद्धा-गुरू कहा जाता है। वे जगत् गुरू भी थे और योद्धा गुरू भी थे। योद्धा इसलिये थे, अत्याचार का विरोध इन्होंने किया। छठे पातशाह ने भी किया। पहले, गुरू अर्जुन देव जी की बलिदान के बाद। फिर गुरू तेग बहादुर जी का जो बलिदान थी।

तिलक जंबु राखा प्रभ ताका।
कीनो बडो कलूमहि साका।
साधनि हेति इति जिनि करि।
सीस दीया पर सी न ऊचरी।। (बचितर नाटक)

नौंवे पातशाह ने, अपना शीश धर्म रक्षार्थ दिया। जब समस्त कश्मीर में शोर मच गया बड़े प्रयत्न, उन पंडितों ने किये, लेकिन कोई न चला। वे चलकर गुरू तेग बहादुर के चरणों में आये। उन्होंने अपनी समस्त वार्ता सुनाई। आपको इस बात का पता है। कश्यप ऋषि उस पर्वत पर बैठा था, उस का नाम कश्मीर इसलिये पड़ा। वह सारी आबादी ब्राह्मणों की थी। वह सारी कश्यप ऋषि की संतान थी। इसलिये वहां इतना अत्याचार हुआ और वहां अब कितने मुसलमान हैं

आपको पता ही है। वे जो वहां से आये दुःखी होकर, उनको कहा गुरू साहिब ने एक ही बात जाकर तुम कह दो औरंगजेब को बई हमारे गुरू तेग बहादुर जी को मुसलमान बना दे, हम सब बन जायेंगे। वह बड़ा प्रसन्न हुआ, उसने कहा बहुत अच्छा। उसने यत्न बहुत किया, गुरू साहिब को कहा भई बादशाह बन जाओ, ऐसा जो भी कहा लेकिन गुरू साहिब ने कोई भी बात नहीं मानी। अन्त में उन्होंने कहा अकाल पुरूष, परमेश्वर, खुदा को यह स्वीकार है, एक नहीं होगा, तीन होंगे। औरगज़ेब ने कहा, इसका हमें कैसे पता लगेगा ? गुरू साहिब कहते, तुम मिर्चें मंगा लो काली श्वेत जो होती हैं। औरंगज़ेब ने मंगा ली। कहते इनको जला दे। उन्होंने जला दी। उनमें से तीन निकली। इतिहास यह बात बताता है। औरंगज़ेब कहता - यह कौन ? गुरू साहिब कहते - हिन्दू, मुसलमान है एक तीसरा पंथ और होगा, वह हमारा ही राजकुमार होगा। उसने यह पंथ परमेश्वर के आदेश के साथ चलाना है, उसने आना है। वह हैरान हो गया। गुरू साहिब कहते - बस ऐसा ही होना है। जब गुरू तेग़ बहादुर तलवंडी गये 'दमादम साहिब' फिर उसका नाम पड़ा, पहले साबो की तलवंडी कहते थे। वह जो स्थान है, वह मैंने देखी है। वह जब डल्ला के पिता चारपाई लाये, वस्त्र लाया। मालवा का स्वभाव था, साधु जाते बड़ा मान देते थे। उसने कहा वह ऊचा स्थान है जिसका नाम अब दमदमा साहिब है, वह जब वहां चारपाई बिछाने लगा, गुरू साहिब कहते न न यह हमारा स्थान नहीं, हमारी चारपाई वहां बिछा दो। उन्होंने उसे वहां डाल दिया। वह गुरू तेग बहादुर का गुरूद्वारा निचले स्थान पर है। जब इन्होंने जाकर अपनाा कमरबंद गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज ने, वह ऊंचा स्थान है। इन्होंने खोला भी उसी स्थान पर था। नौंवे पातशाह कहते, इस स्थान वाले ने आना है, हमारा यह स्थान है। उसने बिछा दिया वस्त्र गुरू साहिब वहां रहे। लेकिन उस डल्ले को जब से पता था, भई यह बात हमारे गुरूओं ने हमें कही थी। वह गुरू तेग़ बहादुर को गुरू मानता था, डल्ले का पिता। ये गये, वहां रहे। जब गुरू गोबिन्द सिंह जी गये, वे वहां जाकर खड़े। उन्होंने चारपाई बिछाई जो कुछ किया। वहां उन्होंने कमरबंद खोला, भई दम लेना है, इसलिये उसका नाम 'दमदमा साहिब' है। यह बात भी भविष्य की, वहां पहले ही वह डल्ला जानता था कि यही गुरू गोबिन्द सिंह जी हैं जिन्होंने सिक्ख पंथ बनाया है और फिर उन्होंने भी अमृत छका, जैसे हुआ। इसलिये परमेश्वरश्की ओर से पहले हुआ ही होता है। इसलिये वे तीनों हुये, वे तीन मिर्चें नहीं जली थी। बस जो कुछ कहा औरंगज़ेब ने भई आप सम्पूर्ण राज्य को भोगो, ऐसा करो, उन्होंने कहा - नहीं। बस उन्होंने एक धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश दे दिया। यह तुम सबको पता है और गुरू गोबिन्द सिंह जी ने चारो साहिबज़ादों जो कुछ था सर्वस्व ही धर्म पर न्यौछावर कर दिया। संसार में धर्म की रक्षा के लिए बहुत लोगो ने काम किया। जितने महापुरूष आये, वे सत्य के मार्ग पर चलाते आये सत्य को ज़ाहिर करते आये हैं लेकिन इन्होंने तो समस्त वंश न्यौछावर कर दिया, संसार में। अब इनकी आपको क्या बात बतायें ? वह तो सारा 'बचितर नाटक' पढ़ोगे तो पता लगेगा। इसलिये गुरू गोबिन्द सिंह जैसा संसार में धर्म रक्षक कोई नहीं हुआ। आप स्वयं ही देखो, कोई ही होगा जिसने सर्वस्व न्यौछावर कर दिया लेकिन धर्म अपना ठीक रखा और गुरू तेग बहादुर का तो मत ही यही था भई धर्म रह जाये चाहे शरीर चला जाये। इसलिये वे समस्त पूरा कर गये। इसलिये तुम सब को पता है शीशगंज गुरूद्वारा यहां (दिल्ली) ही है, तुम मेरे से अधिक जानते हो। इसलिये, यह बात मैं भी आपको कहता हूँ भई विश्व में महापुरूष जितने भी आते हैं वे सारे ही धर्म की रक्षा करने के लिए आते ही होते हैं और उनकी रक्षा की कोई आवश्यकता नहीं होती, वे तो परमेश्वर ही होते हैं-

सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ।
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ।।
दुआपुरि क्रिसन मुरारि कसु किरतारथु कीओ।।
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ।
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरू अंगद अभरू कहाइओ।
श्री गुरू राजु अविचलु अटलु आदि पुरखि करमाइओ।। (पृष्ठ १३६०)

ये आदि पुरूष परिपूर्ण परमेश्वर है, पहले भी फरमाया था भई चार कारणों से परमेश्वर को घरती पर आना पड़ता है और रक्षा करनी पड़ती है। इनको तुम

गुरू अवतार कह सकते हो, मर्यादा अवतार, लीला अवतार जो आप चाहो वह कहो, परमेश्वर आप ही मालिक, कभी कभी संसार में आता होता है।

आदि पुरखि फुरमाइओ। (प ष्ठ १३६०)

यह आदि पुरूष का आदेश है भई संसार में ऐसा होगा। स्वयं परमेश्वर को भी आना पड़ता है यह उन गुरूओं ने कितनी रक्षा की? जिन्होंने सर्वस्व ही न्यौछावर कर दिया। अब इससे अधिक तुम क्या कहोगे ? यदि उनके उपकार गिनोगे तो सारी आयु नहीं गिने जायेंगे। इसलिये भाई ! वे गुरू हैं, ईसा जी महाराज ने लोगों का और संसार में उनका बड़ा आदर हुआ। पश्चिमी देशों में उनको बड़ा मानते है। वह भी एक बड़ा महापुरूष हुआ है। आज यह दोनों का पर्व है। पर्व उसका नाम है जो नितांत पुण्य हो, आज वह पुण्य दिवस है। अब हम, तुम्हें एक कथा सुनाते हैं इस अष्टपदी की। चल भाई -

श्लोकु।।

गिआन अंजन गुरि दीआ अगिआन अंधेरा बिनासु।
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु।। (प ष्ठ २६३)

हरि की कृपा से एक संत से भेट हो गई ? गुरू अर्जुन देव जी कहते हैं। वह किससे भेट हुई ? वह गुरू रामदास जी के साथ भेंट हुई गुरू ग्रन्थ साहिब में लिखा हुआ है -

हरि जीउ नामु परिओ रामदासु।। (प ष्ठ ६१२)

गुरू अर्जुन देव जी कहते, अब हरि का नाम रामदास पड़ गया। अवतार परमेश्वर होता है।

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ।
ताते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।। (प ष्ठ १४०८)

उन्होंने आकर विश्व में ज्योति स्वरूप ने 'नानक' कहलाया। 'नानकगुर' कहलाकर संसार की पूर्ण रक्षा की। उस संत के साथ हमारी भी भेट हुई, मिलाप हुआ।

हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु।। (प ष्ठ २६३)

हमारे मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया। परमेश्वर तो सब के मन में बैठा है।

घट घट मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।। (प ष्ठ १४२७)

वह सब के हृदयों में परमेश्वर नहीं है ?

ईश्वर सर्वभूतानां हृद्धेशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामेयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।। (गीता)

इसलिये सब के हृदयों मे परमेश्वर बैठा और तुम स्वयं देख लो। आप यह बताओ ? जब आपका मन किसी ओर जाता है, वहां कोई मन को देखने वाला और जानने वाला भी बैठा है, मन तो एक वृत्ति का नाम है।

संकल्प-विकल्प हरि मनः (गीता)

संकल्प-विकल्प का नाम ही मन है। उसको देखने वाला और जानने वाला।

दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी।। (प ष्ठ ५२०)

वहां देखने वाला और जानने वाला भी तो आपकी वृत्ति में तुम्हारे हृदय में, तुम्हारे मन में विराजमान है। जब वह मान जाता है उसको देखने वाला कोई है कि नहीं ? वह जो देखता है, जानता है, वह परमेश्वर है, वह तुम्हारे हृदय में है, वह तुम्हारा आपा है, उसको आत्मा कहते है।

जिनि आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
ऐको अम्रित बिरखु है फलु अम्रितु होई।। (प ष्ठ ४२१)

वह परमेश्वर है, वह आपका अपना आप है, उसको द्रष्टा कहते हैं, उसको साक्षी कहते हैं। कबीर साहिब उसको पारख कहते हैं। कबीर बीजक में बड़े बलपूर्वक गुरू साहिब भी कहते हैं- क्या कहते हैं?

नानकु पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ। (प ष्ठ १४४)

पारख तो वह स्वयं है, अन्य कोई आपके पास पारख नहं है। तुम्हारी वृत्ति

अथवा हृदय, तुम कहते हो हमारी वृत्ति। वह तो जड़ है लेकिन उसमें कोई दाना-बीना बैठा है जो देखता भी है और जानता भी है, वह साईं है। भाई वीर सिंह ने लिखा है वह बड़ा सुन्दर वे कहते साई आप ही सबके भीतर साक्षी रूप में विराजमान है। वह परमेश्वर सब के भीतर साक्षी होकर विराजमान है। जितनी आपके संसार की वृत्तियां हैं, विचार हैं, कामनायें है, वासनायें हैं, उन सबको देखने वाला, आपका साक्षी है। कोई वृत्ति आपकी ऐसी नहीं है, कोई विचार ऐसा नहीं जिसको परमेश्वर देखता, जानता न हो। वही परमेश्वर है आपका 'आप' के हृदय में आत्मा है। वह सबको देखने जानने वाला है। वह मेरे भीतर प्रकाश हो गया, कहते गुरू रामदास की कृपा से।

गिआन अंजनु गुरि दीआ।

यह ज्ञान का सुरमा मेरे हृदय में गुरू रामदास ने डाला।

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु।।

समस्त अज्ञान नष्ट हो गया, हमारे समस्त भ्रम नाश हो गये। वेदान्त में जब आया प्रसंग विद्या, अविद्या का, वहां क्या आया ? जो आपके भीतर साक्षी, चेतन, तेरा आत्मा है और जो आपकी वृत्ति है, उन दोनों को एक समझ लिया। इसको पता ही नहीं लगा, जड़ चेतन का। जड़ चेतन की ग्रन्थि इसकी खुली नहीं अभी। क्यों नही खुली? ईश्वरीय कृपा नहीं हुई अभी, जब ईश्वरीय कृपा होगी तो जड़-चेतन की ग्रन्थि खुलेगी।

है कोऊ ऐसा मीतुजि तोरै बिखम गंठि।
नानक इकु स्त्रीधर नाथु जि टूटे लेई सांठि।। (प ष्ठ १३६३)

अन्य कोई है नहीं, परमेश्वर की कृपा हुई तो इसने उस वृत्ति को अलग देखा और चतेन को अलग देखा, इसको विद्या कहते हैं। जब यह विद्या वृत्ति इसके समीप आ गई तो इसकी अविद्या नाश हो जायेगी। हमारे साथ एक संत होते थे, उसके साथ यदि कोई बात करता था आकर, कई करते थे, वे कहते थे तुम्हारे को अभी विद्या नहीं हुई तुम्हारी विद्या वृत्ति नहीं हुई, अविद्या तुम्हारी नाश नहीं हुई, हम नहीं तुम्हारे से बात करेंगे। हम नहीं तुम्हारे को उपदेश करेंगे। तुम्हारी तो विद्या वृत्ति नहीं हुई। जब इसको यह पता लग गया जो वृत्ति है, स्फुरण है, यह सब जड़ है और देखने एवं जानने वाला जो है, वह चेतन है, वह है सत्य। गुरू नानक देव जी कहते हैं -

मूई सुरति बादु अहंकारु।। ओह न भूआ जो देखणहारू।।

(प ष्ठ १५२)

वह देखने वाला, जन्म-मरण में नहीं कभी आता। मरने वाली इसकी वृत्ति और अपभास है जो चेतन है, वह नहीं कभी मरेगा। जन्म-मरण वाली यह वस्तु ही नहीं, वह इसका आया है, मेरा अज्ञान नाश हो गया, भूल नाश हो गई वह जो विद्या वृत्ति का आना है उसने अविद्या वृत्ति का नाश किया लेकिन वह भी एक वृत्ति है वह भी जड़ है, असत्य है, लेकिन विद्वान जो जो वृत्ति को देखने वाला द्रष्टा चेतन की है वह सत्य है, वह जन्म-मरण से रहित है, वह इसका आपा है। यह ज्ञान स्वरूप आप है, यह ब्रह्मज्ञानी आप है।

ब्रहमगिआनी कउ खोजहि मटेसुर।
नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर।। (प ष्ठ २७३)

ब्रह्मज्ञानी तो स्वयं परमेश्वर है। लेकिन इसको अपना पता नहीं। सारी आयु इसने खो दी, यहां तो यह बैठा ही नहीं है। यह तो संसार के लोभ आदि में फंसा पड़ा है। इसलिये जब इसको प्रभु की कृपा से यह ध्यान आ गया, क्यों? पंचम पातशाह लिखते हैं-

ब्रहमगिआनी से जन भए।
नानक जिन प्रभु आपि करेइ।। (प ष्ठ २७२)

जिसको परमेश्वर करेगा, वह ब्रह्मज्ञानी होगा। लेकिन यह पहले भक्त नहीं बनता। इससे प्रेमाभक्ति नहीं हुई।

प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आदि करिओ है।।

(प ष्ठ १३८८)

संत तो प्रेमाभक्ति के साथ बनता है। जब आपका मन प्रेमाभक्ति में आ

जायेगा, तुम संत बन जाओगे। प्रेमाभक्ति तो आई नहीं, अभी तो आपकी भक्ति भिन्न भिन्न है, उसकी यह भक्ति है, ये तो वेश आदि में फसे पड़े है, दिन-रात आगे फिरते हैं। मैं तो यह समझता हूँ भई जो वह गुरू नानक देव जी ने कलियुग का लक्षण लिखा है। वह हूबहू भेज दिया -

सरमु धरमु दुह छपि खलोए कूड़ु फिरै परधानु के लालो। (प ष्ठ ७२२)

वे लालो को उपदेश करते हैं - गुरू साहिब कहते - भाई ! यह कार्य कलियुग में होगा। लज्जा एवं धर्म दोनों छिप जायेंगे -

कूड़ु फिरै परधानु वे लालो।। (प ष्ठ ७२२)

संसार में झूठ प्रधान हो जायेगा। अब झूठ को लोग राजनीति कहते हैं। आजकल जितना अधिक झूठ बोलें, उतना बड़ा राजनीतिज्ञ। ऐसे नहीं कहते, झूठ है, यह भी बड़ा राजनीतिज्ञ है। इसलिये इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई सबकी। यदि एक की भ्रष्ट हो जाती तो, कुछ संवर जाना। इनको पता ही नहीं। संसार में एक धर्म है, चाहे सारे देशों में घूम लो, 'सति' धर्म है, अन्य कोई धर्म नहीं। ये सब धर्म बदल जायेंगे, यह सब बदलने वाले हैं, आपके सामने बदल जायेंगे। आज एक मुसलमान, हिन्दू हो जाय, उसका मुसलमान कहां गया ? हिन्दू हो गया। सिक्ख बन जाये, हिन्दू धर्म गया। इसलिये बातें सब असत्य है, सत्य ही एक धर्म है।

सचु समना होई दारू पाप कढै धोइ।
नानकु वरवाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।। (प ष्ठ ४६८)

एक सत्य इसके पास होना चाहिये। सत्य साथ ही यत्य से मिल जायेगा। जब इसमे पूर्ण सत्य आ गया, यह सत्य के साथ मिल जायेगा। आप यह स्वयं देख लो, तुमने किसी से रूपये लेने हैं, चालीस, वह भूलकर दे गया पचास। वह फिर वापिस आया, उसने गिन लिये, लेकिन मन ने कहा, अब कौन जानता है। उसको कहां - नहीं, तुम वहां जाकर देखो, मुझे तो चालीस ही देकर गये हो। लेकिन भीतर से आपको आवाज़ आयेगी कि तुमने पचास लिये हैं, तुम्हारी जेब में हैं और फलां स्थान पर रखे हैं। वह आत्मा की आवाज़ तुम कैसे नहीं सुनोगे? वह रहस्यात्म्क सत्य जो आत्मा है वह तो सत्य बोलेगा। जब तक तुम उसके साथ नहीं मिलोगे, उस दिन तुम्हें परमेश्वर नहीं मिलेगा, ज़ोर लगालो, यह तो चतुराई है। इसलिये भाई ! मेरे गुरू ने मेरे पर कृपा की, ज्ञान प्रदान किया, अज्ञान नष्ट कर दिया, और मेरे भीतर ज्ञान का प्रकाश हो गया। क्या प्रकाश हो गया ? चल भाई -

असटपदी।।

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।।

वह संत के साथ श्री गुरू रामदास संत के साथ, मैंने अपने भीतर परमेश्वर देखा, क्यों ? संत का लक्षण ही यही है। मैंने गुरू रामदास के साथ मिलकर भीतर परमेश्वर देखा। यह संत की पक्की निशानी है। चलें -

नामु प्रभु का लागा मीठा।।

अब मुझे कभी परमेश्वर का नाम नहीं भूलता। यह नाम नहीं भूलता मुझे।

नामु प्रभु का लागा मीठा।।

अब जब मुझे साक्षात दृष्टिगोचर हो गया, अब मुझे भूल कैसे जायेगा ? फरीद ने बड़ा तप किया, एक उसके साथ और भी था, वे ख्वाजा अजमेर के पास पहुंचे। उन्होंने जाकर ज़ाहिर किया कि हमने आपका मुरीद बनना है। उन्होंने एक परीक्षा ली। उनको एक एक पशु दिया। चाहे वे लोग कहते मिट्टी का दिया, तोड़ कर ले आओ चाहे जीवित दिया भई उस स्थान पर इसे मारना जहां कोई नहीं देखता नह हो। वह दूसरा तो मार कर आ गया। फरीद सारे जंगल में घूम कर आ गया। कहता - कोई स्थान नहीं जहां खुदा नहीं देखता। जब कोई नहीं देखता, तो मैं इसे देखता हूँ, यह मुझे देखता है, जब मैं इसकी आंखे बांधता हूँ, और चाकू तेज़ करता हूँ, मेरे भीतर कोई देखता है, भई यहां पड़ा है और यह टापता है, इसके भीतर कोई देखता है, कोई ऐसा स्थान नहीं मिला। उसने आकर पशु को समीप रख दिया। मुझे नही जी ऐसा स्थान मिला। उसको ख्वाज़ा पीर कहता - बारह वर्ष तप कर जाकर फिर आना। तुम इस योग्य नहीं। फरीद ने बारह वर्ष सेवा की। जिस दिन अंतिम समय आया, वह दिन आया जिस दिन उस पर कृपा

करनी थी। ख्वाज़ा ने सिद्धि के साथ आग बुझा दी। ब्रह्ममुहूर्त में वह स्नान कराता था, फरीद अपने पीर को। देखा, अग्नि नहीं। ऊपर चढ़कर देखा, इतिहास में लिखा है भई एक वेश्या के घर, दीपक जल रहा था। फरीद वहां से जाकर उसके पास गया तो उसने पूछा। वह कहता - माता मैंने पीर को स्नान करना है, अग्नि हैं नहीं, मुझे आग दे दो। वह कहती - आंख दे दे। उसने निकालकर आंख - कहता यह ले। उसने आकर स्नान कराया और आंख बांधी हुई थी। वह जब स्नान कराता था, पीर ने कहा, आंख बांधी है ? फरीद कहता - आ गई है। उधर 'आ गई' कहते हैं दुखती आंख को पाकपटन में। पीर कहता 'आ गई लेकिन थोड़ी छोटी हो गई, दृष्टि अधिक होगी, खोल दे। खोल दी। अब तक वह फरीद की गद्दी पर जाकर देखो, उनकी पीढ़ी में, वह चीज़ चली आती है। इसलिये उस दिन उसके ऊपर कृपा हुई और जब वह फरीद आया घर में माता ने उसकी बड़ी सेवा की, भई इस प्रकार का कभी आपने खाया था ?

फरीदा सकर खंडु निवात गुडु माखिओ माझा दुधु।
सभै वसतू मिठीआ रव न पूजानि तुधु।। (प ष्ठ १३७६)

उसने कहा माता ने, तुमने ऐसे पदार्थ मीठे खाये हैं ? वह कहता ठीक है, सब मीठे हैं, लेकिन रब जैसे मीठे नहीं हैं। तुमने माता रब का स्वाद नहीं देखा। जिन्होंने रब का स्वाद नहीं देखा, उनको क्या पता है, ये पदार्थ सभी मीठे हैं।

सकर खंडु निवात गुडु माखिओ माझा दुधु। (प ष्ठ १३७६)

यह चीज़े सब कह दी, ये सभी वस्तुयें मीठी जो मुझे तुमने दी, सब मीठी हैं। लेकिन 'रब ना पूजनि तुधु' लेकिन परमेश्वर जैसी मीठी तो नहीं है। तूने रब का स्वाद हीं नहीं देखा माता। इसलिये जब इसको परमेश्वर का साक्षात्कार हो जायेगा, फिर यह कैसे भूल जायेगा रब ? फिर यह परमेश्वर रूप होगा। लेकिन, इसलिये भाई ! जब तक यह किसी पूर्ण गुरू फकीर, गुरू के चरणों में नहीं लगता, ऊपर से दया नहीं होती परमेश्वर की, तब तक इसकी लौ नहीं लगती, शेष बातें सब बनावटी (कृत्रिम) हैं। चल भाई -

सगल समिग्री एकसु घट माहि।।

वह समस्त सामग्री का स्वामी एक, हृदय में बैठा है तुम्हारे भाई!

अनिक रंग नाना द्रिसटाहि।।

वह समस्त अनेक रंग, दिखाई नहीं देते सम्मुख, यह समस्त संसार ? एक से एक नहीं समान कोई। यह सब का स्वामी हृदय में बैठा तेरी आत्मा तेरा आपा, लेकिन तुझे नहीं पता मेरा आपा। इसलिये तुम बहार ढूंढ़ते फिरते हो। इन शरईयों को रब आज तक नहीं मिला। किसी शरई को आज तक मुझे बताओ ? भगवान् मिला हो ? चाहे हिन्दू है, मुसलमान है, सिक्ख है ? कोई है चाहे अपनी शरअ में। किसी एक ओर भी संकेत करो कि भई फलां शरई को भगवान मिला है। बड़ा शरई तो यही था न औरंगज़ेबख वह कहता था, एक कर देना है मेरे सम्मुख। यह जब व्यक्ति शरअ् में आता है तो जो कुछ नहीं वह कर देता है। लेकिन इसलिये भाई ! जब तक यह सब में एक दृष्टि नहीं देखता। वह गीता में लिखा है -

समत्वं योग उच्यते।। (गीता)

उन्होंने समस्त योगों का वर्णन किया, शंकराचार्य ने गीता के अर्थ किये। जब आया -

समत्व योग उच्यते।

वह कहता जब समयोग आ गया तो समस्त योग लुप्त हो जायेंगे। भई कन्हैया ने भी साधन किया था, उसने दशम् पातशाह की कृपा से पानी पिलाया। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख को एक जैसा पिलाया, क्यों ? उसमें समत्व था। यह जो सेवा-पंथी बनाते हैं गुरूद्वारे अन्य यह आपका तालाबा बनाया, यह सब सेवा-पंथी हैं, भई कन्हैया का सम्प्रदाय है। इसलिये इसमें समता नहीं जब तक आती, तब तक इसको कुछ नहीं आना चाहे कुछ बना फिरता रहे, लेकिन यह परमेश्वर की ओर से रिक्त है। परमेश्वर के दरवाज़े पर कभी नहीं पहुंचेगा, जोर लगा लो। वह तो ममता में है, वह सब के हृदयों में परमात्मा एक है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन रहिओ पुकारि।। (प ष्ठ १४२७)

वह सब के हृदयों में परमेश्वर एक है जो आपके हृदय में बैठा, आपके मन को देखता जानता है, वही तो परमेश्वर है और परमात्मा क्या है ? वही व्यापक है। चलें -

नउ निधि अम्रित प्रभ का नामु।।

नव-निधियां देने वाला, अमर करने वाला, एक भगवान् का नाम है। अमर करने वाला, एक नाम है। नाम, नामी का अभेद है। नाम-नामी दो नहीं होते कभी, एक ही होते हैं। इसलिये वह भाई ! अमर करने वाला नाम है।

नाम संगि जिसका मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प ष्ठ २८१)

नाम के साथ जिसका मन, तन्मय हो गया वह परमेश्वर को जान लेगा।

नामु संगी सो मनि न बसाइओ।।
छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ।। (प ष्ठ ७१५)

इसका साथी तो नाम था, नामी को मिलाने वाला एक नाम है। गुरू घर का एक निश्चित सिद्धान्त है, भई जब तुम्हें नाम प्राप्त हो गया, नामी मिल लायेगा। नाम, नामी तो एक हैं, लेकिन तुम्हारा मन, नाम के साथ एक हो जाये। तुम स्रूवयं ब्रह्म मुहूर्त में जागकर देखो भई तुम्हारा मन, नाम के साथ एक होता है कि नहीं होता। यदि यह बाहर ही घूमता रहा तो फिर तो न प्राप्त हुआ।

नाम संगि जिसका मनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प ष्ठ २८१)

गुरू साहिब कहते, जिसका नाम के साथ मन जुड़ गया, वह परमेश्वर को जान लेगा। इसलिये नाम के साथ इसका मन बड़ा कठिनाई से मिलता है। इसके तो संकल्प ही समाप्त नहीं होते। इसके मन की तो भाग-दौड़ ही नहीं हटती। जितने धिक पैसे होंगे, उतनी अधिक करेगा, जितने कम पैसे होंगे, उतनी थोड़ी करेगा। इसलिये यह तो भाग-दौड़ में ही चलता है। कुछ नहीं बनता इस प्रकार।

देही माहि इसका बिस्रामु।।

कही बाहर नहीं है। वह तेरे शरीर के भीतर बैठा है वह परमेश्वर। वह तुम्हारे हृदय में नहीं बैठा ? जब विशेष्ज्ञ चेतन नहीं होता, वह मृत हो जाता है। इसलिये भाई ! वह विशेष चेतन तुम्हारे हृदय में बैठा है। वह 'घट घट मैं हरि जू' समान हमेशा है, लेकिन विशेष जब होगा, कार्य तो तब होगा।

सुन समाधि अनहत तह नाद।।

इससे आगे शून्य समाधि है, इस प्रकार की समाधि लग जायेगी, एक रस हो जायेगा। 'तह नाद' वहां से तुम्हें नाद प्राप्त हो जायेगा, वहां तुम्हे नामी प्राप्त हो जायेगा, जब तुम्हारी वृत्ति ठीक है तेरा मन लीन हो गया।

सुनिआ मनिआ मनि कीता भाउ।।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ।। (प ष्ठ ४)

जब तुम अन्तरात्मा में स्नान करेगा, तेरा मन लीन हो जायेगा तुम्हे सब कुछ प्राप्त हो जायेगा।

अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ
माइया का मुहताजु भइआ। (प ष्ठ ४३५)

इसने अपने **'अंतर आतमा'** को व्यापक नहीं जाना। यह तो माया का मुहताज है, आठों याम माया की चाकरी करती है।

कहनु न जाई अचरज बिसमाद।।

यह कहने में नहीं आता, मन वाणी के विषय नहीं, वह अचरज (आश्चर्यरूप) है। 'बिस्माद' भी असचरज (आश्चर्यरूप) का नाम है। वह परमेश्वर आश्चर्यों का भी आश्चर्य है। जो भी असचरज हो गया, वे दोबारा नहीं आया। कबीर आया ? नामदेव आया ? कन्ना आया? जब जिसका असचरज में हृदय लीन हो गया, वह असचरज रूप हो गया। असचरज चेतन तो पहले ही था, फिर यह चेतन का अपना स्वरूप इसको प्राप्त हो गया।

तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए।।

कहते जी उस परमेश्वर को यह कैसे देखे ? जिसको कृपा करके आप दिखाये, अन्य कोई नहीं देख सकता।

ब्रहमगिआनी से जन भए।
नानक जिन प्रभु आपि करेइ।
नानक तिसु जन सोझी पाए।। (प ष्ठ २७२)

उसको पहचान हो जायेगी अपने स्वरूप की, उसको पहचान हो जायेगी, उसको अपने आपका पता लग जायेगा। भई, मैं यह चेतन हूँ, जो दाना-बीना, जो मन को जाते हुये को देखता और जानता है मैं तो यह हूँ। यह तो सारी प्रकृति है, मैं प्रकृति तो नहीं हूँ। इसलिये यह सारी प्रकृति है, मैं प्रकृति नहीं, इसलिये मैं वह चेतन हूँ।

सो अंतरि सो बाहरि अनंत।।

वह जो अनंत परमेश्वर है, वह अन्तरात्मा तेरा, वही बाहर है।

अंतरि बसे बाहरि भी ओटी।
नानक दरसनु देख सभी मोही।। (प ष्ठ २६४)

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही।
कलाधारि जिनि सगली मोही। (प ष्ठ २८७)

हे परमेश्वर !

घटि घटि बिअपि रहिआ भगवंत।।

वह भगवान्, परमेश्वर, सबके हृदयों में व्यापक है, रचा हुआ है। इसको 'घटाकाश' कहते हैं। बाहर वाले को बाहर आकाश कहते हैं। किसी को फड़ाकाश कहते हैं लेकिन आकाश एक ही है। वह सब के हृदयों में व्यापक है। परिपूर्ण परमेश्वर है।

धरनि माहि आकासा पइआल।।

पृथ्वी में, आकाश में, पाताल में समस्त व्यापक है।

सरब लोक पूरन प्रतिपाल।।

सब लोगों में व्यापक है, सब का प्रतिपालन करता है, चींटी से लेकर हाथी तक।

चीटी ते कुंचर असथूला।।
सब पर क्रिपा द्रिसटि करि फूला।। (चोपाई साहिब)

वह प्रसन्न होकर सब पर कृपा करता है, पहले पातशाह को कहते आपका इष्ट क्या है ? कहते 'एका' गुरू साहिब ने पहले 'एका' लिखा है अन्य किसी ने नहीं लिखा, वे कहते 'एका' क्या है ? वे कहते -

एकम एंककारु निराला।। अमरू अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचर रूपु न रेखिआ।। (प ष्ठ ८३८)

सब कुछ यह है लेकिन मैंने सब के हृदयों में देखा है।

खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।
बनि तिनि परबति है पारब्रहम।।

यह 'एका' सब के हृदयों में विराजमान है - एक परमेश्वर। यह **'एका'** गुरू पहली पातशाही कहते - यह हमारा इष्ट देव १ ओकांर ( ) है। ओम् तो नाम है पर 'एका' तो इष्ट है सबका। एक को सब मानते हैं, उन्होंने लिखकर दिखला दिया। यह 'एका' सबमें बैठा है, चार प्रकार के प्राणियों में।

जैसी आगिआ तैसा करमु।।

जैसी भी परमेश्वर की आज्ञा होगी, प्रकृति ने वही काम करना है। प्रकृति तो जड़ है, प्रकृति तो हुक्म में है, हुक्मी तो नहीं है। यह तो हुक्म है।

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ।।
नानक हुकमे जे बुझ त हउमै कहै न कोइ।। (प ष्ठ १)

यह तो हुक्म है, वह हुक्म में है प्रकृति लेकिन परमेश्वर हुक्म में नहीं, जैसी आज्ञा करेगा, संसार में वही काम होगा। सारा ज़ोर लगा लो आप, परमेश्वर ने जो काम करना होगा, होगा वही। तुम देखते हो, वर्षा नहीं होती। वह एक मेरे पास आया पंडित, कहता यज्ञ करो। उन्होंने किया यज्ञ, लेकिन वर्षा नहीं हुई। उन्होंने मुझे बताया फिर पंडित कहता ओये ! मैं बताता हूँ आपको गलत किया आपने, पहले हवन करो फिर यज्ञ करो। कहते - लो ऐसे कर देते हैं। वह किया,

फिर भी न बरसा। वे पंडित को कहते, अब बताओ। वह कहता - मुझे भी नहीं पता। इसलिये भाई ! परमेश्वर ने जो कुछ करना है, होना वही है। दण्ड, विजय जिसको देनी है किसी ढंग से दे उसको ही देनी है। जो कुछ करना, कर्ता पुरूष है, अन्य संसार में कर्ता कोई नहीं, कर्ता पुरूष जो करेगा। 'पुरूष' नाम है पूर्ण का, वह जो पूर्ण करेगा, वही होगा।

पउन पाणी बैसंतर माहि।।

पवन में, जल में, अग्नि में, परमेश्वर नहीं है ? यह तो उपनिषद्रों में लिखा पड़ा है। ईश्वर ने यज्ञ का रूप धारणकर, उन सब का जब अहंकार दूर कर दिया। देवताओं एवं असुरों की जब लड़ाई हुई देवताओं की विजय हुई। उस अग्नि देवता ने कहा, मैंने ऐसे किया, वायु कहता मैंने ऐसा किया, इन्द्र कहता मैंने बज्र का संधान किया। इतने में वह ईश्वर यक्ष रूप धारण कर आ गया। यह उपनिषद् में लिखा है। उसने कहा देखो, यह है कौन ? उसने अग्नि देवता को भेजा। यक्ष कहता, तुम कौन हो ? कहता, मैं अग्नि देवता हूँ। कहता कर सकेगा ? कहता - मैं घंटे में राख कर दूँ सारे संसार को। अभी कर यक्ष कहता। यक्ष ने एक सूखा पत्ता राख दिया कहतो ले इसको चला। वह कुछ भी न हुआ। वह कहता मुझें नहीं पता यह क्या हुआ, अग्नि देवता कहता। वह वायु के पास गया। उसको पूछा, वह कहता, इतनी देर में सब को उड़ा दूँगा। वह कहता इस पत्ते को उड़ा दे। वह न उड़ा। वह कहता, मुझे नहीं था पता यह कौन है। इन्द्र गया, इन्द्र के साथ यक्ष ने बात भी न की। इसलिये वह देवताओं के अहंकार का भंजन किया। भई कर्ता पुरूष परमेश्वर है, आप व्यर्थ में अहंकार करते हो। जब तक ईश्वरीय शक्ति न हो, तब तक कोई काम नहीं होता। जो भी होता है, परमेश्वर की कृपा, परमेश्वर की शक्ति के साथ होता है, इसलिये परमेश्वर सूर्य आदि सब का कर्ता भी वही है, रक्षक भी वही है।

राख एकु हमारा सुआमी।
सगल घटा का अंतरयामी।। (प ष्ठ ११३६)

वह जो सब के हृदयों में अन्तरयामी है वह समस्त विश्व का रक्षक है।

चारि कुंट दह दिसै समाहि।।

चार प्रकार के प्राणियों और दसो दिशाओं, चार दिशाओं सबमें व्यापक है, कोई स्थान नहीं, जहां परमेश्वर न हो।

तिस ते भिन्न नही को ठाउ।।

कोई स्थान ही नहीं, जहां परमेश्वर न हो, सोने के कंगन में आप सारा सोना निकाल लें, कंगन भी नही रहेगा। इसलिये वह आप ही है सब भाई ! वहां परमेश्वर नहीं, ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां परमेश्वर नहीं। तुम्हे पता ही है रामायण पढ़ने वालो को। वह जब राम गये, बाल्मीकि को मिले, उसने उस तटपिवट का आदर किया। उसने कहा मुझे ऐसे स्थान बताओ ? मैं सुमिरन करूंगा जो एकान्त स्थान हो। वे बाल्मीकि कहते - हाँ बताऊँगा। लेकिन जहां तुम हो वह स्थान मुझे बता दो, मैं आपको बता दूंगा सुमिरन करने वाला स्थान। इसलिये कोई स्थान नहीं जहां परमेश्वर न हो भाई ! जहां सोना न हो, वहां गहना होता ही नहीं, जहां मिट्टी न हो वहां मिट्टी का बर्तन होता ही नहीं। वह सबमें परिपूर्ण परमेश्वर है, मद जन जनारदन है। सबके हृदयों में स्थित है, अलग अलग शरीर के कारण लगता है, है तो एक। जी हां -

गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ।।

और गुरू की कृपा द्वारा यह 'आत्म सुख' तुम तो पाओगे भाई! 'आत्म सुख' गुरू की कृपा बिना आज तक किसी को मिला नहीं और न भविष्य में मिले।

भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ।।
पूछहु ब्रहमे नारदे बेद बिआसै कोइ।। (प ष्ठ ५६)

गुरू साहिब कहते, अरे भाई ! गुरू के बिना ज्ञान नहीं होता, जाकर ब्रह्मा से पूछ लो, नारद से पूछ लो, व्यास को पूछ लो अथवा उसके ग्रन्थ पढ़कर देख लो। इसलिये आप पर गुरू कृपा होगी तो यह 'आत्म सुख' आपको प्राप्त होगा। आज तक बिना गुरू की कृपा के 'आत्म सुख' नहीं किसी को प्राप्त हुआ, संसार के सुख हो जायेंगे।

बेद पुरान सिम्रिति महि देखु।।

वेद, पुराण, २७ स्मृतियां पढ़कर देख लो।

ससीअर सूर नरव्रत्र महि ऐकु।।

यह चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्रों में उसका ही प्रकाश है, उस परमेश्वर का प्रकाश है। सूर्य में स्थित होकर वह प्रकाश आप करता है। नक्षत्रों में स्थित होकर प्रकाश आप करता है, चन्द्रमा में बैठकर स्वयं प्रकाश करता है। स्वयं फलसों में दस उड़ेलता है। यह गीता में सब कुछ लिखा हुआ है। चलें -

बाणी प्रभ की सभु को बोलै।।

यह है प्रभु की वाणी। इसको प्रभु की वाणी बोलते हं। अहलाम को परमेश्वर की वाणी कहते हैं। चाहे वह मुहम्मद को हुआ, चाहे वह नामदेव को हुआ, चाहे कबीर को हुआ। इहलाम का नाम परमेश्वर की वाणी है। वे वाणी सब बोलते हैं यह । गुरू साहिब सारे भक्त, ये भट्ट सब परमेश्वर और कौन सी वाणी है परमेश्वर की ?

आपि अडोलु न कबहू डोलै।।

आप असंग है, स्थिर है, कभी कम्पायमान नहीं हुआ, अस्थिर तो मन होता है। आत्मा आज तक किसी का भी कम्पायमान नहीं हुआ। संसार में आत्मा कभी किसी को कम्पायमान होता ही नहीं, मन अस्थिर होता है। मन में हम बहुत कुछ भर लेते हैं, वह जब बहुत कुछ भर लेते हैं न, हमें स्थिरता मिलती है कभी ? कभी हृदय गति भी रूक जाती है, वह इतना कहां सहन करे ? वह मन उसको इतनी चिंता होती है, बुरा हाल हो जाता है। वह मन अस्थिर होने वाला है, आत्मा कभी अस्थिर नहीं हुआ। ब्रह्मज्ञानी कभी डांवाडोल नहीं हुआ, गुरू गोबिन्द सिंह कभी डांवाडोल हुए ? जी हां -

सरब कला करि खेलै खेल।।

समस्य शक्तियों के द्वारा अपना 'खेल' खेलता है। सारा संसार है। आपके, सामने अपनी शक्ति करके एक खेल है।

मेलि न पाइअै गुणह अमोल।।

उसका कीाी मूल्य नहीं पड़ता, उसके जो गुण है, वे अमूल्य हैं। उसका गुण है सत्य, वह अमूल्य है। उसका कोई मूल्य नहीं। उसका गुण है संतोष, इसका कोई मूल्य नहीं। लिखा है न !

सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई। (प ष्ठ ८२२)

ये गुण परमेश्वर के, इनका मूल्य नहीं पड़ता। सत्य का मूल्य कोई डालकर दिखा दे ? संतोष का मूल्य नहीं पड़ता। जब उसके गुणों का मूल्य नहीं पड़ता। वह तो अमूल्य से भी अमूल्य है, उसका कोई मूल्य नहीं।

सरब जोति महि जा की जोति।।

समस्त ज्योतियों में जिसकी 'जोति' है। छः बाह्य ज्योतियां हैं, इनको छोड़ दो, सबके भीतर आंतरिक ज्योति है। हृदय में बैठा ज्योति स्वरूप परमेश्वर, वह सर्वत्र एक है, वे दो नहीं ज्योति एक है। ज्योतियां हम अनेक कह देंगे, लेकिन ज्योति एक ही होगी। ये बल्ब प्रकाश करते हैं, लेकिन बिजली तो एक हैं। इसलिये परमेश्वर सब में एक ही है, ये समस्त ज्योतियां उसकी हैं।

धारि रहिओ सुआमी ओत पोति।।

ताना पेटा, यह ताना है, वह पेटा है, है सूत। इस प्रकार समस्त सृष्टि को धारण किया है उस स्वामी मालिक ने।

गुर परसादि भरम का नासु।।

जब गुरू की कृपा हो गई भ्रम का नाश तब हुआ। जब तक गुरू कृपा नहीं होगी तब तक भ्रम का नाश नहीं होगा।

जन नानक बिनु आपा चीनै मिटे न भ्रम की काई।। (प ष्ठ ६४८)

जब तक यह गुरू की कृपा से अपने को नहीं पहचानता, उतेने तक इसका भ्रम नहीं मिटता। यह संसार भोगेगा, जितना भी मांगेगा।

मागनि माग त एकहि माग।।
नानक जा ते परहि पराग।। (प ष्ठ २५८)

यदि तुम ने मांगना है तो एक परमेश्वर को मांग, तुम्हारे समस्त कार्य सिद्ध हो जायेंगे। जब तक तुम एक के मांगने वाले नहीं बनते, तब तक तुम कुछ नहीं हो।

जउ मागहि तउ मागहि बीआ। जा ते कुसल न काहू बीआ।।

(पष्ठ २५८)

गुरू अर्जुनद देव कहते ओये ! जब तक तुम द्वैत मांगते हो, तुम्हे कभी सुख नहीं होगा। तुम जो कुछ भी मांगते हो, द्वैत मांगते हो, तुम माया मांगते हो अथवा प्रकृति।

मागनि माग त एकहि माग।। (पृष्ठ २५८)

तुम भगवान् को मांगो, लेकिन उसको तो मांगे का कोई बिरला। चलिये -

नानक तिन महि ऐहु बिसासु।।

यह विश्वास, उन सब पर गुरू की कृपा हो गई, पुष्टि हो गई। उनको यह विश्वास हो जायेगा, भई ठीक बात है। एक का मांगने वाला बन, एक के चरणों में पड़ एक का सुमिरन कर, जो कुछ भी कर दे, एक से विलग न हो।

संत जना का पेखनु समु ब्रहम।।

कहते, संत किसको कहते हैं ? जो सब भी परमात्मा के दर्शन करे, अन्य क्या निशानी है संत की, एक ही निशानी है, जो चाहे भाई कन्हैया हो, चाहे उधो हो, कोई हो, सर्वत्र परमेश्वर देखता है, वह संत है।

संत जना कै हिरदै सभि धरम।।

समस्त धर्मों का स्वामी धर्म, संतों के हृदय में बैठा है, परमेश्वर प्रकट हुआ है।

संत जना सुनहि सुभ बचन।।

संत सदैव शुभ वचनों को सुनेगे। इसने शुभ, यह भगवान् के वचन सुने, इन सब ने तो यहां एक ही स्थान आपके लिए एक गुरू ग्रन्थ साहिब बन गये भाई ! यहां से देख लो जो कुछ तुम देखना चाहते हो। भ्रम निकलना पड़ेगा।

सरब बिआपी राम संगि रचन।।

वह समस्त व्यापक जो रचा हुआ राम है, उसके साथ एक हुये हैं।

रमत राम जनम मरण निवारै।। (पृष्ठ ८६५)

जब यह राम से मिल गया, इसका जन्म-मरण भी काटा जायेगा।

जिनि जाता तिस की इह रहत।।

जिन्होंने यह जाना, यह उनकी मर्यादा है, गुरू ग्रन्थ साहिब। उन संतों की मर्यादा है जिन्होंने परमेश्वर को जान लिया।

सति बचन साधू सभि कहत।।

भई जितने भी साधु हैं, वे सत्य वचन कहेंगे। यह वाणी किसी को सुना दो, सत्य वचन कहेंगे। भगवान् की कही हुई बात, किसी को सुना दो, सभी सत्य वचन कहेंगे।

जो जो होइ सोइ सुखु मानै।।

ये हुक्म में होते हैं।

जो जो होइ सोइ सुखु मानै।।

यह हुक्त है। यह हुक्म तुम जानते ही हो सब।

करन करावनुहारु प्रभु जानै।।

करने एवं कराने वाला एक परमेश्वर है, अन्य कोई नहीं। करने और कराने वाला एक परमेश्वर ही है।

अंतरि बसे बाहरि भी ओही।।

जो आपके हृदय में स्थित है। बाहर भी वही है वह व्यापक है।

नानक दरसनु देखि सब मोही।।

जिसने भी परमेश्वर का साक्षात कर लिया, दर्शन हो गये, उसकी बुद्धि मोहित हो गई। फिर संसार के योग्य नहीं रही। कबीर की बुद्धि संसार योग्य रही

क्यों ? कभी झूठ बोला ? नामदेव की रही कभी ? नहीं -नामदेव की वाणी में तो स्वयं ही आता है -

बदहु की न होउ माधउ मो सिउ।। (प ष्ठ १२५२)

कहता - मेरे साथ शर्त लगा ले, परमेश्वर को कहता। तुम्हारे बिना हमारा काम नहीं चलता, हमारे बिना तुम्हारा नहीं चलता। हम सदैव कहते रहते हैं, परमेश्वर मालिक बड़ा सर्वज्ञ है, ज्ञाता ज्ञेय है, रक्षक है। हम आपके आश्रित होकर चलते हैं। इसलिये तुम मेरे साथ शर्त लगा लो, ईश्वर को कहता, सम्मुख खड़े होकर कहता। इसका अभिप्राय यह है कि ऐसे भी भक्तजन हुये हैं जो परमेश्वर के सम्मुख होकर भी ऐसे बात करते हैं।

आपि सति कीआ सभु सति।।

तिसु प्रभ ते सगली उतपति।।

आप सत्य है और यह समस्त संसार सत्य है। सत्य से ही सत्य उत्पन्न हुआ और असत्य से सत्य आत तक कभी नहीं हुआ। यह तो उपनिषदों में बहुत आता है।

तिस भावै ता करे बिसधारु।।

जब उसको अच्छा लगता है तो संसार का विस्तार करता है परमेश्वर।

कई बार पसरिओ पासार।।

सदा सदा इकु एककार।। (प ष्ठ २७६)

जब उसको अच्छा लगता है तब विस्तार करता है। यदि उसको अच्छा लगे तो एक परमेश्वर प्राप्त हो जाता है।

अनिक कला लखी नह जाइ।।

अनेक शक्तियां है परमेश्वर की भाई ! लिखी नहीं जा सकती।

जिसु भावै तिसु लए मिलाए।।

जो उसके हुक्म में हो गया, उसको अपने साथ मिला लेता है।

बंदि खलासी भाणै होइ।।

होरू आखि न सकै कोइ।। (प ष्ठ ५)

जब हुक्म में खड़ा हो गया, इसकी मोक्ष हो जाएगी।

कवन निकटि कवन कहीअै दूरि।।

दूर समीप का प्रश्न तो होता है यदि दो, चार, तीन हो। अब समीप किसको कहें और दूर किसको कहें ? वह तो एक है। एक में कभी दूर समीप का प्रश्न ही नहीं होता, वह तो एक है।

आपे आपि आप भरपूरि।।

वह आप ही सब में परिपूर्ण है।

घट घट मै हरि जू बसै।।

सबके हृदयों में वह परमेश्वर बैठा है।

अंतरगति जिसु आपि जनाए।।

भीतर की गति जिसको वह जता दे।

नानक तिसु जन आपि बुझाये।।

उसको अपना आप पहचान करवा देता है। उसको अपने आप की पहचान आ जाती है। वह आपा पहचान कर परमेश्वर के साथ एक हो जाता है।

सरब भूत आदि वरतारा।।

यह सर्वज्ञ ज्ञान है।

सरब भूत आपि वरतारा।।

सब भूतों में वह व्याप्त है, चार प्रकार के प्राणियों में।

सरब नैन आपि पेखनहारा।।

समस्त नेत्रों द्वारा देखने वाला एक परमेश्वर ही है।

सगल समग्री जा का तना।।

समस्त सामग्री इस का कार्य है, उसी से उत्पन्न हुई है।

आपन जसु आप ही सुना।।

अपना यश अपने कानों से स्वयं ही सुनता है।

आवन जानु इकु खेलु बनाइआ।।

आना-जाना एक खेल बनाया हुआ है। लेकिन एक बात और भी है, तुम कानों से सुनोगे, जो वह सुनने वाला है, वह, वही है जब देखोगे, देखने वाला भी वही है। आगे रूप होगा, मंत्र होंगे, अन्तःकरण की वृत्ति जायेगी लेकिन देखने वाला वही होगा। चौदह त्रिकुटियों का साक्षी एक ही है वह परमेश्वर। वह सबका ज्ञाता एक ही है, परमेश्वर।

आगिआकारी कीनी माइआ।।

यह जो संसार का कार्य है, यह कौन चलाता है ? कहता मैं।

आगिआकारी कीनी माइआ।।

माया को आज्ञाकारी बना दिया।

सब कै मधि अलिपतो रहै।।

सब के हृदय में निर्लिप्त होकर असंग होकर रहता है।

जो किछु कहना सु आपे कहै।।

जो कुछ भी हुक्म देना हो, आप वह हुक्मी देगा, अन्य कोई हुक्म देने वाला नहीं है, हुक्मी वही है। माया उसके हुक्म में है। प्रकृति उसके हुक्म में है, समस्त सृष्टि, उसके हुक्म में है। लेकिन हुक्मी आप है।

आगिआ आवै आगिआ जाए।।

और जीव क्या है ? क्या कहता कर्मों के अनुसार आज्ञा में आता है, आज्ञा में जाता है, कर्मों के अनुसार। जिन में अज्ञान है, जन्म-मरण में आता रहेगा, जब तक इसको स्वरूप का ज्ञान नहीं होगा, इसका जन्म मरण कोई नही काट सकेगा।

नानक जा भावै ता लए समाए।।

जब परमेश्वर को अच्छा लगेगा तो अपने साथ मिला लेगा। चल! फिर जन्म-मरण काट देगा।

इस ते होए सु नाही बुरा।।

यह जो साक्षात् परमेश्वर हृदय में बैठा है, यह कभी बुरा नहीं करेगा।

ओरै कहहु किनै कछु करा।।

अन्य कोई कर्ता बताओ ? इसके बिना परमेश्वर के बिना अन्य कोई बताओ ? अन्य कोई कर्ता नहीं है, अन्य कोई करने वाले है नहीं। जो कुछ यह करेगा, भला ही करेगा।

आपि भला करतूति अति नीकी।।

आप भला है, उसका समस्त कार्य भला है, परमेश्वर का। ईश्वर का समस्त कार्य भला है। उसका हुक्म ही मानना भई ठीक है।

जो तुधु भावै साई भली कार।

तू सदा सलामति निरंकार।

आपे जानै अपने जी की।। (पृष्ठ ३)

ज्ञाता, ज्ञेय अन्य कोई है नहीं, एक चेतन है, वही दाना, वही बीना, वही द्रष्टा, वही पारख, वही व्यापक है, अन्य कोई है नहीं। वह आप ही अपनी बात जानता है, वह ज्ञाता, ज्ञेय है, सर्वज्ञ है।

आपि साचु धारी सभ साचु।।

आप वह सत्य है, जो सुसज्जित है, यह भी सत्य है।

ओति पोति आपन संगि सचु।।

ताना-पेटा की भांति। एक ताना होता है, एक पेटा होता है, लेकिन सूत एक ही होता है। इस प्रकार ताना-पेटा की भांति सर्वज्ञ व्यापक है।

ता की गति मिति कही न जाइ।।

उसकी मर्यादा और उसकी जो प्राप्ति की गति है,, यह कहीं नहीं जा सकती, यह किसी के कहने में नहीं आती। वह आप ही सब कुछ जानता है।

दूसर होइ त सोझी पाइ।।

अन्य कोई है नहीं, पहचाने कौन ? मैं एक स्थान पर कथा करता था, एक और भक्त बैठा था। कहता - ओये ! क्यों पहचान र्आ कि नहीं ? यह देख ले। मैंने कहा उल्टा अर्थ करता है तू इसका। यहां तो दूसरे का खण्डन है, दूसरा कोई हो तो पहचान पड़े। पहचान रूप तो आपका अपना आप चेतन ही है। पहचान तो उसकी आनी है। यह संसार की पहचान यह पहचान तो नहीं है। संसार की पहचान कितनी भी तुम्हे आ जाये, कितने चतुर हो जाओ - यह

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै।। (प ष्ठ २६५)

जितनी बुद्धिमत्ता इसमें होगी उतना यमों के समीप जायेगा।

बहुत सिआणय जम का भउ बिआपै।। (प ष्ठ २६५)

यदि लोगो को ठग लेगा, अब तो रिवाज ही पड़ गया है, भारत में भई जितना ठग सके उतना ही व्यक्ति अच्छा। अब तो सब में यह धर्म ही बन गया है लोगो का। इनको पहचान ही नहीं है बिल्कुल। मैंने अच्छे से अच्छे लोगों के साथ बनाकर के देखी है - न जी स्च से तो पूरा ही नहीं पड़ता आजकल न जी सच से तो रोटी ही नहीं मिलती। उसको पूछे, रोटी देने वाला तो ईश्वर है, तेरा बाप क्या रोटी देने वाला ? वह तो सत्य है, उस सत्य ने तो रोटी देनी है सबको न जी सच से तो रोटी नहीं मिलती आजकल। उसको कहो, झूठ बोलो दबकर ससुरों। तुम स्वयं तो गल-सड़ गये लोगों को क्यों गालते हो तुम? ओये ! तुम तो गये आये, लोगों को खराब क्यों करते हो ? दाल मिस्सी खा लो, जैसी मिल जाये, परमेश्वर ने देनी अवश्य है। वह देगा, उस पर भरोसा करो, ऐसे कहो, कुछ लाभ हो जाये। चलें -

तिस की कीआ सभु परवानु।।

जो कुछ परमेश्वर ने किया है, उसको स्वीकार कर लो, भई जो ईश्वर करता है, ठीक करता है। और हम भी यह बात करने लग जाते हैं भई कौन जीतेगा ? मुझे कहते कौन जीतेगा ? मैंने कहा, पता मुझे भी नहीं जीतेगा कौन ? दौड़ फिरते हो। न न बाद में सोचते हैं, भई यह पागलपन क्यों किया, बाद में तो सोचते हैं, भई यह तो महामूर्खता का काम है। भई जिसने जितने जीते, तुम राम राम करो, तुम अपन सुमिरन करो। हां - मैंने एक नामधारी से कहा, उसने मुझे माथा टेका, दूध पिलाया, मैंने कहा - नाम जपा कर। कहता - यह नहीं हम से जपा जाता। मुझे कहता, यह आपके जिम्मे है। दूध, मक्खन, आटा जो कहोगे ला दूंगा लेकिन यह हमसे नहीं जपा जाना। हम तो गृहस्थी व्यक्ति हैं। यह आपका काम है, यह काम आप किया करो। मैंने कहा - न, मैंने कहा लो कर लो इसका भला। वैसे अच्छा सूझवान् था, बाद में जब बातें की तो कहता जी नाम तो प्रभु की कृपा से जपा जाता है अथवा संतों की कृपा से जपा जाता है और आप हमको कहते हैं, तुम जपो, यह तो आपके जिम्मे है। मैंने कहा, कर लो इसके साथ बात और बात उसकी सत्य थी, मैं समझ गया, सच्चा व्यक्ति है, यह वह आप करता था और लोगों की है सारी उल्टी बात। तुम स्वयं हम सब बैठे हैं, कोई नाम जपते हैं ? सब माया के पीछे दौड़े फिरते हैं, भगवान के पीछे कोई दौड़ा है कभी ? प्रातः उठेंगे तो माया की ओर दौड़ेगे। ऐसे करो ओये ! यह करो ओये, वह करो ओये। हां ! करो सब कुछ प्रयत्न, लेकिन सच तो साथ रखो आप। अन्य देशों में सच तो है आप से अधिक। इन भारतवासियों ने अपना सत्य सारा, उन देशों को भेज दिया है। फिर काम करने हैं अपने अपने। मुझे यदि पता हो बात न दूं भइ। जितने हैं, तुम क्यों बढ़ाकर बताते हो ? हम ऐसे जी, हम ऐसे हैं, धर्म तो एक है **'सच'**।

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ।।
नानकु वरवाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।। (प ष्ठ ४६८)
सरब रोग का अरखदु नामु।।
कलिआण रूप मंगल गुण गाम।। (प ष्ठ २७४)

तीसरी औषधि बताओ कौन सी है ? दोनों रोग हैं बड़े -

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।
एक तिसना बडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ।। (प ष्ठ ६१६)

तृष्णा का इतना बड़ा रोग है, मरना भी स्मरण नहीं रहता। मुझे वे शामगड़िये बताते थे। वह जब मरने लगा न सरदार, उसकी तीन बेटे खड़े थे, यहां हस्ताक्षर

करो जी, यहां हस्ताक्षर करो। वह कहता, मर तो लेने दो अब। वह बांट की हुई थी न। मुझे उन्होंने बताया। फिर वह कहता, ओये ! अब मर तो लेने दो, अब तो समय दे दो और इसलिये -

एक तिसना बडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ।। (प ष्ठ ६१६)

मरना भी किसी को स्मरण नहीं। लेकिन तृष्णा -

सहस खटे लख कउ उठि धावै।
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावे।। (प ष्ठ २७८)

सौ मिल जायें तो कहता सहस्र हो जायें। हज़ार आ जाये, लाख हो जाये, लाख वाले कहते हैं करोड़ हो जाये। बस ! दौड़ जाते हैं सब, कोई खड़ा देखा है आपने कभी ? भई बस अब नहीं आवश्यकता कभी खड़ा देखा ? कोई नहीं, बिल्कुल नहीं, कहेंगे और हो जाये। इसलिये भाई, यह बड़ा रोग है। चलिये -

गुर प्रसादि नानक इहु जानु।।

गुरू की कृपा से इस बात को जान लें, भई परमेश्वर का हुक्म माने, जो परमेश्वर करता है।

जो तुधु भावै साई भली कार।
तू सदा सलामति निरंकार।। (पृष्ठ ३)

जो परमेश्वर तुमने किया, बहुत अच्छा किया।

जो जानै तिसु सदा सुख होइ।।

जो इस बात को जान लेगा उसको सदा सुख हो जायेगा, आत्म सुख प्राप्त हो जायेगा।

आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ।।

उसको स्वयं प्रभु मिलायेगा। उसको मिलने की आवश्यकता नहीं, आप उसको आप मिलायेगा प्रभु। वे गुरू गोबिन्द सिंह घोड़े पर बैठे जा रहे थे और साथ में एक सिक्ख था। आगे एक साधु सा सिक्ख था, वह लिखा हुआ है, वही साखी (कथा) इतिहास में। वह कहता गुरू साहिब को, मुझे गुरूमंत्र दीक्षा दे दो। वे कहते - समय का विचार तो कर। उसी को वह कहने लग गया 'वेला वकत विचार' वेला, वक्त विचार गुरू गोबिन्द सिंह उधर चले गये, जिधर जाना था। वे जब चले गये, वे कहते वहां चलो। वह सिक्ख तो वहीं बैठा है। वे जब दूसरे दिन आये, वह वहीं बैठा 'वेला वकत विचार' 'वेला वकत विचार' कहता जा रहा था। गुरू साहिब कहते, लो करो बात इसकी। उसने कहा गुरू मंत्र दे दो मुझे। दूसरे दिन आकर उस पर कृपा की, घोड़े से उतरे, फिर उसके शीश पर हाथ रखा, फिर उसके द्वार खोले तब गये। वह कहता - लो, कर लो सिक्ख की बात। उसको यह नहीं था पता, यह क्या है ? गुरू साहिब ने कहा - 'वेला ककत विचार' भई समय तो देख ले। उसने उसी समय ही आरम्भ कर दिया, भई गुरू मंत्र दे गये। वह दूसरे दिन गुरू साहिब दोबारा आये, उसको मुक्त किया तब पीछा छूटा। ले, निश्चय ऐसी वस्तु है। वह अर्न्तयामी है, न परमेश्वर उसका जो कुछ किया हुआ है, उसके हुक्म को मान ले, भई ठीक है।

ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु।।

वह बड़ा धनी है, बड़ी कुलवाला, वही बड़े आदर मान वाला है।

जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु।।

जिसने अपने हृदय में भगवान् को अपना स्वरूप जान लिया वह सब कुछ है।

धनु धनु धनु जनु आइआ।।

ऐसे व्यक्ति धन्य है भाई।

जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ।।

जिसकी कृपा से समस्त जगत का उद्धार हो गया। अब तुम देख लो सच, कबीर ने कितने पार किये ? गुरू नानक देव और दसों पातशाहियों ने कितनों का उद्धार किया, त्रिलोचन ने कितनो का उद्धार किया, त्रिलोचन ने कितनों का उद्धार किया ? नामदेव ने कितने पार किये ? रामानन्द ने 'तेरा' (तेरह) का उद्धार किया। इन्होंने लिखे हुये हैं। इसलिये भाई ! समस्त संसार का उद्धार करने के लिये आते हैं। शेष सब कृत्रिम बाते हैं, व्यर्थ होती हैं। ये शराअ् की बातें बनाई हुई भिन्न

भिन्न, अपनी अपनी ये गलत होती हैं। यह समस्त काम गलत बताता है, चाहें तुम उसको कितना अच्छा मानते हो है गलत। तुमने सब में ईश्वर को देखा नहीं, जब तक सब में ईश्वर नहीं देखते। सब में ईश्वर तो भाई कन्हैया ने देखा था, दशम् पातशाह ने कृपा की, सब को पानी पिलाता गया। तुम यह बताओ ? जब वे लड़ते थे मुसलमान, उनको पानी जाकर पिलाता था। वे गोली चलाना बंद कर देते थे, सिक्ख कहते आ गया, वह पानी वाला सिक्ख है, गोली बंद कर देते थे। इसलिये, क्यों ? उसने एकता देख ली थी सब में। इसका समस्त कार्य सिद्ध हो गया। जिसने सब में ईश्वर के दर्शन नहीं किये, उसका कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा। वह तो भेदवादी है, उसको बुरा, उसको भला। यह मन कमबख्त ऐसा बिगड़ा हुआ है यह इधर से हटता ही नहीं है शीघ्र। चलिये -

जन आवन का इहै सुआउ।।

ये संसार में जितने महापुरूष आये हैं - दास कबीर, नामदेव, धन्ना, ईसा, मुहम्मद जितने भी आये हैं, उनका प्रयोजन यही है भई सत्य मार्ग पर चलो। ईसा ने कितनों को सत्य मार्ग पर डाला, कितने कष्ट उठाये लेकिन सब को सत्य मार्ग पर डाल दिया। वह कैसे लूट रहे थे सब। जब किसी के बड़े का देहांत होता था वे पूछते थे भई हमारा यह बड़ा बाप कहां जायेगा ? वे कहते - कितने रूपये देगा ? वे नीचे एक व्यक्ति को बिठा देते थे, उनके इतिहास में लिखा हुआ है, घर वालों से पूछते थे यह कितने रूपयों में जायेगा ? वह कहता - दस हज़ार के साथ। जब दे देते, जाओं स्वर्ग में जायेगा। कितनी अंधेर गर्दी मचा रखी थी, यह तुम्हारें पंडितो, काज़िओं फलां आदि का कितनी अंधेर गर्दी मचा रखी है सबको अलग-अलग किये जा रहे हैं। पहली बार हम कश्मीर गये मुसलमान इतना प्यार करते थे, हम कभी समीप जाते तो उठकर खड़े हो जाते साधु समझ कर। जब दूसरी बार गये, हमें हाथ से पानी नहीं दिया, कहते काफिर हैं। यह किन लोगों ने डाला ? वह काज़ियों ने डाला। ये सब ही काम बिगाड़ने वाले हैं, संवारने वाला जो धुर से आया है - वह है। ये जितने भी आये इन्होंने संसार को तार दिया, इन्होंने लोगों को सत्य मार्ग पर डाला, अन्य किसी को नहीं, क्यों ? उनको सत्य का मार्ग प्राप्त ही नहीं हुआ। जब तक उनको ही नहीं प्राप्त हुआ सत्य तुम्हे कैसे बतायेंगे भई ?

जन के संगि चिति आवै नाउ।।

जिस प्रभु के दास के पास जाने से नाम याद आ जाये समझ लो भई यह बहुत अच्छा बस !

आपि मुकतु मुकतु करै संसारू।।

वे स्वयं मुक्त थे।

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए।

जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए।। (प॰ ७४६)

ये पर उपकारी आये। ये स्वयं मुक्त थे और संसार को मुक्त करने वाले हैं।

नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारू।।

उनको नमस्कार करो, जो स्वयं मुक्त है और लोगो को मुक्ति का मार्ग बताता है।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

११

सोरठ महला ५।।

गुर मिलि प्रभू चितारिआ।। कारज सभि सवारिआ।।
मंदा को न अलाए।। सभ जै जै कारू सुणाए।। १।।
संतहु साची सरणि सुआमी।।
जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु अंतरजामी।। रहाउ।।
करतब सभि सवारे।। प्रभि अपुना बिरदु समारे।।
पतित पावन प्रभ नामा।। जन नानक सद कुरबाना।। २।।

(पृष्ठ ६२७)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!

सोरठि महला ५।।

पंचम पातशाह-

गुर मिलि प्रभू चितारिआ।।

जब हम गुरू रामदास जी को मिले, हमने प्रभु को याद किया। प्रभु का नाम सुमिरन चल गया, हमारे भीतर नाम का प्रवाह चल पड़ा।

कारज सभि सवारिआ।।

हमारे समस्त कार्य सिद्ध हो गये, अपने आप ही सभी कार्य सिद्ध हो गये। एक हमारे जन्म स्थान 'दौद' के समीप गांव **'लसोई'** है तीन मील पर। वहां एक संत रहते थे, उसका नाम **'माडू दास'** था। पहले उसने बारह वर्ष तप किया। बारह वर्ष के पश्चात् गांव में एक स्थान था बहुत ऊंचा, उसको **'जोगी पीर'** कहते थे। जंगल में, वहां फिर बैठ गया। बारह वर्ष वहां सुमिरन करता रहा। रोटी, लोग रख आते थे, हमारे बुजुर्ग। हमने भी स्वयं देखा है। रोटी जब उसका दिल चाहता खा लेता था। ऊंचा स्थान था और वह जो बर्तन व पोणा (लपेटने के लिए वस्त्र) होता था उसको जोर से फैंकता और लोग आकर उसे उठा लेते थे, जिनका होता था। बारह वर्ष के पश्चात् वह लसोई चला गया। जंगल में गुफा बना ली, वहां फिर उसने तप किया। जो भी उन्होंने उपदेश दिया पांच सात को, दोबारा वे घर के काम के न रहे, नाम सुमिरन ही चला उनका। हरनाम दास एक खत्री था, वह उसके पास छः वर्ष जाता रहा, वह गालियां भी देता था। चल निकल जा यहां से कह देता। छः वर्ष बाद उसने आप ही बताया हरनाम दास ने, जब मैं गया। उसने कहा बैठ, तुझे उपदेश दें, उसने उपदेश दे दिया। चार मास वह घूमता रहा, केवल जंगलों में। एक उसकी आवाज़ 'रामा राम राम, रामा राम राम' यह उसकी आवाज़। चार मास पश्चात् उसके घर वालों ने लाकर जंजीर लगा दी उसको, भई यह पागल हो गया। एक बुद्धिमान व्यक्ति बुलाओ। कहता पागल तो तुम हो, मैं पागल नहीं, बुद्धिमान को जंजीर में जकड़ दिया। वह जब आया कहता, पागल तो तुम हो, यह तो बुद्धिमान है, खोलो इसकी जंजीर। उसने खुला दी। फिर उन गांवों में रहा, बहुत अच्छा संत था, हमने देखा है, हम एक साथ भी रहे दस बारह दिन। जब आठ पहर नाम के साथ उसका मन जुड़ा। अंत में मृत्यु भी उसकी ऐसे ही हुई। वह कहता ओ मुसलमानों ! तुमें यहां से दौड़ना पड़ेगा, सिक्खों हिन्दुओं ने वहां से दौडना है, लेकिन यह सब कुछ मैंने नहीं देखना। फिर यह हुआ सब कुछ। जो कुछ भी उसने कहा था, वही हुआ। वह फक्कड़ (मस्त मौला) संत था।

गुर मिलि प्रभू चितारिआ।।

वह हरनाम दास कहता होता था, माडू दास! तेरा स्वर्ग में निवास हो, बैकुण्ठ में, पार लगा दिया, निकाल दिया। माडू दास ने साथ मिलकर राम नाम चल पड़ा।

कारज सभि सवारिआ।।

सभी कार्य सम्पन्न हो गये, मुक्ति भी हो गई, जन्म-मरण से छूट गये, संसार के समस्त कार्य सिद्ध हो गये, बड़ा कार्य तो मुक्ति है। मोक्ष भी हो गई,

जन्म-मरण हो गई, जन्म-मरण कट गया।

मंदा को न अलाए।।

किसी को बुरा न कहना, यह बात गुरू अर्जुन देव जी कहते, देखना किसी को बुरा न कहना। **'घट घट मै हरि जू'** है। सबके हृदय में परमेश्वर बैठा है। यदि तुम बुरा कहोगे, परमेश्वर को ही कहोगे बुरा और तो कोई सत्ता ही नहीं। इसकी अपनी तो सत्ता कोई है नहीं, इसलिये किसी को बुरा न कहना।

सभ जै जै कारू सुणाए।।

सब को जय जयकार सुनाया कर। जय हो भई परमेश्वर की। लोग कहते हैं, जय हो रविदास की, जय हो कबीर की, जय हो जयदेव की। इसलिये जब इस जीव पर कृपा होती है, लोग इसकी अपने आप ही जय जयकार करने लग जाते हैं।

संतहु साची सरणि सुआमी।।

संतो! एक मैं आपको, गुरू साहिब कहते यह बात बहुत सुंदर बताता हूँ नानक की, शरणागति ले लो मालिक की। यह सच्ची प्रीति है, यह तुम्हें सत्य के साथ मिला देगी। कबीर ने भी लिखा है -

सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ।
जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ।। (प ष्ठ ४८०)

माया से कोई बड़ा नहीं, जिसने बड़े तीन देवताओं को छल लिया। पुराण पढ़कर देख लो, इस माया से कोई बड़ा नहीं। कबीर साहिब ने कहा तुम ? वह कहता -

स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई।।
जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई।। (प ष्ठ ४८०)

सत्य की पहचान, माया से अलग कर देती है। जब इसको सत्य की पहचान हो जाये, फिर यह माया की ओर नहीं जाता। एक बालक को आप खोटा रूपया दे दें, जब वह किसी के पास जायेगा, वह कहेगा 'खोटा' है और फिर उसको खरा

रूपया दे दो, वह खोटे को फैंक देगा। इसलिये जब उसको सत्य की पहचान हो जाये फिर वह जीव असत्य के पास नहीं जाता। इसको अभी सत्य की पहचान नहीं हुई। अभी यह असत्य को सत्य समझता है, अनात्मा को आत्मा समझता है। इसलिये भाई ! सत्य की पहचान से जीव का उद्धार हो जाता है।

जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै

ये जितने भी जीव-जन्तु हैं, सब परमेश्वर के आधीन है। इनका खाना-पीना, बड़ा-छोटा, भला-बुरा, सब परमेश्वर के हाथ में हैं। परमेश्वर कृपा के साथ बदल देता है।

जा कउ अपुनी करै बखसीस।।
ता का लेखा न गनै जगदीस।। (प ष्ठ २७७)

सदन ने क्या काम किया ? शरण पड़ गया। लालो ने क्या काम किया ? शरण पड़ गया। कौडे राक्षस ने क्या काम किया ? शरण पड़ गया। वेश्या (जीवन्ती नाम की) ने क्या काम किया ? शरण पड़ गई।

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा। (प ष्ठ ६३२)

अजामिल को सब जानते थे, बड़ा पापी है, लेकिन एक क्षण में, आंखों के पलक मारते ही मुक्त हो गया। जब इसने नारायण कहा जितने भी यम गण थे निकाल दिये और राम गण आ गये। उन्होंने कहा यह पापी है, और हमें तुम आकर निकालते हो। यह पापी है, सब जानते हैं। कहता - क्या कहता है ? कहता - नारायण। फिर नारायण तो समस्त पापों को काट देता है।

रामानंद सुआमी रमत ब्रहम।।
गुर का सबदु काटै कोटि करम।। (प ष्ठ ११९५)

गुरू का शब्द तो करोड़ों कर्मों को काट कर रख देता है, सकाम पुण्यों एवं पापों को, फिर तो मुक्ति हो जाती है। यह कहता क्या है ? कहता - नारायण। फिर यहां तुम्हारा क्या काम है ? इसलिये भाई ! यह तर (मुक्ति हो) जाता है। नाम में इतनी शक्ति है भाई !

जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै

वह परमेश्वर के हाथ है समस्त जीव-जन्तु की मुक्ति करनी और कर्मों के अभियान वालो को बांधना।

सो प्रभु अंतरजामी।। रहाउ।।

वह परमेश्वर सब के भीतर अन्तःकरण में सब को देखता और जानता है, प्रकाश करने वाला है।

करतब सभि सवारे।।

हमारे समस्त कर्मों को संवार दिया गुरू अर्जुन देव जी कहते। अमृतसर तीर्थ बना दिया, तरन तारन बना दिया, श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की बीड़ बंध गई, करतार पुर बस गया। जो भी हमें कहा था हमारे सब काम परमेश्वर ने कर दिये।

प्रभि अपुना बिरदु समारे।।

और परमेश्वर ने कितना काम किया। अपना प्रण, हम जब शरण पडे, उसका एक धर्म है, जो शरण आये, उसको गले लगा लेता है, पाप पुण्य काट देता है। उसने अपना प्रण नहीं छोड़ा। उसने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया।

पतित पावन प्रभ नामा।।

वह जो प्रभु का नाम है, यह पतितों को पवित्र कर देता है। बाल्मीकि कितना पापी था, राम नाम ने पवित्र कर दिया। गणिका कितनी पापिन थी, राम नाम ने पवित्र कर दी। यह नाम पवित्र करने वाला है। गुरू अर्जुन देव जी कहते - भाई ! नाम न छोड़ना।

जन नानक सद कुरबाना।।

श्री गुरू अर्जुन देव जी कहते - उस परमेश्वर से मैं सदा कुर्बान जाता हूँ।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू।। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१२

सोरठि महला ५।।

साहिबु गुनी गहेरा।। घरू लसकरू सभु तेरा।।
रखवाले गुर गोपाला।। सभि जीअ भए दइआला।। १।।
जपि अनदि रहउ गुर चरणा।। भउ कतहि नही प्रभ सरणा।।रहाउ।।
तेरिआ दासा रिदै मुरारी।। प्रभि अबिचल नीव उसारी।।रहाउ।।
बलु धनु तकीआ तेरा।। तू भारो ठाकुर मेरा।। २।।
जिनि जिनि साधसंगु पाइआ।। सो प्रभि आपि तराइआ।।
कर किरपा नाम रसु दीआ। कुसल खेम सभ थीआ।। ३।।
होए प्रभू सहाई।। सभ उठि लागी पाई।।
सासि सासि प्रभु धिआईए। हरि मंगलु नानक गाईऐ।। ४।।
(पष्ठ ६२२)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !! चलो जी -

सोरठि महला ५।।

धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि।।
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरू अरजुनु परतख हरि।। (पष्ठ १४०८)

श्री गुरू अर्जुन देव, अब पांचवीं गद्दी पर आ गये। ईश्वरीय वाणी जो परमेश्वर की ओर से आई, उन्होंने उसका उच्चारण किया, उसको हुक्मनामा कहते हैं। यह गुरू नानक का हुक्मनामा है। जो हुक्मनामा होता है, वह सही होता है। इसलिये -

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ।।

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ।। (प ष्ठ १)

जब यह जीव हुक्म में आ जाता है, फिर कोई बात नहीं करता। उस परमेश्वर का हुक्म -

जो तुधु भावै साई भली कार।।

तू सदा सलामति निरंकार।। (प ष्ठ ३)

जो परमेश्वर करता है, उसका हुक्म जो होता है, उसको अपने शीश पर सही करके मानना चाहिये।

साहिबु गुनी गहेरा।।

वह **'साहिबु'** सब का स्वामी परमेश्वर है, सर्वगुण सम्पन्न है। उसमें सब गुण हैं, समस्त शक्तियां हैं। उसके घर में कोई वस्तु ऐसी नहीं जो न हो। वह जब दयालु हो जाये तो सब काम ठीक हो जाते हैं।

जन नानक हरि भए दइआला

तउ सभ बिधि बनि आई।। (प ष्ठ २१६)

जब परमेश्वर दयालु हो जाये तो समस्त विधियां बन जाती हैं। परमेश्वर से बड़ा, संसार में कोई नहीं है। सब से बड़ा साहिब, मालिक, परमेश्वर है। जो कुछ करता है, वह बिल्कुल सही करता है। जीव के कर्मों के अनुसार करता है। कृपा करता है तो भी वह अपनी खुशी से करता है, वह बड़ा कृपालु और दयालु है।

धरु लसकरू सभु तेरा।।

यह जो हमारा घर, सम्पत्ति जो कुछ है शरीर तक, हे परमेश्वर ! गुरू अर्जुन देव जी कहते, यह आपका है। यह आपकी है, आपकी कृपा है।

रखवाले गुर गोपाला।।

रक्षक दो होते हैं।

राखा एकु हमारा सुआमी।। सगल घटा का अंतरजामी।। (प ष्ठ ११३६)

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।

नानक जीअ का इहै अधार।। (प ष्ठ २६५)

गुरू ब्रह्मज्ञानी और गोपाल समस्त संसार का मालिक परमेश्वर, यह हमारा रक्षक है। परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य हर्ता-कर्ता कोई नहीं। सृष्टि की उत्पत्ति, पालना, लय, परमेश्वर करता है। उसके हुक्म के साथ सब कुछ होता है। उसके हुक्म में व्यक्ति को हाथ जोड़ना चाहिये। जो उसका हुक्म है, वह सही है।

सभि जीअ भए दइआला।।

सारे जीव दयालु हो गये, जब आपकी कृपा हो गई। हे परमेश्वर! हे सतगुरू!!

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा।।

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा।। (प ष्ठ ६६४)

परमेश्वर जितना बड़ा कोई नहीं। हर्ता कर्ता परमेश्वर है और गुरू वह होता है जो परमेश्वर का मार्ग **'नाम'** बता दे। गुरू का काम होता है, नाम बताना, परमेश्वर का काम है कृपा, दया, मेहर करनी।

कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु राम।।

रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु।। (प ष्ठ १३७३)

संत ने नाम बताना है परमेश्वर का, और जपना जिज्ञासु ने है। वह नाम जो बताया हुआ हो उसको दिन-रात रटता रहे और परमेश्वर को नमस्कार करता रहे, वह परमेश्वर दाता है।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई।। (प ष्ठ २)

उसको कभी भूलना नहीं दाता को। वह समस्त जीवों का दाता है। दात परमेश्वर के हाथ में होती है, गुरू के हाथ में, नाम बताना होता है। ये सब सही वस्तुएं हैं।

जपि अनदि रहउ गुर चरणा।।

लेकिन गुरू के चरणों में लगकर, उस नाम को जपते रहो।

१ ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।जपु।। (प ष्ठ १)

वास्तव में यह ईश्वरीय वाणी है, यहां तक। इससे आगे श्लोक है सत्य का। यह है ईश्वरीय वाणी, इसमें किसी का नाम नहीं आया।

आदि सचु जुगादि सचु।। है भी सचु नानक होसी भी सचु।।

(प ष्ठ १)

इस श्लोक में गुरू का नाम आया है। गुरू नानक साहिब का।

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।

ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।। (प ष्ठ १४०८)

वह परमेश्वर का नाम जो हो, जपना है और गुरू ने नाम बताना है। उस नाम को कभी छोड़ना नहीं है।

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई।। (प ष्ठ २)

कभी उसको भूलना नहीं है।

नाम संगि जिस का मनु मानिआ।।

नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प ष्ठ २८१)

नाम संगी सो मनि न बसाइओ।।

छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ।। (प ष्ठ ७१५)

इसने जो पदार्थ छोड़कर जाना था, उनके साथ चित्त लगा लिया, नाम के साथ मन को नहीं जोड़ा। यदि नाम के साथ मन लगाता तो परमेश्वर प्रसन्न होकर बड़ी कृपा करता। इसलिए इसका भाई ! गुरू परमेश्वर रक्षक है। इसको नाम प्राप्त हुआ है, उस नाम को जप-जप कर इसका जीवन सुमार्ग पर आना है।

भउ कतहि नही प्रभ सरणा।।

जब परमेश्वर की शरण पड़ जाये, फिर कोई भय नहीं। फिर इसको भय नहीं है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। (गीता १८/६६)

कोई चिंता मत कर, परमेश्वर के शरणागत होने पर कोई भय नहीं रहता।

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै

इहु बिरदु सुआमी संदा।। (प ष्ठ ५४४)

जो परमेश्वर की शरण पड़कर परमेश्वर का नाम जपता है, वह परमेश्वर उसको स्वंय ही संभाल लेता है। आप ही उसकी रक्षा करता है। वह अंतर्यामी है।

राखा एकु हमारा सुआमी।।

सगल घटा का अंतरजामी।। (प ष्ठ ११३६)

वह जो सब के हृदयों में है।

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।। (प ष्ठ १४२७)

यदि आपने संसार से पार होना है, परमेश्वर को प्रसन्न करना है, वह सब के हृदयों में जो परमेश्वर है, उसका नाम जपा कर, वह सब का रक्षक है। भाई कन्हैया ने हिन्दूओं, सिक्खों, मुसलमानों को युद्ध में जल पिलाया, वह पास हो गया। श्री गुरू दशम् पातशाह महाराज ने उस पर ऐसी कृपा की, उसके समस्त पाप कट गये, शुद्ध हो गया। उसको यह वरदान मिल गया, तेरा एक पंथ चलेगा। वह पंथ यह जो कहते हैं सेवा गुरूद्वारों की, यह सब सेवा पंथी हैं। यह पंथ उस भाई कन्हैया का है। उस पर कृपा हो गई। इसलिये, इसको परमेश्वर का नाम जपना चाहिये और परमेश्वर को मानना चाहिए।

गुरू परमेसरु एको जाणु।।

जो तिसु भावै सो परवाणु।। (प ष्ठ ८६४)

गुरू और परमेश्वर एक होते हैं, ये दो नहीं होते। ब्रह्मज्ञानी गुरू और परमेश्वर ये दोनों एक होते हैं। उनकी सेवा करने से समस्त कार्य सिद्ध हो जाते हैं। भाई कन्हैया पास हो गया। उसके इतिहास में बात आती है एक। भई गुरू

साहिब के पास एक शिकायत गई, भई यह तो महाराज, शत्रुओं को भी पानी पिलाता रहता है, यह तो कोई भेदी है। यह तो कोई ऐसा व्यक्ति है जो दोनों ओर मिला हुआ है। वे गुरू साहिब के पास आये। गुरू साहिब ने कहा भाई कन्हैया को बुलाओ। उसको बुलाया। उन्होंने शिकायत की। गुरू साहिब कहते - एक पानी का गड़वा (बर्तन) लाओ वह लाये। कहते इसमें एक पत्थर डाल दो, एक पताशा डाल दो, डाल दिया। हिलाओ इसको हिलाया। हिलाया कहते- निकालो। वह पत्थर निकल आया। वह पताशा पानी के साथ घुलकर उसके साथ एक हो गया। गुरू साहिब कहते, पताशा भी निकालो, कहते पताशा तो महाराज पानी के साथ एक हो गया। दशम् पातशाह कहते, यह हमारे साथ एक हो चुका है और तुम तीस-तीस वर्षों से सेवा करते हो, सब पत्थर के पत्थर। उन सब के भीतर से चिंगारियां निकली आग की। कहते तुम्हारे भीतर तो तृष्णा रूपी आग है, तुम्हारे भीतर तो वे अवगुण हैं। इसलिये वह पास हो गया। यह शरण पड़ गया, शरण पड़कर इसने नाम जपा, सेवा की। पहले दो काम इसके आवश्यक हैं - सेवा और सुमिरन। दोनों ही **'स'** हैं। इन दोनों 'स' से पहले इसने पकड़ने हैं। सेवा निष्काम करनी है और -

सेवा करत होइ निहकामी।।

तिसु कउ होत परापति सुआमी।। (पृष्ठ २८६)

कामना नहीं करनी, वह परमेश्वर अन्तर्यामी है, सर्वज्ञ है। वह तो सब जानता है, अन्तर्यामी है, और सेवा करनी है और नाम का सुमिरन करना है। नाम के सुमिरन में एक बड़ी शक्ति है। यह पहले काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि के साथ बाहर द्वैत में उलझता है फिर यह मनोराज्य करता है। यदि सुमिरन आपका हो गया, एक दम हो जायेगा एक रस। वह समस्त द्वैत आपकी दूर हो जायेगी, आपका मार्ग साफ हो जायेगा। फिर आप परमेश्वर से मिल जाओगे। ये दो कार्य पहले करने हैं, सुमिरन एवं सेवा निष्काम।

सेवा करत होइ निहकामी।। (पृष्ठ २८६)

निष्काम सेवा करे।

तिसु कउ होत परापति सुआमी।।

उसको स्वामी प्राप्त होता है। भई मंझ आदि जिन्हों ने भी सेवा की, वे पास हो गये और भाई बहिलो ने सेवा की तो गुरू स्वामी ने कहा -

"भाई बहिलो सब से पहिलो"

आ गया ? मांग क्या मांगता है ? वह कहता, जी आपने तो बड़ी कृपा कर दी, मुझे आत्मा की प्राप्ति हो गई। आपकी दया हुई है, आपने मेरे पर बड़ा उपकार किया। और भी कुछ मांग। उसने कहा - और हमारे यहां पानी का अभाव है। उन्होंने कहा फलां टोबा में एक ईंट उठा देना जाकर शिला। उसने उठा दी, वह अब तालाब बना है। बड़ा पानी ही पानी, जल ही जल हो गया। लोगों ने उसका बड़ा उपकार माना, भई तुम ने बड़ा काम किया, हमें जल दे दिया। वह कहता जल भी परमेश्वर ने दिया, मेरे पर कृपा भी परमेश्वर ने की है, मेरी मोक्ष भी परमेश्वर ने की है, लेकिन तुम्हे पता नहीं है परमेश्वर बड़ा दयालु और कृपालु है। इसलिये परमेश्वर की सेवा करो निष्काम, भई यह सब परमेश्वर की सृष्टि है और सेवा निष्काम करो। और तुम देखते नहीं हो ? वे बनाते है एक गुरूद्वारा और दे जाते हैं अकालियों को, वे आप तो नहीं रहते बनाने के बाद। इसलिये सेवा और सुमिरन निष्काम करो। कभी नाम को छोड़ो नहीं। ये दो कार्य आपको परमेश्वर के साथ मिलाप करा देंगे। सुमिरन आपका मार्ग साफ कर देगा।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।

नानक जीअ का इहै अधार।। (पृष्ठ २९५)

जब तक आपका सुमिरन नहीं चला, आपका कुछ भी नहीं बन। यह तुम अब अपने आप सोच लो। क्यों ? आपके भीतर मनोराज्य होता है। तुम देखो मन कई तरह करता है मनोराज्य ? आप बातें करता जाता है कि नहीं ? और वह फिर जब तक मनोराज्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार आदि नहीं निवृत्त होंगे, वह द्वेष तो आपके जिम्मा पड़ी रही। आप तो द्वेष में फंसे रहे। वह द्वैत तो सुमिरन ने साफ करनी है।

खोजत खोज ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।

अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।। (प ष्ठ ७१४)

यदि तुम परमेश्वर से अपना सुख की कामना करते हो, अपना सब कुछ चाहते हो, तुम सदा परमेश्वर का सुमिरन करते रहना।

अजामल पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा।। (प ष्ठ ६३२)

अजामल पापी था, समस्त संसार जानता था, लेकिन वे संत नाम बता गये थे, उसने नहीं छोड़ा। वह नाम जपता था। उसको **'नाराइण'** नाम देकर गया था। वहां लिखा हुआ है। **'नाराइण'** नाम है जो नरों का स्वामी हो, परमेश्वर, मालिक का नाम देकर गया था। उसका जब देहांत हुआ वे रामगण भी आ गये और भयगण भी आ गये। वह यमों ने कहा, यह तो पापी है, तुम क्यों आये ? वे कहते, कहता क्या है ? कहता - बोलता है **'नाराइण', नाराइण, नाराइण**। कहता फिर कभी नाम जपने वाला भी पापी होता है।

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही।।

पतित पवित भए रामु कहत ही।। (प ष्ठ ७१८)

राम जपने वाले पापी बाल्मीकि आदि पवित्र हो गये।

काहे न बालमीकहि देख।। (प ष्ठ ११२४)

इसलिये बाल्मीकि की ओर क्यों नहीं देखता ?

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख।।

वह कहता -

रे चित चेति चेत अचेत।। (प ष्ठ ११२४)

उस चेतन परमेश्वर का चिंतन कर, हे अचेत भूले हुये मन और फिर क्या है ?

काहे न बालमीकहि देखि।। (प ष्ठ ११२४)

तुम बाल्मीकि की ओर क्यों नहीं देखते, कितना दस्यु पापी था।

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ। (प ष्ठ ११२४)

कौन सी उसकी जाति थी और किस पदवी पर वह पहुंच गया। वह महाऋषि हुआ है। भील था जाति का, वह महाऋषि हुआ है, उसके एक ग्रास खाने से, वह सारा यज्ञ सम्पूर्ण हो गया उनका। इसलिये -

काहे ना बालमीकहि देखि।। (प ष्ठ ११२४)

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख।।

यह राम भक्ति में शक्ति है, परमेश्वर की भक्ति में शक्ति है, यह समस्त कार्य कर देती है। यह नाम नहीं जपता, निष्काम सेवा नहीं करता, इसलिये इसकी सड़क साफ नहीं होती है। यह मनोराज्य काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि यही काम करता जाता है, साथ में नाम भी जपता रहता है। यह तो मिलावट सी हो गई, कभी इधर तो कभी उधर। उसका काम ठीक नहीं होता। क्यों ?

दुबिधा में दोनों गए, ना माइआ मिली ना राम।

द्वैत में दोनों जायेंगे, न तुझे माया मिले न राम मिले। तुम एक ओर होकर उस नाम को जप, वह नाम तुम्हारे समस्त कार्य सिद्ध करेगा।

रहाउ।।

'रहाउ' रागियों के लिए होता है। पहली पंक्ति दोबारा कहनी है। इसमें रहस्य होता है, सारे शब्द का।

तेरिआ दासा रिदै मुरारी।।

तुम्हारे दासों में जो **'मुरदैत'** को मारने वाला **'मुरारी'** सगुण और जो अहंकार को मारने वाला निर्गुण, वह तुम्हारे दासों के हृदयों में प्रकट होता है। यह **'घट घट मै हरि जू'** बसा हुआ होता है। वह प्रकट साक्षात होता है, वह परमेश्वर।

प्रभि अबिचल नींव उसारी।।

यह **'अबिचल नीव'** है। यह कभी जायेगी नहीं। यह पक्की नींव है, इसलिये भाई! यह पक्की नींव है कि परमेश्वर का नाम कभी छोड़ना नहीं।

ऊठत बैठत सोवत नाम।।

कहु नानक जन कै सद काम।। (प ष्ठ २८६)

यह नहीं भूलना, संसार में व्यवहार करते हुये।

साचि नामि मेरा मनु लागा।।

लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।। (पृष्ठ ३८४)

नाम नहीं छोड़ना, संसार में और बाहर नहीं फंसना है। नाम के साथ पूर्ण दिल लगाकर रखना, और बातचीत व्यवहार में **'ठाठा बागा'** रखना। वास्तविक नाम नहीं कभी छोड़ना। परमेश्वर को भूलना नहीं कभी।

बलु धनु तकीआ तेरा।।

समस्त बल एवं धन **'तकीआ'** अर्थात् आसरा, यह आसरा तेरा है, परमेश्वर ! तुम्हारे बिना मेरा अन्य कोई नहीं है।

तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु।। (पृष्ठ ४६८)

तुम्हारे बिना, सब झूठ है। तुम ही परमेश्वर मेरा आसरा हो, तुम ही मेरे स्वामी हो, तुम ही बल प्रदान करने वाला, तुम ही मेरे रक्षक हो। हे परमेश्वर !

तू भारो ठाकुर मेरा।।

तुम सब से बड़े 'ठाकुर' हो मेरे। बाहर से भी **'ठाकुर'** लोगों ने गले में डाल रखे होते हैं। एक दिन आया था हमारे पास भी, उसने बड़ी नमस्कारें की। वे ठाकुर चांदी का बनाकर डाल लेते हैं, उसको भोग लगवा कर खाते हैं और पानी पीते हैं हर समय। वह गुरू अर्जुन देव जी के पास भी ठाकुर का उपासक आया, साथ में उसके कोई और था। उन्होंने कहा जी यह ठाकुर का उपासक है। इसके गले में जो ठाकुर है उसको भोग लगाये बिना, कभी नहीं खाता। गुरू साहिब ने कहा- ना

घर महि ठाकुरु नदरि न आवै।।
गल महि पाहुण लै लटकावै।।
भरमे भूला साकतु फिरता।।
नीरू बिरोलै खपि खपि मरता।। रहाउ।।
जिस पाहण कउ ठाकरु कहता।
ओह पाहणु लै उस कउ डुबता।।
गुनहगार लूण हरामी।।
पाहण नाव न पारगिरामी।।
गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता।
जलि थलि महीअलि पूरन विधाता।। (पृष्ठ ७३६)

वह हमारा **'ठाकुर'** तो सर्वत्र-परिपूर्ण है। यह तो भ्रम में पड़ा हुआ है। यह तो पत्थर है, पत्थर की नांव पर आज तक कोई पार नहीं हुआ। मूर्ति पूजा से किसी की कभी मोक्ष नहीं हुई। वास्तविक बात तो यह है जो मूर्ति पूजक हैं उनको यह बात लगेगी तो बुरी, लेकिन है गुरू साहिब की सच्ची। आज तक मूर्ति पूजा, भगवान् ने नहीं कलहवाया। वे अधिक से अधिक धन्ने का दृष्टांत देंगे। धन्ना तो, उसके शब्द पढ़कर देखो, वह तो कहता परिपूर्ण है सब में, वह तो सब की पालना करने वाला है। वह तो इस ठाकुर को धन्ना तो अपने शब्दों में कहता है। लेकिन लोगों ने एक उदाहरण ले लिया है, वह धन्ना को तो साक्षात् परमेश्वर प्रकट था। पूर्व जन्मों में उसने अर्जित किया था, इस जन्म में उसे यह फल होना था। उससे अलग परमेश्वर है नहीं था।

जिनि जिनि साधसंगु पाइआ।।

जिन्होंने भी साधुओं की संगति की, महापुरूषों, परमेश्वर के प्यारों की।

सो प्रभि आपि तराइआ।।

परमेश्वर ने उसको स्वयं तार दिया। उसका जिम्मेवार परमेश्वर स्वयं हो गया जिसने संतों की संगति की।

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा।।
नामु प्रभू का लागा मीठा।। (पृष्ठ २६३)

पंचम पातशाह कहते, संत गुरू रामदास जी के साथ मिलकर हमने परमेश्वर अपने अन्दर देखा, हमें कोई शंका नहीं रही है। लेकिन संत का मिलाप किसको होता है ?

पुन्य पुंज बिनु मिलहि न संता।

सत संगति संसृति कर अंता।। (मानस ७.४५)

जब उसने निष्काम पुण्यों के समूह फल देने के लिए सम्मुख होते हैं तब इसको संत का मिलाप होता है। लेकिन वह होता है प्रभु की कृपा से, इसको नहीं पता होता। वह प्रभु की कृपा से होता है, वह फिर परमेश्वर के साथ मिल जाता है।

प्रेम भगति उधरहि से नानक
करि किरपा संतु आपि करिओ है।। (प ष्ठ १३८८)

संत को तो परमेश्वर बनाता है। ब्रह्मज्ञानी भी परमेश्वर ही बनाता है।

ब्रहम गिआनी से जन भए।।
नानक जिन प्रभु आपि करेइ।। (प ष्ठ २७२)

वह परमेश्वर स्वामी है **'ब्रहमगिआनी'** बनाने का, संत बनाने का। इसका एक ही काम है, इसने निष्काम सेवा और सुमिरन नहीं कभी छोड़ना। आठों याम, यह इसका काम है जीव का। वह परमेश्वर स्वयं इसका ध्यान रखेगा। बिना परमेश्वर के अन्य किसी का नाम नहीं जपना और न किसी पर विश्वास लाना और गुरू का इतना परोपकार है, उसने हमें नाम बताया, सीधे मार्ग पर डाला। इसलिये वह भी हमारा पूजनीय है और उससे भी कुर्बान जाना चाहिये, पंचम पातशाह कहते।

सो प्रभि आपि तराइआ।।

वह पुरूष, प्रभु ने स्वयं पार लगाया जो ऐसा पुरूष था, प्रभु पर भरोसा करने वाला, सुमिरन करने वाला, सेवा करने वाला और शरणागत हो गया था। वह परमेश्वर ने स्वयं पार किया।

करि किरपा नाम रसु दीआ।।

बड़ी कृपा की परमेश्वर ने, हमें वह नाम का रस दे दिया, हम नाम जपने लग गये। वह हमारा मन, नाम के साथ जुड़ गया और तब हमें रस आने लग गया, यह तो बड़ी ऊंची अवस्था है। जब उसके नाम का रस आ जाये तो अन्य रस फिर इसको फीके लगेंगे, अन्य कोई रस इसको अच्छा नहीं लगेगा।

कुसल खेम सभ थीआ।।

कहते सारा ही **'कुसल खेम'** हो गया, आनन्द ही आनन्द हो गया, अब दुःख तो कोई रहा नहीं। दुःख तो मन की ही उपज था, अन्य तो नहीं कोई दुःख होता यह मन ने ही दुख सुख बनाये हैं, यह आत्मा ने तो दुःख सुख नहीं बनाये। चेतन तो दुःख सुख नहीं देता होता। वह तो -

सुख दुख रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई।।
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई।। (प ष्ठ ६३२)

वह तो ऐसा है परमेश्वर। यह तो इसने कल्पना की है, दुःख सुख। यह मेरे गोत्र हैं, यह मेरी जाति है, ये मेरे सम्बन्धी हैं, ये मेरे शत्रु हैं, ये मेरे मित्र हैं, यह तो आपने मन में कल्पना की है। जैसे कर्म किये, वैसा इसके मन में अंकुर पड़ गया। वह अंकुर अब इससे निकलते नहीं हैं। यह बात है कुसंगति में यह बढ़ता जाता है। जब इसको **'सति पुरख'** का संग मिल जायेगा, फिर यह नाम को लेकर सुखी हो जायेगा। फिर परमेश्वर ने इसको नाम का रस स्वयं ही प्रदान करना है, इसके परिश्रम के अनुसार। जब यह उसका दास बन जायेगा, उसकी शरण पड़ जायेगा, इसको नाम रस आ जायेगा।

होए प्रभू सहाई।।

परमेश्वर ने आकर सहायता की। अजीता रंधावा बैल हांकता, वह गाधड़ (बैठने का स्थान) के ऊपर बैठता थे, जब रहँट हांकते होते थे। वह बैठा था और मिट्टी की टिण्डा (छोटे छोटे घड़े) होती थीं तब। और गुरू नानक को जब पता लगा, इसके पूर्वजन्म का मेरे साथ सम्बन्ध है, यह इसका कार्य करना है। वे पीछे मुड़े। उसने कहा - हाँ ? यह तो उन खत्रियों का महमान दामाद है और स्नान करने आया है। वह गुरू साहिब ने उस पर ऐसी कृपा की तो उसे वह वस्तु प्राप्त हुई, नाम दे दिया, नाम का रस आ गया। वह चरणों पर गिर पड़ा। कहता - मैं तो बहुत बुद्धिहीन था, मैं तो आपके आने पर खड़ा भी न हुआ, मैंने तो आपका सत्कार भी नहीं किया। वे कहते - अजीते ! तुझे पता नहीं, वह समय आ गया था, पूर्वजन्म का। वह तेरा समय आया था और हमने यह कार्य करना था। फिर वह अजीते ने बड़ी सेवा की, अजीता रंधावा ने और बहुत सेवा की, लोगों ने कहा,

बई तुम तो बड़े भटके हुये हो। उसने तो गुरूनानक के जो सास ससुर थे बिगड़े हुए उनको भी कहा, ओये ! शरण पड़ जाओ, वे भी शरणागत हुये। इसलिये, जब समय आता है पूर्व जन्मों का, पुण्यों का, तो इसको संत मिल जाता हैं और जब संत का मेल हो जाये, इसको नाम-दीक्षा मिल जाती है। नाम की प्राप्ति होने से, इसका मन नाम के साथ जुड़ जाता है, इसको आनन्द आ जाता है और 'बाबे बुड्ढ़े' को जाते ही क्यों ऐसा हो गया ? अजीते रंघावे को जाते ऐसा क्यों हो गया? उस अजीते को तो यह भी नहीं था पता, भई यह कौन है वह तो अपने आपको बड़ा समझता था कि मैं बड़ा जमीदार हूँ और यह दामाद है खत्रियों का, स्नान करने आया है और पीछे उसके गुरूनानक आते हैं चलते। वह रहँट हांकता था, वह खड़ा नहीं हुआ और न कुछ उसने कहा और क्यों ? उसका पूर्व पुण्य उदित हो गया था। उस पुण्य को प्रकट करने के लिए गुरू नानक ने उसको वस्तु प्रदान कर दी, उसका उद्धार हो गया।

सभ उठि लागी पाई।।

सब परमेश्वर के चरणों से जुड़ गये। सब परमेश्वर पर विश्वास करने लगे, परमेश्वर के दास हो गये।

सासि सासि प्रभु धिआईऐ।।

भाई ! एक बात तुम स्मरण रखना, *'सासि सासि प्रभु धिआईऐ।'* कभी परमेश्वर को भूलना नहीं, किसी श्वास के साथ। संसार का समस्त कार्य करना, परमेश्वर को नहीं भूलना। कोई श्वास आपका व्यर्थ न जाये जो नाम के बिना निकल गया, वह व्यर्थ है श्वास। वह नाम के बिना कोई श्वास आपका व्यर्थ न जाये। नाम का सुमिरन करना, नाम नहीं कभी छोड़ना और परमेश्वर के सम्मुख जाकर शरण पड़ना। भई परमेश्वर तुम्हारे हैं, अन्य किसी के नहीं।

हरि मंगलु नानक गाईऐ।।

कहते, हरि के मंगल हो जायेंगे, फिर मंगल गायन करना, गुरू नानक देव कहते। हरि का मंगल यही है, जो श्वास श्वास नाम जपोगे। आपके समस्त कार्य मंगल (सिद्ध) हो जायेंगे। यह कर्तव्य भई आपने करना। यह शिक्षा गुरू अर्जुन देव जी ने दी है। भई जीव को ऐसे करना चाहिए।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१३

सोरठि महला ५।।

अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई।।
गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई।। १।।
मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई।।
जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुडि दूखु न होई।।रहाउ।।
वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई।।
तिनकी धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई।। २।।

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !!

इसको अपने जैसी कोई वस्तु मिली नहीं। पहली बात तो यह आप को 'मन' मानता है। मन के धर्म को लेकर जीव बन गया, फिर इसको जीव कहने लगा। जीव तो वह होता है, जो उत्पत्ति, नाश और पालने वाला हो। जीव तो वह होता है जिसको तृष्णा भी हो, जो किसी के आगे जाकर प्रार्थना भी करे, जीव तो वह होता है और अविनाशी किसी के आगे जाकर प्रार्थना नहीं करता। अविनाशी की कोई मांग नहीं होती। वह तो 'सोई प्रकाश' 'सुते सिध' होता है और नित्य होता है और जीव भी कोई वस्तु है, जिनका वह दाता है, जिसकी उत्पत्ति, पालना, लय करता है, उसको जीव कहते हैं और वह जीवों का दाता है।

राखा एकु हमारा सुआमी।।
सगल घटा का अंतरजामी।। (प ष्ठ ११३६)

फिर वह अंतरयामी भी है। यदि वह अंतरयामी न होता तो दाता कैसे बनता? वह 'जीअन के दाता' तो सर्व जीवों का दाता है, यह एक का दाता तो है

नहीं। जो वह अंतरयामी है, सब के हृदयों में बैठकर, सब की बुद्धि, मन का ज्ञान करता है और सब की भूख प्यास को जानता है। हां वह अविनाशी दाता है, वह जो सब की उत्पत्ति, पालन, लय करता है, वह है अविनाशी। उसमें तुम कभी शंका न करना, भई वह भी कोई नाश वाला है अथवा किसी धर्म वाला है अथवा उत्पत्ति, नाश वाला है। उसमें अविनाशी में कोई वस्तु नहीं। जीव उससे अलग हैं, जो उसके सम्मुख प्रार्थना करते हैं। जो मांगते हैं, जिनके अन्दर कोई इच्छा है, जिनके अन्दर कोई तृष्णा है, आशा है, जिनके अन्दर कामनायें हैं, अब आप यह बताओ ? भई ये तुम्हारी कामनायें, तृष्णायें, इच्छायें, आशायें ये भी कहीं आश्रित होंगी ? यह तो तुम अपने अनुभव के साथ देखो भई तुम्हारे अन्दर कोई ऐसी वस्तु भी है जिसके अन्दर तृष्णा भी है और आशा भी है ? आशा तो वृत्ति है, तृष्णा भी वृत्ति है, ये सब वृत्तियां हैं। विचार कहो, वृतियां कहो, परतें कहो, ये तो पर्यायवाची शब्द हैं भिन्न भिन्न भाषा शास्त्रियों के। फारसी वाले ख्याल लिखेंगे और पंजाबी वाले संकल्प लिखेंगे और संस्कृत वाले परते लिखेंगे, वृत्तिया लिखेंगे और प्रत्यक्ष तो कल्पि से अलग होता है। आपके अन्दर प्रत्यक्ष भी तो है। परतें नाम है वृत्तियों का, ख्यालों का, संकल्पों का और कोई प्रत्यक्ष भी तो है जो भीतर बैठा, आपकी समस्त वृत्तियों, ख्यालों को देखता है, वह भी तो कोई होगा। वह अविनाशी है, उसको अविनाशी कहते हैं, उसको द्रष्टा कहते हैं, उसको साक्षी कहते हैं, कोई कोई उसको नितस्वरूप भी कहते हैं। वह क्यों ? आपका आपा निजरूप ही है। इसलिये अब आप दो वस्तुओं की यहां बांट कर के चलना, तो यह शब्द आपके मस्तिष्क में बैठेगा।

अबिनासी जीअन को दाता

अब एक तो अविनाशी है, जीवों का दाता और एक चार प्रकार के प्राणियों के जीव हैं और एक ही हृदय में हैं, ये बाहर तो नहीं हैं। जहां अविनाशी प्रत्यक्ष हृदय में बैठा है, साक्षी होकर बैठा है, द्रष्टा होकर बैठा है, वहां परतें भी तो होगी, ख्याल भी होंगे, संकल्प भी होंगे। इन संकल्पों का जिम्मेवार भी कोई होगा, जिसको इस में प्रच्छिन्न अहंकार होगा। मैंने यह संकल्प किया था गुरू ग्रन्थ साहिब के सम्मुख अरदास की थी, मेरा कार्य पूर्ण हो गया। परसों मुझे एक व्यक्ति कहता - वह काम जी पूर्ण हो गया। कोई बात उसने कही हुई थी, वह उसको लगा हुआ था। ईश्वर ने उसका काम पूरा कर दिया, हमें स्वप्न में भी नहीं पता, भई कब उसका काम पूर्ण हो गया। इसलिये कोई है ईश्वर, है, नियंता, है परमेश्वर। वह सत्य है, अविनाशी है, नित्य है। उसको नित्य सत्ता कहते हैं। अंतर में जाकर जब ग्रन्थकार आगे चले जाते हैं वे समस्त छोड़ते छोड़ते फिर एक वस्तु रह जाती है वह है 'सोऽहम्' सत्ता। वह नित्य सत्ता है इसके आगे कोई भी शब्द नहीं मिलता। यह हमनें संतों के साथ विचार किया, विरक्तों में बैठकर। उन्होंने अंत में यही निर्णय दिया भई यह नित्य सत्ता है। इसके सम्बन्ध में हम कुछ कह नहीं सकते। सत्य भी तो असत्य की अपेक्षा में कहा जाता है समझाने के लिए, नित्य भी तो अनित्य की अपेक्षा से ही कहा जाता है। इसलिये जब वहां वृत्ति उसकी लीन हो जायेगी, क्या कहेगा ? एकाग्रता तक पूर्व संस्कार रहेंगे लेकिन निरूद्ध वृत्ति में तो संस्कार रहते नहीं। निरूद्ध अवस्था तो पांचवी है कि नहीं ? निरूद्ध अवस्था में तो बिना चेतन के कोई वस्तु ही नहीं होती। इसी को लोग समाधि कहते हैं। इसको निर्विकल्प मुद्रा भी कहते हैं। यह भिन्न-भिन्न बातें हैं। वह वास्तविक बात है। वह निहंकार, जीवों का दाता भी है। यदि जीवों का दाता न होता, फिर संसार काल में होता ही नहीं। यह बताया नहीं ?

अबिनासी जीअन को दाता

वह **'अविनासी'** इसका आत्मा है। **'अविनासी'** नाम ही आत्मा का है। वह इसका अपना आप है जीव का। लेकिन इसको भ्रम हो गया, भई यह जो मांग वाली वृत्ति है, शायद इस का ठेकेदार मैं हूँ। लेकिन यह ठेकेदार (स्वामी) तो नहीं है। वह अविनाशी अन्तर्यामी है, वह अविनाशी जीवों का दाता है। अच्छा ! फिर दो वस्तुयें कभी नित्य हो नहीं सकतीं, यह भी तुम विचार कर देख लो। लेकिन गुरू साहिब एका लिख गये। एका लिखा गुरू साहिब ने और फिर अर्थ भी साथ लिख दिये।

साहिबु मेरा एको है।। एको है भाई एको है।। (पृष्ठ ३५०)

प्रतिज्ञा कर दी, मेरा परमेश्वर एक है। गुरू नानक कहते अन्य मेरा कोई परमेश्वर नहीं। एक है तो -

एकम एकंकारू निराला।।
अमरू अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरू रूपु न रेखिआ।। (प ष्ठ ८३८)

ऐसा है, यह इसके विशेषण हैं, कुछ हैं। कहते जी रहता कहां है ? कहते-

खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

और सब के हृदयों में भी अविनाशी बैठा है, हमने खोज कर देखा है, वह सब के हृदयों में है, सब का आत्म रूप है। 'आतमा' नाम है अपने आपका। यदि अपना आप न हो, इसको जड़ का ज्ञान न हो। परतें समस्त जड़ हैं, विचार सब जड़ हैं, वृत्तियां सब जड़ हैं, इसकी सत्ता स्फूर्ति के साथ परिचालित हैं। जड़, अपने आप तो कभी चला नहीं। गाड़ी आपने कभी अपने आप चलती नहीं देखी होगी, चाहते विद्युत पर चलायें, कुछ करें, परिचालित करने वाला कोई परम्परा चेतन ही होगा। मोटर कभी अपने आप नहीं चलती। कोई पुर्जे आप बनाते हो, अपने आप तो कभी बने नहीं। पांच तत्व कभी अपने आप नहीं बने और जिस दिन भी सृष्टि बनी है, छठा तत्व आज तक किसी से नहीं बना। यदि कोई अन्य कर्ता पुरूष होता तो इन पांचों को बदलकर और बना देता। ये पांच तत्व बदले तो नहीं हैं ? तुम अपने शरीर में देख लो, यह हड्डियां पृथ्वी हैं, यह जो रक्त है जल है, इसके आगे अग्नि आयेगी, यह आपका सब कुछ हज़म करती है। यह वायु आपके सम्मुख चलती है, यह पांच प्रकार की है। आगे आकाश है, खाली स्थान और छठा तो वह स्वयं ही है।

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान।।
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु।। (प ष्ठ १४२७)

वह और भी कोई है।

घटि घटि मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।। (प ष्ठ १४२७)

छठा भी कोई नियंता अंदर बैठा है, सृष्टि को परिचालित करने वाला। आपके भीतर भी है। यह नहीं भई बाहर है। वह आत्मा है, वह अपना आप है। वह जो आपका अपना आप है, वह व्यापक नहीं है ? फिर व्यापक की पहचान क्यों न हो। आत्मा को ब्रह्म पहचानने में एक ही वस्तु रूकावट है - माया। माया के विचारों में, इसकी वृत्ति फंस गई। वह वृत्ति अविनाशी के सम्मुख नहीं, वह यहां तक पहुंच चुकी ? इसकी वृत्ति को तो इतना भी समय नहीं मिलता। वह कभी सुषुप्ति में भी कठिनाई से जाता है। कई लोगों को तो नींद भी नहीं आती, गोलियां खाते हैं। वे क्यों खाते हैं ? उनके मन को इतना भी समय नहीं मिलता आराम करने का। इतने विचार उन्होंने अपने अन्दर भर लिए हैं और यह भी विचार इसके मन को छोड़ते नहीं। पहले भाई ! अपने विचार सीमित करो, अत्यंत माया के। फिर अब इसकी ओर ऐसे जाओ, भई यह तो अविनाशी है, यह तो आत्मा है।

जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई।।
एको अम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई।। (प ष्ठ ४२१)

यह वेणी जी लिखते हैं-

जिनि आतम ततु न चीनिआ।।
सभ फोकट धरम अबीनिआ।। (प ष्ठ १३५१)

यह बेणी जी लिखते हैं। कहते जिन्होंने आत्म तत्व को नहीं पहचाना, अपने आपको नहीं जाना।

सभ फोकट धरम अबीनिआ।।

उन्होंने व्यर्थ में धर्मों में जीवन नष्ट कर लिया।

कहु बेनी गुरमुखि धिआवै।।
बिनु सतिगुर बाट न पावै।। (प ष्ठ १३५१)

बेनी कहता, उसका ध्यान करो। जी करते हैं। कहता - बिना सत्गुरू के मार्ग नहीं मिलना, मार्ग नहीं मिलना, चाहे तुम आजीवन खोज करते रहो। यह

तृष्णा, आशा के साथ जुड़ा रहता है और अविनाशी का इसको साक्षात नहीं होता। निरूद्ध अवस्था में नहीं होता, पूर्ण समाधि अवस्था में नहीं होता। इस विचार के सम्बन्ध में दो वर्ष विरक्तों में विवाद होता रहा। कुछ संत बुद्धिमान कहते भई पक्का ज्ञान समाधि से होता है, दूसरे कहते - नहीं विचार से होता है। अब ग्रन्थों में वेदांत में विचार से भी ज्ञान लिखा हुआ है और वशिष्ठ ने तो स्पष्ट ही कह दिया बड़े वेदांती ने भई, जीव प्रयत्न तेरा देव है। यदि तुम बिना प्रयत्न के चाहो, भई मेरी समाधि हो जाये, मुझे ज्ञान हो जाये, गलत है। तेरा पुरूष प्रयत्न ही तुम्हारा देव है। पुरूष प्रयत्न नाम है, भई नाम को लेकर उसका इतना अभ्यास करना और साथ में विचार करना। अब विचार पर निर्णय यह हुआ जो हमने श्रवण किया है, भई जो योग-भ्रष्ट हैं, पहले करते आये हैं, साधन उनके पूर्ण हो चुके हैं। क्षण मात्र उनका रहता था, जैसे कबीर आदि का, उनको विचार से ज्ञान हो गया। उनका शेष तो सब जीता हुआ था। वे तो अभ्यास करते आये, थोडा सा शेष था। अभी इतना कुछ हुआ है, विचार स्वयं ही उत्पन्न हो जायेंगे। जब महापुरूष से भेंट हुई, विचार हुई, उसको स्वरूप का ज्ञान हो गया। लेकिन जो पहले ही अभी साधन करने लगा ही है, उसको विचार से ज्ञान कैसे होगा ? उसको तो यात्रा करनी पड़ेगी, उसको तो अभ्यास करना पड़ेगा। वृत्ति ने शुद्ध तो अभ्यास से होना है। यदि यह न होता तो ऐसा क्यों लिखते वेदांत वाले ?

सुनण, मनण, निदिआसन।

निदियासन की परिपक्व अवस्था का नाम समाधि है।

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ।।

अंतरगति तीरथि मलि नाउ।। (प॰ ४)

अंतर प्राप्त तीर्थ और वृत्ति जब पूर्ण एकाग्र हो जायेगी, वृत्ति का समस्त मलिनता धुल जायेगी, फिर इसने अपने आप वहां स्थिर हो जाना है। अब आप अपनी वृत्तियों की ओर देखो, भई आपकी वृत्तियां कहा को हैं ? प्रातः उठकर ब्रह्म मुहूर्त में, स्नानकर के सच्चे मन से बैठ जाओ, वह स्वयं ही आपकी वृत्तियों में आ जायेगा, जो आना है। इसलिये वह परमेश्वर का जो अभ्यास है, उसके बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होना, गीता इस बात की साक्षी है -

चंचलं कि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढ़म्।

तस्याहं बिग्रहं मन्ये वायोखि सुदुष्करम्।। (गीता ६/३४)

मैंने वायु की गठरी बांध ली, लेकिन मन मेरे वश में नहीं। भगवान् कृष्ण चन्द्र जी लिखते हैं -

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रह चलम्।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृहचते।। (गीता ६/३५)

यह तो अभ्यास और वैराग्य से तुम्हारा कार्य सिद्ध हो जाना है। वैराग नाम है वे-राग। किसी वस्तु के साथ मोह न रहना। राग न रहना समस्त मिथ्या निश्चय हो जाना। फिर अभ्यास उस वस्तु का, सजाति परतियों का, पूर्ण प्रवाह चल पड़े जब, निज अवस्था में पहुंच गया। इसके लिए इस करके इसको कमाने की आवश्यकता है। यह आपमें पहले भी तो तुम्हारे अभ्यास के साथ संस्कार पड़े हैं। यदि संस्कारों का अपने आप ही पड़ने का स्वभाव होता, तो जो आपके संस्कार होते, वही मेरे होते, वही इनके होते। संस्कार एक तो है नहीं सब के, संस्कार तो अलग-अलग हैं। वे संस्कार भी लोगों के पास बैठकर, अभ्यास के साथ ही थोड़े बहुत आये हैं। कुछ स्वयं आये हैं, कुछ पूर्व जन्मों के, कुछ कुसंग से आ गये। सत्संग ने ही उनका नाश करना है। सत्संग ने ही आपको मार्ग बताना है।

बिनु सतिगुर बाट न पावै।। (प॰ १३५१)

ध्यान इसको पहले प्राप्त नहीं होना, ध्यान वैराग्य के बाद लगता है। यह ग्रन्थकारों का नियम है। आपका ध्यान तब स्थिर होगा जब राग न रहे, वे-राग हो जाओगे, तब ही मन वहां बैठेगा। ध्यान की परिपक्व अवस्था को ही समाधि कहते हैं। और क्या है ? इसलिये वह जीवों का दाता, अविनाशी है। अब तुम अपने अन्दर स्वयं देखो निर्णायक बनकर, भई क्या आपके अन्दर जीवपन का निश्चय है कि अविनाशीपन का निश्चय है ? यह तो तुम स्वयं देखो। यदि आपके

भीतर इच्छा है संसार की और विचार है संसार के तो तुम संसारी हो, अविनाशी कैसे हो जाओगे ? ज्ञानी कैसे हो जाओगे ? इसलिये आप ने स्वयं ही देखना है अपने मन को, आप ही तुमने साफ करना है।

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरू।। (प ष्ठ १३६७)

मन शुद्ध आपने अपना आप करना है, उसमें गुरू और परमेश्वर की कृपा की आवश्यकता है। परमेश्वर ने गुरू से मिलाप कराना है, गुरू ने आपको एक नाम के साथ जोड़ना है। नाम के साथ मन जोडना कि तोड़ना यह तो आपका पुरूष प्रयत्न है। जोड़ना पुरूष प्रयत्न है। तोड़ना, टूट जाना तो अभी संसार के संस्कार प्रबल हैं। इसलिये - ऐसा परमेश्वर है, अब पढ़ भई -

अबिनासी जीअन को दाता

अविनाशी, समस्त जीवों का दाता है। उत्पत्ति, पालना, लय करने वाला परमेश्वर नास से रहित है।

सिमरत सभ मलु खोई।।

कहते-जी हमारा जो मल संस्कारों का लगा हुआ है, सकायता का, यह कैसे दूर हो ? कहते - सुमिरन के साथ। सुमिरन तो दूसरी अवस्था है। पहले आपका 'नाम' दृढ़ करके जप, फिर सुमिरन, फिर धुन और फिर लिव अर्थात् लौ। अनाहत भी दूसरी में आ जाना है, एक रस आपका सुमिरन चल जाये। अनाहत किसी ऐसी वस्तु का नाम नहीं। यदि तुम यह अर्थ करो कि अनाहत, आहत से रहित चेतन आत्मा है फिर तुम्हें सुमिरन की क्या आवश्यकता है ? तुम तो हो ही पहले। वह तुम्हारे सुमिरन ने उस एक रस के साथ तुम्हें लिव अर्थात् लौ ने जोड़ना है और सुमिरन तो मन ने करना है, आत्मा ने तो नहीं करना। आत्मा को तो सुमिरन की आवश्यकता ही नहीं। कोई भी साधन किसी ग्रन्थकारों ने आत्मा के लिए तो नहीं लिखा हुआ। जहां द्रष्टा आया वहां जाकर साधन बंद हो गये। गुरू साहिब ने स्पष्ट लिखा है, पंडित था न जो षट् शास्त्री दार्शनिक और उसके पुत्र का देहान्त हो गया और वह शोक में डूब गया। गुरू साहिब कहते -

मूई सुरति बादु अहंकारू।।
ओहु न मूआ जो देखणहार।।
जै कारणि तटि तीरथ जाही।।
रतन पदारथ घट ही माही।।
पडि पड़ि पंडितु बादु बखाणै।।
भीतरि होदी वसतु न जाणै।। (प ष्ठ १५२)

पंडित कहता - जी आप मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे ? गुरू साहिब कहते -

हउ ना मूआ मेरी मुई बलाइ।।
ओहु न मूआ जो रहिआ सभाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।
मरता जाता नदरि न आइआ।। (प ष्ठ १५२)

अब दार्शनिक ने तो आगे वेद-ज्ञान में पहुंचना है।

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा

(श्वेताश्वतर उपनिषद् १७/७७)

वह वेद ने तो एक पर चलना है। 'एको देवा'। वह वेद में भी एका है। अब समस्त दार्शनिक पुराणों में आ गये। कहते, अभिज्ञ है, यह तू ने लिखा हुआ पढ़ा नहीं ? पहले साधु जो होते थे, वे ऐसे ही बोलते थे, वे पुराण से दार्शनिक में जाते थे, दार्शनिक से फिर वे व्यापक में जाते थे। वेद भी वास्तव में एक से जुड़े हैं। एक से वापिस फिर तुम कहां जाओगे भई ? एक से वापिस तुम क्या जीव में जाओगे ? लोगों को बतायेगा भई जीव है। इसलिये बात उसकी सच्ची है, यह बात मैंने भी उसको कही थे। क्यों ? कहता अभिज्ञ है। यह उठकर पहचान करने लग जाता है। संसार भ्रांत हो जाता है, भई यह बात शायद ठीक हो, मैं गलत हूँ, यह ठीक है। इसलिये भाई ! वह अविनाशी है, वह नाश रहित है लेकिन जीवन का दाता भी तो है और दाता होकर याचक तो नहीं हो गया। वह अविनाशी ही रहेगा-

ओहु अबिनासी बिनसत नाही।।

ना को आवै ना को जाही।। (प ष्ठ ७३६)

इधर को जाना, उसके विशेषण तो ये हैं। इसलिये, जीवों का दाता भी है। अब आप अपने भीतर देखो, आपके अन्दर संसार की इच्छा है कि नहीं ? यदि है तो फिर तुम यहां से चलो, जहां तुमने आत्म-विचार करना है। यदि अन्दर आपके संसार की मांग है, फिर तुम्हें समझ भी बहुत कम आयेगी। आयेगी तो अवश्य, लेकिन थोड़ी आयेगी। ये बातें व्याख्यानों की तो नहीं होतीं। आज मैं कहने लगा हूँ, मैंने कभी कहा नहीं है। प्रचारक को जहां से चलना चाहिये, ऐसे जाना चाहिए। गुरू नानक, पंडित के साथ पहले जीव से आरम्भ किया और फिर द्रष्टा में जाकर, व्यापक में गये। व्यापक में कहा -

हउ न मूआ मेरी मूई बलाइ।।
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।
मरता जाता नदरि न आइआ।। (प ष्ठ १५२)

मेरे गुरू ने मुझे वह वस्तु दिखाई, गुरू नानक कहते। मेरा जो **'अकाल पुरख'** गुरू है ने मुझे वह वस्तु दी है, देकर भेजा है। द्रष्टा से आरम्भ करके व्यापक में ले गये। पंडित मोह में खड़ा था, यदि वह द्रष्टा में न जाता पंडित, व्यापक में, तो उसका मोह कैसे नष्ट होता ? वह शब्द वैसे तो नहीं कहा, गुरू साहिब ऐसे ही तो नहीं कहते होते। लेकिन हमें उनका पता नहीं लगता, भई यहां से चलें। वह पढ़ा लिखा बुद्धिमान, यह गंगा सिंह कहते होते थे।

जीव भी, चार प्रकार के प्राणी भी, इस पद में हैं और दाता अविनाशी भी है। अब आप अपने अन्दर देखो। आपके भीतर इच्छा तो नहीं कोई, यदि इच्छा है तो तुम जीव कोटि के अभिलाषी हो। तुम्हें तो अभी पकड़ में भी नहीं आया। जिस दिन आपकी वृत्ति अविनाशी पद में चली जायेगी, इच्छा रह जायेगी कोई आपके भीतर ? तुम दाता हो जाओगे। कभी कोई ब्रह्मज्ञानी मंगता देखा है आपने? कबीर, नामदेव, गुरूनानक ने कभी उन्होंने बिना नाम के कोई इच्छा की ? जब भी उन्होंने उच्चारण किया लोह (तवा) पर बैठों ने। पढ़ो सारे -

हरि का नामु रिदै नित धिआई।।
संगी साथी सगल तरांई।।
गुरू मेरे संगि सदा है नाले।।
सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले।। रहाउ।।
तेरा कीआ मीठा लागै।।
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै।। (प ष्ठ ३६४)

बताओ, नाम के बिना कोई इच्छा आई ? फिर, यदि जीव होते तो वहां संसार की इच्छा न आती ? मांगने वालों से तो भगवान भी डरता है। यह हम किसी द्वार पर जायें, डर जाता है। एक समाजी था, हम चले गये, वह थोड़ा सा डरा। हमने कहा - डरा क्यों ? कहता - जी ये आपके वस्त्र डराते हैं। तुम अपने भीतर देखो, तुम्हारा मन जीवपन में खड़ा है कि अविनाशी के साथ एक हो चुका है। निरूद्ध अवस्था हुई है कभी ? नहीं -

तो फिर तो 'मंगता' कोटि में ही आये सब। इसलिये नाम -

गुण निधान भगतन कउ बरतनि

कहते गुणों का आगार क्या है ? भक्तों का व्यवहार कौन सा है ?

सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई। (प ष्ठ ८२२)

संतों, भक्तों का तो व्यवहार ही है सत्य। लोग बड़े बुद्धिमान हैं -

भगता की चाल निराली।।
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा।। (प ष्ठ ६१८)

फिर आपके अन्दर आ गया, भक्तों वाला व्यवहार। फिर तुम भक्त कैसे बन गये ? भक्तों का तो व्यवहार ही और है। आप संसारी लोगों का व्यवहार और है।

भगता तै सैसारीआ जोडु कदे न आइआ।। (प ष्ठ १८४)

गुरू साहिब लिख नहीं गये ? वे तो अतुलनीय हैं। जब वह भक्त कोटि से

कबीर आदि चले गये फिर वे संसारी नहीं रहे। जब संसारी जीव ने तो भक्ति नहीं तो भक्तों की गुरू साहिब कहते - यह व्यवहार है भाई !

बिरला पावै कोई।।

यह बात तो किसी विरले को ही प्राप्त होगी। ***'सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि'*** यह बुद्धि लेकर फिर तुम परमेश्वर के साथ वृत्ति जोड़ने का अभ्यास करना। श्रवण, मनन करना और फिर अभ्यास करना और फिर समाधि। यह तो निरूद्ध अवस्था हो जायेगी यहां। ऐसे है भाई ! यहां जीवपना टूटना है निरूद्ध अवस्था में जाकर, पहले तो जीवपना। उस जीव ने, इस अविनाशी के साथ एक होना है। बात तो बीच में ऐसे है ना। चलिये -

मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई।।

देखो ! गुरू साहिब की कृपा, कितना श्रेष्ठ यह साधन बताया। फिर पढ़ अब भाई -

मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई।।

वह **'सो'** जो आपके परमेश्वर ने कृपा करके गुरूद्वारे नाम दिया है, जिसका नाम दिया, वह तुम्हारे अन्दर नहीं है ? वह व्यापक नहीं है ? उसका जप करके तुमने यह करना है। यह है तेरा उस स्थान पर अविनाशी में पहुंचने का मार्ग। यह वाणी है, यह वाणी आश्चर्य रूप है, असचर्ज है। कभी-कभी हमें कोई पंक्ति याद नहीं आती, फिर जब हम वहां जाकर एकेले बैठकर याद करते हैं तो आती है। मैं कहता ओहो - वहां तो ऐसे चलना था, तब फिर हमें पता लगता है ऐसे चलना था, थोड़ा सा ऐसा कर गये। जब मन में कोई संकल्प आ जायेगा संसारी, तब फिर भूलकर उक्क जायेगा। वहां जाकर याद आयेगा, ऐसे चलना था लेकिन ऐसे चले गये, अब क्या करें ? इसलिये भाई ! यह आपका मार्ग अविनाशी पद में पहुंचने का है, और यह मार्ग जब तुम चलोगे तो **'सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि'** गुरू साहिब आपको आप बतायेंगे।

संतन ते इहु मंतु लई।। (प ष्ठ ८२२)

यह वस्तु तो संतों से प्राप्त होनी हैं, यह बड़ी उच्च वस्तु है। चलें -

जा की सरणि पइआं सुखु पाइअै

कहते - फिर क्या होगा ? कहते - नाम, जब जीव को प्राप्त हो जाये, यह तो कृपा है। आप पढ़ते नहीं हो सुखमनी ? सुखमनी की जब तेरहवीं अष्टपदी पढ़ोगे, उसमें आयेगा भई नाम तो कृपा से मिलना है। जब तुम्हें नाम कृपा से मिल गया, आपका मन, नाम के साथ जुड़ गया तो फिर तुम शरण में होकर अविनाशी में चले जाओगे। नाम मिला तो शरण गये। वे कहते - यह वस्तु है। फिर पढ़ मई सारा -

जा की सरणि पइआं सुखु पाइअै बाहुडि दुखु न होई।। रहाउ।।

जिस परमेश्वर की शरण में जाने से आत्म सुख प्राप्त होगा, वह सुख प्राप्त होगा, अविनाशी। अविनाशी सुख यहां प्राप्त होगा। किन को ? जीवों को। जीवों का यहां वस्तु प्राप्त होगी। अब यहां यह तो नहीं भई फलां को प्राप्त होगी। यह कबीर को हो जाये, नामदेव को हो जाये, रविदास को हो जाये, भीलनी को हो जाये, कोई यहां ठेका है किसी का। न कोई भी जीव हो।

जो जो जपै तिस की गति होइ।। (प ष्ठ २७४)

यह गुरू साहिब ने तो निर्णय कर दिया।

उपदेसु चहु वरना कउ साझा।। (प ष्ठ ७४८)

मैंने आप को कई बार बताया है, मैं निहंगों के पास चला गया, वहां भी तो यह बात हुई।

मैं शरण पड़ा १ ओंकार ( ) की। परमेश्वर तो एक है, दो तो नहीं किसी ने लिखे। दो तो गौतम ने लिखे हैं, न्याय वाले ग्रन्थ में कि एक जीव और एक ईश्वर, नित्य हैं। व्यास आते ही खंडन कर दिया। उसने कहा सत्य एक है कि दो ? उसने कहा - एक। फिर आपने दो क्यों कहे ? नित्य वस्तु एक है। सत्य वस्तु एक है। खंडन कर दिया। परमेश्वर एक है। इसलिये गुरू साहिब १ ओंकार ( ) लिख गये। यह सांझा, सब का एक ही है और हम सब का अधिकार भी एक जैसा है। उसने लिखा कुरान शरीफ में बड़ी अच्छी बात। वह कहता - **'आतमा'** इसका जन्म सिद्ध अधिकार है। यह जब पैदा हुआ तब आत्मा नहीं

थी इसमें ? जब यह गर्भ में था उस समय आत्मा नहीं थी इसमें ? आत्मा तो वही अब भी है तो फिर कैसे कह सकता है ? भई शूद्रों का अधिकार नहीं और स्त्रियों का अधिकार नहीं, इसने खंडन किया, या तो इनमें आत्मा न हो, न तो स्त्रियों में आत्मा हो चेतन और न शूद्रों में हो, फिर तुम कह सकते हो, भई आपका कोई अधिकार नहीं। यह तो जन्म सिद्ध अधिकार है सबका। इसीलिये गुरू साहिब ने लिखा है-

उपदेसु चहु वरना कउ साझा।। (प ष्ठ ७४८)

अब आप स्वयं न खरीदें तो न खरीदें, है तो सांझी वस्तु, समझ गये ? यदि कोई कहे यह मेरा, उसको कहे तुम अपना बना लो, गुरू ग्रन्थ साहिब, स्वंय ही पढ़ लिया करना, स्वयं ही अरदास बना ले। वह तो भई आपका अपना आप है -

कबीर जा कउ खोजते पाइओ सोई ठउरू।।
सोई फिरि कै तू भइआ जा कउ कहता अउरू।। (प ष्ठ १३६६)

यह तो कबीर साहिब की मुहर लगाई हुई है। इसलिये भाई ! शरणागति से वह वस्तु प्राप्त होगी।

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै
इहु बिरदु सुआमी संदा।। (प ष्ठ ५४४)

दुःख तो है नहीं, दुःख तो कल्पित था। संसारिक दुःख सुख हमारे कल्पित हैं। बुद्धि ने कल्पना किये हुई है। ये कभी चेतन में गये हैं ? वह तो गुरू साहिब ने लिखा है -

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई।।
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई।। (प ष्ठ ६३२)

गुरू साहिब कहते, वह तो दुःख सुख रहित निर्लिप्त है। आपका आत्मा निर्लिप्त है। मेरा आत्मा निर्लिप्त है, लेकिन हमें निर्लिप्त का ज्ञान नहीं हुआ। हम लिप्त वाला समझ बैठे हैं, लिप्त तो मन है, मादा। कभी चेतन भी आज तक लिप्त हुआ है ? वह हमें मादे का भ्रम, अध्यात्म में पड़ गया जाकर। हमें समझते हैं, सम्यवतः हम मन ही हैं, इसलिये, वह तो निर्लिप्त है। 'निरलेपता' एक ऐसी मूल्यवान वस्तु है। यह गुरू और परमेश्वर की कृपा से प्राप्त होती है। सीधी बात है -

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

१४

सोरठि महला ५ घरू २ असटपदीआ १ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।
पाठु पड़िओ अरू बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे।।
पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे।।१।।
पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका।।
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका।। रहाउ।।
मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही।।
तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही।।२।।
मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए।।
मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए।।३।।
कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा।।
अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा।।४।।
पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता।।
हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीए इह जुगता।।५।।
जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ।।
वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ।।६।।
राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा।।
सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा।।७।।
हरि कीरति साध संगति है सिरि करमन कै करमा।।
कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना।।८।।
तेरो सेवकु इह रंगि माता।। भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु हरि
हरि कीरतनि इहु मनु राता।।रहाउ दूजा।। १।। ३।। (प ष्ठ ६४१)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु ! सतिनाम श्री वाहिगुरु !! चलो जी -

तुम भी सोच कर यह कर लो, सच्चा और शुद्ध साधन बताया है हरि का कीर्तन, हरि का सुमिरन और हरि का नाम की याद में कीर्तन।

सिमरी सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (प ष्ठ २६५)

जीव के आधार के लिए एक ही बात है, परमेश्वर का सुमिरन। लेकिन तुम्हारा मन, सुमिरन के साथ एक हो जाये। इतनी सी बात है, यह आपके लिए बहुत है।

खोजत खोजत ततु बीचारिओ, दास गोविंद पराइण।
अविनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।। (प ष्ठ ७१४)

यदि तुम मोक्ष की इच्छा करते हो, अविनाशी पद की प्राप्ति की इच्छा रखते हो, जन्म-मरण से विलग होना चाहते हो तो एक **'नाराइण'** का सुमिरन किया कर।

नाम संगि जिसका भनु मानिआ।।
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।। (प ष्ठ २८१)

यह तो सिद्धांत गुरू घर ने बताया बाद में जाकर, पहले इसके भ्रमों और अभिज्ञता दूर की। हमारे एक वृद्ध संत होते थे। वे कथा करने वाले को कहते होते थे, कुछ पल्लू में भी डाल दिया कर अथवा आप ही लगे रहते हो, तुम इनके दिल में कुछ बैठा भी दिया कर, थोड़ा बहुत, धीरे चला कर। कथा वाले को, अरदास वाले को, ऐसे ढंग से पढ़ना चाहिये कि इनको पता लग जाये भई सिद्धान्त तो यह है। चल भाई पढ़ -

सोरठि महला - ५

सोरठ राग में पंचम पातशाह, पंचम नानक गुरू जी कथन करते हैं।

धरू २ असटपदी आ

यह द्वितीय स्वर में गाना है और 'असटपदीआं' आठों पदों की यह अष्टपदी है।

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

एक जो परमेश्वर है, वह गुरू की कृपा से प्राप्त होता है।

पाठु पड़िओ अरू वेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे।।

तीन कार्य हमने किये, गुरू साहिब कहते। वे कहते हैं यह हमने तीन कार्य ठीक प्रकार से देख लिये हैं, पाठ बहुत पढ़ा और वेदों पर भी विचार किया। वह सर्वज्ञ था, सर्वज्ञ तो समस्त ग्रन्थों का विचार कर लेते हैं, और हठ योग भी किया। हठ योग के चक्रों को सिद्ध किया, और हठ योग द्वारा दशम् द्वार को भी गये। लेकिन कोई भी कार्य रास न आया। यह जो वस्तु थी, उस नाम के साथ मन नहीं जुड़ा और नामी प्राप्त नहीं हुआ।

पंच जना सिउ संगु न धुटकिओ

पांच जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध आदि ने भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। इन्होंने मेरी बुद्धि को मलिन कर दिया। विषयों के साथ बुद्धि मलिन हो जाती है, गंदी हो जाती है। इन विकारों ने मेरा पीछा नही छोड़ा। इतने कार्य किये लेकिन मेरा पीछा न छोड़ा।

अधिक अहंबुधि बाधे।।

एक अन्य बीमारी मन में आ गई, अहंकार आ गया कि मैं योगी हूँ, मैंने समस्त वेद-विचार किया है, मेरा जैसा पाठी कोई नहीं, यह एक अहंकार मुझे प्राप्त हो गया। अहंकार के ऐसे पिशाच ने जकड़ा है कि उसने मेरा पीछा ही नहीं छोड़ा।

पिआरे इन विधि मिलनु न जाई।।

हे प्यारे भाई। इन विधियों में तुम प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकोगे। इन विधियों में यदि तुम फँस गये तो परमेश्वर को प्राप्त नही कर सकेगा।

मै कीए करम अनेका

मैंने कर्म काण्ड के अनेकों कर्म किये। यह भी मैं कर्म करके रहा, ये भी मैंने बड़े किये।

हारि पटिओ सुआमी कै दुआरै

जब मेरा कोई प्रयत्न काम न आया, तब मैं अपने गुरू स्वामी गुरू रामदास के द्वार पर जा गिरा। मैं गुरू रामदास की शरण पड़ गया। महाराज ! मेरा मन वश में नहीं आता, मुझे नहीं पता, इतना काम मैं कर चुका लेकिन मेरा मन नहीं स्थिर हुआ। अहंकार न मेरी बुद्धि बिल्कुल गंदी, अधिक मलिन कर दी है और मुझे इस वस्तु की प्राप्ति नहीं हुई।

दीजै बुधि विवेका।। रहाउ।।

मुझे वह बुद्धि प्रदान करो जिसमें विवेक हो, दो से एक करने वाली, बिल्कुल एक करने वाली।

हरि हरिजन दुइ एक है बिव विचार कछु नाहीं।।

जलते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि।। (बचित्तर नाटक)

इसलिये जल जो होता है।

जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा।। (पृष्ठ १२५२)

लेकिन जल एवं तरंग को दो कहते हैं। वायु जब चलती है उस जल के तरंग बन जाते हैं। जब वायु बंद हो जाती है वही जल स्थिर होकर खड़ा हो जाता है। लेकिन दो नाम इसके वायु के कारण पड़े हैं। वायु न आती तो तरंग न बनते तो जल का जल ही था। इसलिये, माया में मेरा मन फँस गया। इसलिये मुझे वह बुद्धि दो जो दो से एक कर दें और समस्त अध्यस्त झूठे समझे।

द्रिसटीमान है सगल मिथेना।। (पृष्ठ १०८३)

इसमें मुझे निश्चय हो जाये और सत्य स्वरूप की मुझे प्राप्ति हो जाये। मेरा सत्य स्वरूप में मन, मान जाये, एक हो जाए।

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ।।

करन करावन तिनि मूलु पछानिआ।। (पृष्ठ २८५)

रहाउ।।

'रहाउ' रागियों के लिए होता है। चलें -

मोनि भइओ करपाती रहिओ

कहते - मैंने मौन भी धारण किया और हाथ में पत्ते भी भोज पत्र के लिए और आस-पास भी बांधे वन में जाकर कि मैं यह तप करूँ सम्भवतः तक मुझे ईश्वर की प्राप्ति हो जायेगी।

नगन फिरिओ बन माही।।

और फिर मैंने सब कुछ छोड़कर नग्न होकर वनों में भ्रमण किया, कि किसी व्यक्ति को दर्शन नहीं देना। यहां एक था 'राधा राम' खोख गांव के समीप में (लवाणे) नितांत नग्न जंगल में रहता था। अठारह वर्ष वहा एक छत पर एक फट्टे पर बैठा रहा। वर्षा, फुहार आदि जो कुछ आये वह नहीं उठा इसलिये, मौनी प्रीतम सिंह जो संत था वह भी पांच वर्ष जंगल में घूमता रहा, नग्न होकर और अब तो वस्त्र डालकर आकर बैठ गया। कहता ये कार्य भी मैंने सब किये।

तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ

कहते - सब तीर्थों के किनारों पर गया, स्नान किया, सारी पृथ्वी की परिक्रमा की।

दुबिधा छुटकै नाही।।

द्विधा में दोनों गये, माया मिली ना राम।

इसलिये जब तक इसके भीतर द्विधा है, न इसको परमेश्वर मिले न माया मिली और यह द्विधा मेरे भीतर से नहीं छूटी, भई क्या हुआ है ? और क्या होगा?

मन कामना तीरथ जाइ बसिओ

मन में भी इच्छा और तीर्थों पर जाकर भी निवास किया।

सिरि करवत धराए।।

फिर मैंने अपने सिर ऊपर **'करवत'** (आरा) रखने को कहा। भारत का पहला रिवाज था, अंग्रेजों ने बंद किया था, हमने यह देखा है। एक करवत काशी

है और एक प्रयागराज है। वह जो भी मुक्ति मांगता था, पंडितों का तब राज था, वे कहते थे, करवत ले ले। उस पर मंत्र पढ़ते थे, वे स्त्री के गहने ले लेते थे, उसको कहते थे, अब तुम मुक्त हो जाओगे। वहां भी मैं होकर आया, गुरू साहिब कहते जो यहां भी होकर आये हैं, उनको भी परमेश्वर नहीं मिला है।

मन की मलै न उतरै इह बिधि

ये सब तरीके किये, लेकिन मन की मैल न उतर सकी। विक्षेप न नष्ट हुई, एकाग्र चित्त होकर परमेश्वर की प्राप्ति न हुई। कल्पना बनी रही, मैंने यह किया, मैंने ऐसा ज्ञान प्राप्त किया, मैंने करवत ली, वे समस्त विधियां का वर्णन किया गुरू साहिब ने। यह बात या तो कबीर साहिब बताते होते हैं अथवा गुरू साहिब भी बता देते हैं विस्तार से। ये सब तरीके गलत है भाई। गुरू साहिब कहते - इन सब विधियों को त्याग दे। इस तरफ बिल्कुल न कभी जाना।

जे लख जनत कराए।।

यदि कोई लाख भी यत्न इन कर्मों के कर ले तब भी मोक्ष नहीं होगी, इसका आधार नहीं होगा। आधार तो सुमिरन और लिव में जाकर जब मन ने जुड़ना है तब इसको स्वरूप की, अविनाशी पद की प्राप्ति होनी है। मार्ग तो यह था, लेकिन इन लोगों ने ग्रन्थ लिख दिये बाद वालो ने। यह काम भी किये। लेकिन मैं तुम्हें आज एक बात बताता हूँ, जाकर विचार लो। इलहामी वाणी में यह कोई बात नहीं है। जो ऊपर से वाणी आई है (ईश्वरीय) वह चाहे गुरूनानक को आई है, चाले कबीर को आई है, चाहे रविदास को आई है, चाहे धन्ना को आई है। इन इलहामी वाणियों में ऐसी कोई विधि नहीं आयेगी। ये बुद्धिमान व्यक्तियों की लिखी हुई विधियां हैं। अपनी अपनी दुकानें उन्होंने खड़ी करनी थी। जिस पार्टी के हाथ में कलम आ जाती है वह जैसे खुशी है करती है। वे परमेश्वर के साथ मिले हुये तो होते नहीं और न उनको परमेश्वर का भय होता है। उन्होंने तो पैसे अर्जित करने हैं, किसी प्रकार कमा लो। चाहे कोई अपनी पुस्तक बेचकर कमा लो, चाहे जनता के द्वारा कमा लो, उन्होंने तो कमाई करनी है।

कनिक कामिनी हैवर गैवर

कहते - यह भी सब भोगे **'कनिका'** नाम है सोना। सोना भी बड़ा देखा। **'कामिनी'** स्त्री **'हैवर'** बड़े सुन्दर घोड़े, **'गैवर'** बड़े बड़े सुन्दर हाथी, उन पर भी चढ़कर चले।

बहु विधि दानु दातारा।।

और बड़े दान भी किये, दाता बनकर, अहंकार में भी बैठा। यदि मैं न होता, उनका पता नहीं क्या हाल होता, रोटी मिलती कि न मिलती। एक संत समर्थ गुरू रामदास दक्षिण में हुये हैं। नदी में उन्होंने बारह वर्ष खड़े होकर तप किया। बारह वर्ष पश्चात् उनमें ईश्वरीय शक्ति का आगमन हुआ और उन्होंने शिवाजी को जो उनका शिष्य था, कई शिष्य थे उनके। उनमें से शिवाजी को कहा- जा ओये, किला बना। ये अत्याचार बहुत करते हैं मुसलमान। अब ये हमारी इज्जत को भी हाथ डालने लग गये हैं। इनका बड़ा जोर हो गया, किला बना जाकर। वह कहता - जी मेरे में तो शक्ति ही कोई नहीं। वे कहते - मैं तुझे कहता हूँ किला बना। वह कहता - जी सत्वचन। वह किला बनाने लग गया, पैसा बहुत आ गया। लोगों ने बड़े बड़े व्यक्तियों ने उसकी बड़ी सहायता की। यदि यह भी इज्जत बचा ले अब हमारी तो भी ठीक है और एक दिन उसमें अहंकार आ गया। वहां बड़ा अकाल पड़ गया। उसने कहा यदि मैं यह किला न बनाता तो ये सब भूखे मर जाते। मैं किला बनाने लगा तब ये रोटी खाते हैं। समथ गुरू रामदास जंगल में पड़े थे वहां से उठकर चल पड़े दोपहर का समय था, आये। शिवाजी ने आ रहे गुरू को देख लिया, आकर उनके चरणों में पड़ा मत्था टेका। महाराज ! क्या बात है ? कहते एक बात बता ? कहते - मिस्त्री अपने अच्छ अच्छे बुला। उसने बुलाये। इस पत्थर को चीरों लेकिन संभलकर। इसमें एक जीव बैठा है, उसको निकालना है। जब उसको चीरा उसमें जल था। पत्थर में एक मेंढक बैठा था जिसको ड्डडू कहते हैं। समर्थ महाराज कहते - शिवाजी को बुलाकर कि इसको भी आजीविका देते हो ? उसने कहा - ओ हो। मेरे दिल में संकल्प आया था, यदि मैं न तो देने वालातो ये सब मर जाते। समर्थ जी कहते - यह तेरे आसरे ही जीता है मेंढक? वह चरणों पर गिर पड़ा। कहता जी मैं भूल गया, मेरे हृदय में अहंकार आ गया

दातापन का। वे गुरू साहिब कहते - दाता बनकर बड़े यज्ञ भी किये लेकिन अहंकार न टूटा। अपितु अहंकार बढ़ता ही चला गया।

अंत बसत्र भमि बहु अरपे

कहता - अन्न, वस्त्र और भूमि बड़ी दान की, भूमि भी बड़ी दान की, अन्न दान किया, वस्त्र भी बड़े दान किये।

नह मिलीऐ हरि दुआरा।।

और यह जो हरि है परमेश्वर, इसके द्वार पर खड़े होने के लिए स्थान न मिला। परमेश्वर के द्वार पर खड़े होने के लिए स्थान न मिला। वह अहंकार ने ऐसा मुझे पकड़ा, अहंकार तो पिशाच है ससुरा। भूत - तो मंत्र से निकल जाता है पिशाच नही निकलता। यह जो पिशाच है, इसको तो कोई बड़ा भारी शक्तिमान गुरू हो तो निकाल दे अथवा परमेश्वर निकाल दे यह व्यक्ति के निकालने का नहीं है। इसकी तो औषधि ही एक है।

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इखु माहि।।
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।। (प ष्ठ ४६६)

परमेश्वर की कृपा इस पर हो, यह गुरू-शब्द की कमाई करे तब इसका अहंकार टूटे तो यह **'भीत'** अर्थात् दीवार अलग हो तब इसको परमेश्वर का द्वार दिखाई दे।

पूजा अरचा बंदन डंडउत

कहता - कर्म काण्ड भी बहुत किया जिसको लोग बहुत अच्छा समझते हैं। बड़ी पूजा की, बड़े दण्डवत प्रणाम किये, बड़े अर्पण किये। किसी ने शीश अर्पण किया, किसी ने कुछ अर्पण किया। वे कहते - यह भी मैंने सारा किया।

खटु करमा रतु रहता।।

छः प्रकार के कर्मों के साथ 'रतु अर्थात् हर समय लगा रहा लेकिन साथ में यह भी आ गया कि मेरे जैसा कर्म काण्ड करने वाला अन्य कोई नहीं है। ये छः कर्म सब के अलग अलग हैं। ब्राह्मण के छः कर्म हैं - पहले विद्या का पठन, फिर अध्यापन, दान लेना, आगे देना, यज्ञ करना और करवाना भी। जो पैसा अग्नि से आये उसका भी यज्ञ करना, ये ब्राह्मण के पहले कर्म हैं। खत्री आदि सब के कर्म हैं। मैं उनमें लगा रहा, मैंने हर समय यह छः कर्म **'खट करम'** किये।

हउ हउ करत बंधन महि परिआ

कहते - बीमारी एक ऐसी चिपकी **'हउ हउ कटत'** कि मेरे जैसा कर्म काण्ड करने वाला कोई नहीं। मेरे समक्ष दानी कोई नहीं, मेरे जैसा चालीहा करने वाला भी कोई नहीं। इन बंधनों में फॅसकर क्या बना ? फिर पढ़ पंक्ति -

हउ हउ करत बंधन महि परिआ

'हउ हउ' अहंकार वश जन्म जन्म के बंधनों में पड़ा। अहंकार न टूटा अपितु अहंकार बहुत बढ़ गया।

नह मिलीऐ इह जुगता।।

गुरू साहिब कहते - भाई ! यह युक्ति से प्रभु नहीं मिलेगा, सीधी बात है। जो आपको बताया है, इन युक्तियों से प्रभु नहीं मिलेगा। ये आपके विचार श्रेष्ठ हैं लेकिन परमेश्वर को मिलने का यह तरीका नहीं।

जोग सिध आसण चउरासीह

कहते - फिर हठ योग किया, सिद्ध किया हठ योग को। चक्र भी सारे खोले और दशम् द्वार को भी गया और चौरासी आसन भी किये।

ए भी करि करि रहिआ।।

यह भी गुरू साहिब कहते - कर कर के हम थक चुके। इनके साथ भी परमेश्वर नहीं मिला। हठ योगी में अहंकार आ जाता है। गुरू अमर दास जी ने अब गद्दी दी, सब को बुलाया और मोहन बड़ा पुत्र था, वह हठ योगी था, उसको बुलाया। वह कहता - मैं नहीं जाऊंगा, उन्हें तो पता नहीं किसको गद्दी देनी है, यह तो अधिकार ही हमारा था। ये तो जेठे को ही दिये जा रहे हैं, गुरू रामदास को और मोहन न आया, बुलाया बिल्कुल न आया।

मोहरी पुतु सनमुख होइआ

रामदासै पैरी पाइ जीउ।। (प ष्ठ ३५०)

हम यह बात निर्णय करके देखते हैं अब भल्ला परिवार में। मैंने कहा तुम किसी वंश में से हो। हम जी - मोहरी की कुल में से हैं और गुरू साहिब ने कहा भाई ! सब कुछ करो, उसे ईर्ष्या की पीड़ा होती है और ईर्ष्या की पीड़ा हुई। दो दिन के पश्चात् गुरू साहिब के पास पहुंचा मुझे भई आप जाते हुए क्षमा कर दो। वे कहते - अब तुम्हें इस सिक्ख के पैरों में पड़ना पड़ेगा। जब तुम चरणों में पड़ोगे तब तेरी पीड़ा दूर होगी। ये पोथियां किसी को न देना, संभाल कर रखना। भाई गुरदास गये, उसने कहा पोथियां आपकी नहीं अब मामा जी। ये तो पोथियां गुरू-घर की हैं। बाबा बुड्ढ़ा जी गये, उनको भी नहीं दी। फिर गुरू साहिब गये, उन्होंने यह शब्द पढ़ा -

मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा।। (प ष्ठ २४८)

वह पढ़कर जब गुरू-साहिब हट गये। उसने पोथियां लाकर, रखकर, अपना मस्तक गुरू अर्जुन देव के चरणों में रख दिया। उसने कहा हम बहुत बड़ी भूल कर चुके हैं, आप गुरू हो, हम आपके शिष्य हैं। उसी समय पीड़ा बंद हो गई, यह हाल हुआ। यह अहंकार जो जकड़ लेता है, मैं बड़ा योगी हूँ, मैं बड़ा ज्ञानी हूँ मैं पंडित हूँ, मैं भक्त हूँ, ये सब बीमारियां अहंकार की है। जब इस को ज्ञान हो जायेगा तो ये बीमारियां स्वयं ही छूट जायेगी बिना पूछे ही।

वडी आरजा फिरि फिरि जनमै

कहते - आयु लम्बी कर लेता है और बार-बार जन्मों के चक्र में पड़ा रहता है।

कई जनम भए कीट पतंगा।।
कई जनम गज मीन कुरंगा।। (प ष्ठ १७६)

लेकिन जन्म-मरण से मुक्त नहीं हुआ।

हरि सिउ संग न गहिआ।।

लेकिन मन, हरि के नाम के साथ नहीं जुड़ा। मन नाम के साथ एकम नहीं हुआ। हरि परमेश्वर के साथ सम्बन्ध न हुआ मोक्ष न हुई, कृपा न हुई।

राज लीला राजन की रचना

कहते - **'राज लीला'** यह राजाओं की एक रचना होती है। राजाओं का एक स्वभाव ही है। यह 'राज लीला' एक स्वभाव है। एक पंडित निश्चल दास जी हुये हैं, उन्होंने **'विचार सागर' 'बिरती प्रभाकर'** ग्रन्थ लिखे हैं, बड़े बुद्धिमान उनको कहते हैं। जीविकानंद जी कहते हम गये, जिनसे हमने वृत्ति प्रभाकर पढ़ा। वे घोड़ी पर बैठे जाते हैं, घोड़ी को दौड़ाते जाते हैं। जब इन्होंने बुलाये संत कहते साधु न कहना, मैं पंडित हूँ, पंडित की लीला करता हूँ, साधु न कहो, मैं साधु तो नहीं हूँ। कहते मैं पंडित हूँ, पंड़ितो वाली कोई शंका पूछो मेरे से। यह पंडित की लीला होती है और राजाओं की लीला भी होती है।

करिआ हुकमु अफारा।।

हुकम भी बहुत बड़ा किया, जो हुकम किया उसका उचित अनुचित न देखा, हुकम भी बड़ा किया है।

सेज सोहनी चंदनु चोआ।।

बड़ी बड़ी सेज संवारी, उन्होंने चंदन का छिड़काव किया और बहुत सुंदर पुष्प बिछाये। उन पर सोकर देखा।

नरक घोर का दुआरा।।

वे कहते - यह सब कुछ तो भयानक नरक की ओर ले जाने वाला है, विषय, विकार, विषयी व्यक्ति तो नरक को जाता होता है, उसमें तो कोई सत्य ही नहीं रह गया। उसकी बुद्धि तो अत्यंत मैली हो जाती है, उसको तो सूझता ही नहीं है। वे कहते - भयानक नरक का सामान ही बनाया।

हरि कीरति साध संगति है

कहते - एक आत है, बता भी दूँ।

है कोऊ ऐसा भीतु जि तोरै बिखय सांठि।
नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटू लेइ सांठि।। (प ष्ठ १३६३)

कहता कोई ऐसा भी है जो जड़ चेतन की ग्रन्थि को तोड़ दे और परमेश्वर के साथ जोड़ दे।।

करि किरपा सतसंगि मिलाए।।
नानक ता कै निकटि ना भाइि।। (पृष्ठ २५१)

यह इस माया कोपार करने वाला 'साधु संगति' है। उसमें मिलकर हरि का कीर्तन करना, सुमिरन करना। सुमिरन और अनाहत, अनाहत और धुनि, धुनि द्वारा लिव (लौ) लग जायेगी। अविनाशी पद की प्राप्ति हो जायेगी, मोक्ष हो जायेगी। यह एक उपाय है। फिर पढ़ दो भाई।

हरि कीरति साध संगति है।

कहते - यह है हरि की कीर्ति, साधु संगति से मिलती है। यह उपाय है। **'है'** पहले लगान है। 'है' अर्थात् उसका उपाय, पहले हरिकीर्तन, साधु संगति से सीखना है। हरि का कीर्तन, गायन उसमें संसार की बातें नहीं करनी हैं। उसमें भटके हुये लोगों को दृष्टांत नहीं देने हैं फँसाने के लिए। एक कीर्तन करना, हरि सुमिरन करना।

सिरि करमन कै करमा।

समस्त कर्मों का सवोत्कृष्ट एक कर्म है भाई ! गुरू साहिब कहते - हम आपको बताते हैं। सभी कर्मों का सर्वोत्कृष्ट कर्म यह कर्म है, जो इस नाम का सुमिरन करना है।

सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।
नानक जीअ का इहै अधार।। (पृष्ठ २६५)

यह समस्त कार्यों का सर्वोत्कृष्ठ कर्म है।

कहु नानक तिसु भइओ परापति

श्री गुरू अर्जुन देव जी कहते - उनको यह प्राप्त होना है।

जिस पुरब लिखे का लहना।।

जिसका पूर्वकृत 'लहना' अर्थात् कर्म होगा। पूर्व कर्म भी सहायता करता है। ध्रुव को पूर्व कृत कर्म ने सहायता की, पांच वर्ष में ही ज्ञान हो गया। प्रहलाद को, पूर्वकृत कर्मों ने ऐसी सहायता की, वह पहले ही जन्म लेते ही **'राम-राम'** कहने

लग गया। तुम्हे पता है इस कहानी का ? यह एक कहानी है। जब देवताओं ने उन दैत्यों को आकर मारा और जीत लिया। वह स्त्री के पेट में गर्भ था। वे कहते - यदि इस ससुरे ने जन्म ले लिया तो यह भी उपद्रव करेगा। चलों - इसका भी करो कुछ। आगे नारद मिल गया। नारद कहता - क्या किया ? कहते - जी हम जीत गये, हमने राक्षसों ने जीत लिया। कहते - यह कौन ? कहते इस लड़की के पेट में गर्भ है, इसको हम तो ले चले हैं, भई एक राक्षस और न पैदा हो जाये कहते - क्या करें ? नारद कहता कुल नाश हो जाएगा आपका सारा। कहते क्यों? कहते भक्त है, तुम्हे क्या पता है ? यह तो भीतर भक्त बैठा है। वे वहीं छोड़कर चले गये। नारद ने कहा हे माँ उस झोपड़ी में जाकर बैठ जाओ, तुम्हारा पालन होगा लेकिन **'राम राम'** कहती रहना। **'राम'** मंत्र उसको दे दिया, वह जपने लग गई। उससे प्रहलाद का जन्म हुआ। वह गर्भ में ही कथा नारद की सुनता रहा। वह गर्भ में ही नाम जपने लगा। यह देखो पूर्वकृत कर्म ने किया। राक्षसों के वह **'कलर कमल'** यह कीच से चली थी कुल लेकिन वहां कमल उत्पन्न हुआ - भक्त प्रहलाद। इसलिये उसको (नारद को) सर्वज्ञता थी, इसने उसका बड़ा पालन किया, बड़ा उपदेश किया। जन्म लेते ही **'राम राम'** जपने लगा। उसने बड़ी तपस्या की और ब्रह्मज्ञानी एक महापुरूष हुआ।

तेरो सेवकु इह रंगि भाता।

तुम्हारे सेवक जो इस रंग में मस्त रहते हैं, वे दूसरी बातें नहीं सुनते होते, व्यर्थ जो होती हैं।

भइओ क्रिपालु दीन दुःख भंजन

वह कृपालु हुआ, समस्त दीनों के दुख को दूर करने वाला प्रभु मेरे पर बड़ा दयालु हुआ - गुरू अर्जुन देव जी कहते।

हरि हरि कीरतनि इहो मन राता।। रहाउ।। दूजा।।

मेरा भी उस हरि के कीर्तन में मन रम गया। गुरू साहिब कहते - मैं भी परमेश्वर का कीर्तन, नाम जपने लग गया।

बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू। ❑